वैश्विक संवाद

10.1

17 भाषाओं में एक वर्ष में 3 अंक

रेक्वल वरेला के साथ समाजशास्त्र पर बातचीत
क्रिस्टिन शिकर्ट

पोर्टो एलेग्रे में चतुर्थ आई.एस.ए. फोरम
ज्योफ्री प्लेयर्स, जेकब कार्लोस लीमा, हर्मिलियो सान्तोस, आंद्रे सलाटा, एमिल सोबेटका, वेरिडियाना डोमिंगोस कोर्डेरो, गुस्तावो कांडे मार्गरिट्स, प्रिस्किला सुसिन, रिकार्डो कल्डास कवालकांती, लुकास परेरा वन देर मास, इजाबेला वियेरा

यूरोपीय देशों में सामाजिक नीति
मारिया पेतमेसिदाउ, एना ग्यूलेन, इमानुअल पवोलिनि, डेनियल क्लेग, रोलाण्ड एत्जुमुलर, सिजिता डोबलाइट, अरोआ तेजेरो, सिल्के वेन डाइक, तिने हॉबनर, ब्रिट्रिस करेला

डिजिटलीकरण की चुनौतियां
पाउलो तुबारो, लेवियो स्कातोलिनी, फेलिक्स सुहलमान. फॉल, स्रुजाना कत्ता, केले हाउसन, मार्क ग्राहम

सैद्वान्तिक परिप्रेक्ष्य
डोनाटेला डेला पोर्टा

स्मृति में : समीर अमीन इमानुअल वालरस्टीन
विश्वास सतगर, साडी हनाफी, स्टेफने डुफोइक्स, फ्रंक वेल्ज,

खुला अनुभाग

> गतिशील रणनीति के रूप में प्रवासी कारवां
> बफेलो, न्यू योर्क : शरणार्थी पुर्नस्थापन में गुड प्रेक्टिस

पत्रिका

International Sociological Association

अंक 10 / क्रमांक 1 / अप्रैल 2020
http://globaldialogue.isa-sociology.org/

GD

> सम्पादकीय

इस अंक के साक्षात्कार में श्रम इतिहासकार रेक्वल वरेला पुर्तगाल के अप्रेल 1974 के कारनेशन रिवोल्यूशन पर एक पार्श्व दृष्टि डालती हैं। वे इस की चर्चा करती हैं कि दुनिया की घटनाओं को कामगार लोगों के दृष्टिकोण और योगदानों को दृष्टिगत रखते हुए ''नीचे से'' बताना क्यों आवश्यक है। वे पुर्तगाल के सामाजिक और आर्थिक ताने बाने पर रिवोल्यूशन के पड़ने वाले स्थाई प्रभावों को सम्बोधित करती हैं।

जुलाई 2020 में, दुनिया भर के समजाशास्त्री और समाज वैज्ञानिक पोर्टो एलेग्रे, ब्राजील में चतुर्थ आईएसए फोरम ऑफ सोशियोलोजी में भाग लेंगे। वे 21वीं सदी की हमारी मुख्य चार चुनौतियों : लोकतंत्र, पर्यावरण, असमानताएं और परस्परछेदन के आलोक में सामाजिक रूपांतरण पर अपने शोध और परिप्रेक्ष्यों की चर्चा करेंगे। अपने आलेख में ज्योफ्री प्लेयर्स, फोरम के अध्यक्ष इन सामाजिक घटनाक्रमों के अंर्तसम्बंधों के विश्लेषण के महत्व पर जोर देते हैं। ब्राजील समाजशास्त्र संघ (SBS) के अध्यक्ष जेकब कार्लोस लीमा हमें संघ के इतिहास में संक्षिप्त अंतदृष्टि प्रदान करते हैं और हालिया राजनैतिक घटनाक्रमों और संबंधित सामाजिक संघर्षों के आलोक में समाजशास्त्रीय समुदाय के सहयोग और समर्थन का आह्वान करते हैं। फोरम की स्थानीय आयोजन समिति से हर्मिलियो सान्तोस, आंद्रे सलाता एंव एमिल सोबोटका के साथ ब्राजील के छः युवा विद्वान हमें ब्राजील के इतिहास और समाजशास्त्र के बारे में अंतदृष्टि प्रदान करते हैं।

हाल के वर्षों में यूरोपीय कल्याण राज्यों के व्यवस्थित विघटन के कारण, सामाजिक नीतियों के नये रूपों को स्थान मिला है जो न केवल विशिष्ट क्षेत्रों में विभिन्न देशों को अपितु यूरोप एवं यूरोपीय संघ के सामाजिक स्तंभों को चुनौती देते हैं। इस अंक की प्रथम संगोष्ठी में विद्वान वर्तमान प्रक्षेपवक्रो पर और कुछ यूरोपीय देशों द्वारा सामना की गई चुनौतियों पर अपना शोध प्रस्तुत करते हैं।

दूसरी संगोष्ठी हमारे जीवन के बड़े मुद्दों में से एक : समाज का डिजिटलीकरण, श्रम, वित्तीय बाजारों के साथ संवहनीयता पर इसके प्रभाव को उठाती है। संगोष्ठी प्लेटफोर्म अर्थव्यवस्था में श्रमिक अधिकारों और उचित कार्य परिस्थितियों को बनाने या कायम रखने को भी सम्बोधित करती है।

अपने आलेख में डोनाटेला डेला पोर्टा सामाजिक आंदोलन अध्ययनों की वर्तमान चुनौतियों का वर्णन करती हैं। उनके विचार में, दुनिया भर में चल रहें विरोध प्रदर्शनों ने एजेंडे में नये मुद्दों को जोड़ा है। वे इनका विश्लेषण करने के लिए नये तरीको की मांग करते हैं। वे पूंजीवाद और वर्ग को सामाजिक आंदोलन अध्ययन में एक विश्लेषणात्मक श्रेणी के रूप में लाने के लिए तर्क देती हैं।

समीर अमीन (1931–2018) एवं इमानुअल वालरस्टीन (1930–2019) के साथ दो प्रमुख समाजवैज्ञानिक एवं राजनैतिक विचारकों का निधन हो गया। अमीन की यूराकेन्द्रीयतावाद की आलोचना और डिलिकिंग की सामरिक अवधारणा ने मार्क्सवादियों और दुनियाभर के समाज वैज्ञानिकों को प्रभावित किया। अपनी विश्व–प्रणाली की अवधारणा के साथ वालरस्टीन ने समाजशास्त्रीय सिद्धांतों को गहन/प्रभावी रूप से समृद्व किया। आईएसए के पूर्व अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने पुराने और नये सदस्यों के मध्य एक समृद्व आदान–प्रदान को स्थापित किया जो आज तक प्रतिध्वनि करता है। हमारे समुदाय के इन दो उत्कृष्ट सदस्यों के सहकर्मी और मित्र उनके कृत्यों और जीवन को याद करते हैं और सम्मान देते हैं।

खुले अनुभाग में शामिल दो आलेख अमरीका में उत्प्रवास से संबंधित हैं। वेरानिका मॉन्टेस लेटिन अमरीका से उत्तर की तरफ जाने में इच्छुक व्यक्तियों के लिए तथाकथित ''प्रवासी कारवां'' की एक रणनीतिक विकल्प के रूप में जांच करती हैं। आयसेगुल बाल्टा आक्सजेन हमें बफेलो, न्यूयोर्क जैसे एक मध्यम आकार के अमरीकी शहर के लिए चुनौतियों के साथ–साथ शरणार्थी पुनर्वास का क्या अर्थ है के बारे में बताते हैं। ■

ब्रिजिल ऑलनबैकर एवं **क्लॉस डोरे**
वैश्विक संवाद के संपादक

> **वैश्विक संवाद आई.एस.ए वेबसाइट पर 17 भाषाओं में देखा जा सकता है।**
> **प्रस्तुतियाँ <globaldialogue.isa@gmail.com> पर भेजी जा सकती हैं।**

International Sociological Association

GLOBAL DIALOGUE

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रिजिट ऑलनबॉकर, क्लॉस डोरे

सह–सम्पादक : जोहाना ग्रबनर, क्रिस्टीन शिकर्ट

सहयोगी सम्पादक : अर्पणा सुन्दर

प्रबंधन संपादक : लोला बुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे

मीडिया सलाहकार : जुआन लेजाररगा

परामर्श संपादक :
साडी हनाफी, ज्योफी प्लीयर्स, फिलोमिन गुतिरेज, एलोइजा मार्टिन, सावाको शिराहेस, इजाबेला बरलिंस्का, तोबा बेन्सकी, चिह–जुए जेचेन, जेन फ्रित्ज, कोइची हासेगावा, हिरोशी इशिदा, ग्रेस खुनो, एलिसन लोकोन्तो, सुसन मेकडेनियल, एलिना ओइनास, लोरा ओसो कैसास, बंडाना पुर्कायस्था,रोह्डा रेडॉक, मौनीर सैदानी, आयसे सकतांबर, सेली स्कालोन, नाजानीन शाहरोकनी।

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : *(ट्यूनिशिया)* मौनीर सैदानी, फातिमा रधौनी, हबीब हज सलेम; *(अलजीरिया)* सोराया मौलोदजी गराउदजी; *(मोरक्को)* अब्देलहादी एल हालहोली, सालिदा जाइन; *(लेबनान)* साड़ी हनाफी।

अर्जेन्टीना : एलेक्जेंड्रा ओतामेंडी, जुआन इग्नासिया पियोवानी, मार्टिन दी मार्को, पिलर पी पुइग, मार्टिन उर्दुसन।

बंग्लादेश : हबीबुल हक खोंडकर, हसन महमूद, यूएस रोकेय अख्तर, जुवेल राणा, तूफिका सुल्ताना, असिफ बिन अली, खैरून नाहर, काजी फदिया एशा, मुहिमिन चौधरी, हेलल उदीन, मोहम्मद यूनस अली, मुस्ताफीजुर रहमान, झिलिक साहा, मारिया सरदार, तहमीद उल इस्लाम।

ब्राजील : गुस्तावो तानिगुती, एंजेलो मार्टिन्स जूनियर, लुकास अमरल ओलिविरा, एंड्रेजा गली, दिमित्रि सर्बोन्सीनी फर्नाडीस, गुस्तावो डायस।

फ्रॉंस / स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, निधी बंसल, प्रज्ञा शर्मा, मनीष यादव, संदीप मील।

इंडोनेशिया : कमांतो सुनार्तो, हरि नुग्रोहो, लूसिया रतीह, कुसुमादेवी, फिना इट्रियती, इंदेरा रत्ना इरावती पट्टिनसारानी, बेनेडिक्टस हरि जूलियावान, मोहम्मद शोहीबुद्दीन, डोमिंगगस एलसीडली, एंटोनियस एरियो सेतो हार्डजाना, डायना तेरेसा पाकासी, नुरूल ऐनी, गेगेर रियांतो, आदित्य प्रदान सेतियादी।

ईरान : नियाश डॉलाती, अब्बास शाहरबी, सैयद मोहम्मद मुतालेबी, फाजेह खाजेहजदे।

जापान : सतोमी यामामोता।

कजाकस्तान : अइगुल जाबिरोवा, बायन स्मागमबेट, आदिल रोदियोनोव, अल्माश त्लेसपयेवा, कुआनिश टेल, अलमागुल मुस्सीना, अकनूर ईमानकुल।

पौलैंड : एडम मुलर, जोनाथन स्कोविल, एलेक्सांड्रा बियरनाका, जेकब बारस्जेवस्की, एलेक्सांड्रा वेगनर, सारा हरस्जींस्का, मोनिका हेलक, एलेक्सांड्रा सेन्न, वेरोनिका पीक, एना वेन्दजल, जोफिया पेन्जा–गेबलर, जुस्तिना कोसिंस्का, इवोना बोजादज्जेवा।

रोमानिया : रालूकॉ पोपस्कू, रेइसा–गेब्रियला जेमफायरस्कू, डायना एलेक्सेंड्रा डुमित्रेस्कू, लुलिआन गेबर, बियांका मिहायला, एलेक्सांड्रा मॉसर, मिओरा पारासिव, मारिया स्तोइसेस्कू।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, अनास्तासिया दौर, वेलेंटीना इसाऐवा।

ताईवान : वॉन–जू ली, बुन–की लिन, ताओ–यूंग ली, पो–सेंग होंग, यू–मिन हाँग।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

चतुर्थ आईएसए फोरम ऑफ सोशियोलोजी जुलाई 2020 में ब्राजील के पोर्टो एलेग्रे शहर में आयोजित होगी। उसके अध्यक्ष ज्योफी प्लेयर्स के साथ ब्राजील समाजशास्त्र संघ के अध्यक्ष जैकब कार्लोस लीमा और स्थानीय आयोजन समिति के सदस्यों के साथ छः युवा विद्वान वर्तमान ब्राजिलियाई समाजशास्त्र पर अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

यूरोपीय कल्याणकारी राज्यों के व्यवस्थित विघटन के कारण ***यूरोपीय देशों*** में ***सामाजिक नीतियां*** समाजशास्त्रीय शोध एवं राजनैतिक कार्यवाही का प्रमुख विषय रही है। इस संगोष्ठी में सम्मिलित आलेखों में शोधकर्ता यूरोपीय कल्यारण राज्यों के प्रक्षेपवक्र को और सामना की गई चुनौतियों पर अपना शोध प्रस्तुत करते हैं।

डिजिटलीकरण समाज को आधारभूत रूप में रूपांतरित कर देगा और अभी भी कर रहा है। ये आलेख इसके श्रम, वित्तीय बाजारों पर संवहनीयता पर पड़ने वाले प्रभावों की जांच करते है और प्लेटफार्म अर्थव्यवस्था में श्रमिक अधिकारों और उचित कार्य परिस्थितियों को बनाने या कायम रखने में शोध कैसे योगदान दे सकता है, को भी सम्बोधित करते हैं।

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से ***वैश्विक संवाद*** का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

सम्पादकीय 2

> समाजशास्त्र पर बातचीत

पुर्तगाली क्रांति की विरासत :
रेक्वल वरेला के साथ एक साक्षात्कार
क्रिस्टिन शिकर्ट, जर्मनी द्वारा 5

> पोर्टो एलेग्रे में चतुर्थ आई.एस.ए. फोरम ऑफ सोशियोलोजी

इक्कीसवीं सदी की अर्न्तसम्बन्धित चुनौतियाँ
ज्योफ्री प्लेयरस, बेल्जियम द्वारा 8

एस.बी.एस. द्वारा आई.एस.ए. फोरम का स्वागत
जेकब कार्लोस लीमा, ब्राजील द्वारा 11

ब्राजीलियन समाजशास्त्र के भीतर : एक संक्षिप्त मूल्यांकन
हर्मिलियो सान्तोस, एंड्रे सलाता,
एमिल सोबोटका, ब्राजील द्वारा 13

संस्थागत बचपन के वृत्तांत
वेरिडियाना डोमिंगोस कोर्डेरो, ब्राजील द्वारा 15

ब्राजील में एक नीति क्षेत्र के रूप में सामाजिक सहायता
गुस्तावों कोंडे मार्गराइट्स, ब्राजील द्वारा 17

पोर्तो एलग्रे में शहरी आवास के लिये महिलाओं का संघर्ष
प्रिसिला सुसिन, ब्राजील द्वारा 18

रेसिफे, ब्राजील में हिंसा का अनौपचारिक शासन
रिकार्डो कालडस केवालकांती, ब्राजील द्वारा 20

ब्राजील में पेशेवर असमानताएं
लूकास परेरा वान डेर मास, ब्राजील द्वारा 22

रियो डी जेनरियो के मध्यम वर्ग के प्रक्षेप पथ
इजाबेल वीइरा, ब्राजील द्वारा 24

> यूरोपीय देशों में सामाजिक नीति

मित्तव्यत्ता : स्वास्थ्य सेवा में सार्वभौमिकता से समझौता?
मारिया पेतमेसिदाउ, ग्रीस, एना गुइलेन, स्पेन,
एमेन्यूले पावोलिनी, इटली द्वारा 26

अस्थायी कार्यों के नये दौर में बेरोजगारी लाभ
डेनियल क्लेग, ब्रिटेन द्वारा 28

समाजिक नीतियों का विषयीकरण, समाजों का ध्रुवीकरण
रॉलैंड एत्ज़मुलर, ऑस्ट्रिया द्वारा 30

पारिवारिक नीतियों के लिए दक्षिण यूरोप में समर्थन
सिजिता डोब्लाइट, एवं अरोआ तेजेरो, स्पेन द्वारा 32

जर्मनी में स्वैच्छिक कार्य करना :
अच्छा कार्य या एक आभासी अर्थव्यवस्था
सिल्के वैन डाइक एवं टाइन हाउबनेर, जर्मनी द्वारा 34

क्या यूरोपीय संघ अपने सामाजिक स्तंभ को बनाए रखेगा?
बीट्राइस केरेला, इटली द्वारा 36

> डिजिटिकरण की चुनौतियाँ

किसकी बुद्धि कृत्रिम बुद्धि है?
पाओला टुबारो, फ्रांस द्वारा 38

महान नवीनताओं का एक संग्रहालय
लेवियो स्केटोलिनी, ब्राजील द्वारा 40

एक धारणीय डिजिटलीकरण को क्या चाहिये?
फेलिक्स सुहलमान–फॉल, जर्मनी द्वारा 42

द फेयरवर्क फांउडेशनः गिग अर्थव्यवस्था पर एक्शन रिसर्च
सुजाना कटटा, कैली हाउसन और मार्क ग्राहम, यूके द्वारा 44

> सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

पूंजीवाद, वर्ग, विवाद
डोनाटेला डेला पोर्टा, इटली द्वारा 47

> स्मृति में

अफ्रीका के अग्रणी मार्क्सवादी समीर अमीन को श्रद्धांजलि
विश्वास सत्गार, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 51

इमानुअल वालरस्टीनः एक उत्कृष्ट समाजशास्त्री और बुद्धिजीवी
साडी हनाफी, लेबनान एवं स्टीफनी डुफोक्स, फ्रांस द्वारा 53

इमानुअल वालरस्टीनः समाजशास्त्र को नई सुसंगति प्रदान करना
फ्रैंक वेल्ज,ऑस्ट्रिया एवं आनन्द कुमार, भारत द्वारा 55

> खुला अनुभाग

मध्य अमेरिका में एक गतिशील रणनीति के रूप में प्रवासी कारवां
वेरोनिका मोंटेस, यूएसए द्वारा 56

बफ़ेलो, न्यूयॉर्क : शरणार्थी पुनर्वास में अच्छा प्रयास
आयसेगुल बाल्टा ऑजगेन, यूएसए द्वारा 58

ब्राजील में चतुर्थ आईएसए फोरम में स्वागत हैं। स्वतंत्रता लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के संघर्षो में हम आप का साथ चाहते है। स्वतंत्रता के बिना समाजशास्त्र का होना संभव नहीं है।

जेकब कार्लोस लीमा

> पुर्तगाली क्रांति की विरासत

रेक्वल वरेला के साथ एक साक्षात्कार

रेक्वल वरेला पुर्तगाल में लिस्बन के नोवा विश्वविद्यालय में कार्यरत एक इतिहासकार हैं। उनका काम श्रम इतिहास, कल्याणकारी राज्य, बीसवीं सदी के पुर्तगाल और यूरोप के इतिहास के साथ–साथ सामाजिक आंदोलनों के इतिहास पर केंद्रित हैं। वे नेटवर्क फॉर ग्लोबल लेबर स्टडीज की सह–संस्थापक और इंटरनेशनल एसोसिएशन स्ट्राइक्स एंड सोशल कनफ्लिक्ट की अध्यक्ष हैं।

अपनी पुस्तक अ पीपल्स हिस्ट्री ऑफ द पोंच्युगीस रिवॉल्यूशन (2018) में वे पुर्तगाल के 1974 कार्नेशन रिवोल्यूशन के इतिहास को नीचे से बताती हैं। ऐसा करने के लिए, वे अफ्रीका के औपनिवेश–विरोधी आंदोलन के साथ–साथ इस प्रक्रिया में पुर्तगाली कामगारों, महिलाओं और कलाकारों की भूमिका की पड़ताल करती हैं।

यहां उनका साक्षात्कार जर्मनी की फ्रेडरिक शिरल विश्वविद्यालय में पोस्ट ग्रोथ समाजों पर डीएफजी रिसर्च ग्रुप की प्रशासनिक निदेशक एवं वैश्विक संवाद की सहायक संपादक **क्रिस्टिन शिकर्ट** द्वारा किया गया।

कार्ल रेक्वल वरेला, श्रेयः वेरिसिमो दियास

सी.एस. : 46 वर्ष पूर्व, अप्रैल 1974 में पुर्तगाल में एक सैन्य तख्तापलट से तानाशाही का अंत हुआ। इस तख्तापलट का तात्कालिक कारण पुर्तगाल द्वारा अपने उपनिवेशों में छेड़े गए युद्ध के साथ सेना का असंतोष था। क्या आप हमें युद्ध के समय अफ्रीका में पुर्तगाली उपनिवेशों की स्थिति के बारें में बता सकती हैं ? राजनैतिक नेतृत्व से सेना के निराश होने के क्या कारण थे ?

आर.वी. : उस समय पुर्तगाल एक अत्यंत पिछड़ा हुआ देश था। वह पुराने साम्राज्य में अंतिम और एक ऐसा साम्राज्य था, जिसने 1961 और

>>

1974 के मध्य एक मिलियन से अधिक युवा लोगों को लामबंद कर एक खराब उपनिवेशी युद्ध लड़ा जिसने 13 वर्षों तक उपनिवेश– विरोधी क्रांतियों के खिलाफ डटकर मुकाबला किया। अकेले 1974 में, 150000 लोगों को युद्ध के लिए जुटाया गया। औपनिवेशिक युद्ध की हार का मुख्य कारण मुक्ति आंदोलन, विशेष रूप से गिनी–बिसाऊ में, जहां इसका नेतृत्व एक महान विस्मृत मार्क्सवादी एमिलकर कैब्रल ने किया, था।

मजबूत मुक्ति आंदोलन एवं लंबे समय तक चली लड़ाई ने, न तो जनरल, न सैनिक बल्कि अधिकांशतः मध्यम रैंक से, सेना के कुछ अधिकारियों को, यह स्पष्ट कर दिया था कि यह युद्ध जारी नहीं रह सकता था और इसे समाप्त करने के लिए अराजनैतिक समाधान की आवश्यकता थी। इसलिए उन्होंने 25 अप्रैल 1974 को एक तख्तापलट का आयोजन किया। तख्तापलट के कमांडर ओटेलो सरायवा डे कार्वाल्हो थे। उन्होंने सत्ता को हराया और तानाशाह मार्सेलो कैटेनो को पदच्युत कर दिया, लेकिन उन्होंने लोगों से घर पर ही रुकने को कहा। लेकिन लोगों ने उनकी सुनी नहीं और वे सड़कों पर निकल आए।

उपनिवेशों में क्रांति को विशेष रूप से यह दिलचस्प बनाता है कि पहली बार जो थर्ड इंटरनेशनल ने कहा होगा, वह हुआः अशांति उपनिवेशों से केंद्र तक, महानगरों तक फैल गई। 1975 के पश्चात यह पुनः उपनिवेशों में फैल गई। तानाशाही से मुक्ति उपनिवेशों में खूनी युद्ध से प्रारंभ हुई और फिर यह लिस्बन की सड़कों पर एक जश्न में बदल गई। ये यूरोप में युद्ध पश्चात युग के सबसे कट्टरपंथी क्रांति के 19 महीने थे– यह युद्ध पश्चात की अंतिम क्रांति थी जो मई 1968 से अधिक कट्टरपंथी थी। एवं निजी संपत्ति पर प्रश्न उठाने वाली यह अंतिम क्रांति थी।

सी.एस. : मैं पहले यह बिंदु उठाती हूँ कि सेना ने लोगों को घर पर रहने को कहा लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। क्या आप हमें इसके बारे में और उस समय लोगों की स्थिति के बारे में अधिक बता सकती हैं ? इस क्रांति में वे सेना के साथ क्यों शामिल हुए?

आर.वी. : 48 वर्षों तक पुर्तगाल एक तानाशाह देश एवं यूरोप के सबसे पिछड़े देशों में से एक था। 1961 एवं 1974 के मध्य, तीन मोर्चों पर लड़े, गये एक उपनिवेशी युद्ध ने 10 लाख से भी अधिक लोगों को संगठित किया। आनुपातिक रूप से, उपनिवेशों के साथ युद्ध में, वियतनाम में अमेरिकी सैनिकों की तुलना में अधिक पुर्तगाली मरे। विशेषकर युद्ध और निर्धनता से बचने के लिए कई लोग यूरोप के अन्य देशों में उत्प्रवास कर गये। 1960 के बाद से लगभग 1500000 लोगों ने देश छोड़ दिया। पुर्तगाल में बाल मृत्यु दर सबसे अधिक थी एवं महिलाएं अपने पत्र–व्यवहार को अपने पतियों से खुलवा सकती थीं।

पुर्तगाल 95 लाख की आबादी वाला देश था और 25 अप्रैल के एक सप्ताह पश्चात 1 मई 1974 को 20 लाख लोगों ने 1 मई का जश्न मनाते हुए न सिर्फ तानाशाही के अंत जैसे लोकतांत्रिक परिवर्तनों की मांग की बल्कि उन्होंने क्रांतिकारी सामाजिक मांगे जैसे न्यूनतम मजदूरी, शनिवार एवं रविवार को कार्य नहीं करना, रात्रि पारी के लिए भुगतान किया जाना या पुरुषों एवं महिलाओं के लिए समान वेतन के लिए भी आवाज उठाई। पुर्तगाली क्रांति के दौरान 30 लाख लोग या तो श्रमिक आयोगों, पड़ोस आयोगों, सिटी आयोगों या छात्र आयोगों में संगठित थे। यह एक ऐसी क्रांति थी जो न केवल औद्योगिक क्षेत्र जिसने इस प्रक्रिया का मुख्य से नेतृत्व किया, में हुईः सभी क्षेत्रों के कामगार इसमें सम्मिलित हुए, उदाहरण के लिए, सार्वजनिक सेवा कामगार। इस प्रकार अस्पताल पर चिकित्सकों का कब्जा था, विद्यालय पर शिक्षकों का। कार्नेशन रिवॉल्यूशन 20 वीं सदी का एक पछेती आंदोलन था, इसलिए पुर्तगाल में पहले से ही एक बहुत मजबूत सेवाक्षेत्र था जिसमें बड़ी संख्या में कामगार कार्यरत थे। और यह लोग क्रांति का हिस्सा थे।

सी.एस. : अब मैं आपके द्वारा उल्लेखित दूसरे बिंदु पर आती हूँ: आपने कहा कि पुर्तगाली क्रांति संपत्ति के प्रश्नों को संबोधित करने वाली आखिरी क्रांति थी ...

आर.वी. : छः सौ कंपनियों पर कब्जा कर लिया गया था और वे स्वप्रबंधित या किसी भी तरह की सहकारी समितियां बन गई। बड़ी कंपनियों में कामगारों की नियंत्रण की प्रक्रिया प्रारंभ की गई और बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया और बैंक सेक्टर का किसी मुआवजे को दिए बिना अधिग्रहण किया गया। कुछ महीनों बाद बुर्जआ वास्तव में देश छोड़कर चले गये। पलायन कर वे ब्राजील भाग गये। मेरी राय में, यद्यपि यह एक प्रतितथ्यात्मक विश्लेषण है (इतिहास में हम "अगर" नहीं कहते हैं–यह तथ्यों के खिलाफ है), इसने नवउदार नीतियों की शुरुआत को 10 वर्ष के लिए लंबित कर दिया। क्रांति के बाद नवउदार राजनीति का सूत्रपात नहीं किया गया क्योंकि तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जेराल्ड फोर्ड और उनके प्रशासन को सही में यह डर था कि पुर्तगाल एक लाल भूमध्यसागर का प्रारंभ हो सकता है। इस तरह, पुर्तगाली क्रांति यह दर्शाती है कि जरूरी नहीं है कि एक आर्थिक संकट, जैसा मार्क्स ने वास्तव में इंगित किया, श्रमिक वर्ग के लिए विपदा हो लेकिन वह इसे राज्य के राजनैतिक संकट में बदलने के लिए और मुख्य शासक वर्गों के खिलाफ काम में ले सकते हैं।

सी.एस. : लोगों की बात करते हैं, आपने अपनी पुस्तक का नाम अ पीपुल्स हिस्ट्री ऑफ द पोॅच्युगीस रिवॉल्यूशन रखा। इसके पीछे आपकी मंशा क्या थी? आप इसे इस तरह क्यों कहना चाहती थी?

आर.वी. : स्पष्टतः 1960 के दशक में "नीचे से इतिहास" और ब्रिटेन से सामाजिक इतिहास का प्रभाव है और अधिक प्रत्यक्ष रूप से यह अमेरिकी इतिहासकार और समाजवादी चिंतक हावर्ड जिन से प्रभावित है। एक यह विचार है कि हमें प्रतिरोध के इतिहास को, संघर्षरत लोगों के, लड़ने वाले लोगों के इतिहास को लिपिबद्ध करना है। इसलिए हमें इतिहास में न सिर्फ संस्थानों एवं सरकारों के इतिहास को बल्कि नीचे से इतिहास, लोगों के इतिहास को, अनाम जनता जो भूमिका निभाती है, श्रमिकों के प्रतिरोध को सम्मिलित करने की जरूरत है। इतिहास का यह अत्यावश्यक भाग एक व्यापक समझ के लिए आवश्यक है। चूंकि कामगार वर्गों को अक्सर वह क्या कर सकते हैं के बारे में पता नहीं होता है, लोगों का, उनके कार्यों के इतिहास के बारे में लिखा जाना महत्वपूर्ण है और इतिहास के उन खास क्षणों को दिखाना चाहिए जब कामगार वर्ग अत्यधिक मजबूत हो और वे दुनिया को बदलें, वे स्वयं को बदलें। हम ऐसे देश की बात कर रहे हैं जो 1974 तक 48 वर्ष यूरोप का सबसे पिछड़ा देश था और अगले 25 वर्षों में यह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवाओं वाला 12वाँ देश बन गया। ऐसा केवल अपरिमित सामूहिक शक्ति के द्वारा ही संभव है।

पुर्तगाली क्रांति के बारे में यह भी रोचक है कि पहली बार वामपंथ पर स्तालिन के तरीकों पर प्रश्न उठाए गये। 1968 की मई क्रांति ने पहले ही फ्रांस के बड़े कारखानों में स्तालिनवादियों के प्राधान्य पर सवाल उठाए थे लेकिन पुर्तगाली क्रांति में यह पूछताछ अधिक गंभीर थी।

>>

तथाकथित चरमपंथी वाम, या कम्युनिस्ट पार्टी के वाम की औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्रों दोनों के बड़े यूनियनों में, संघर्षों के नेतृत्व में, श्रमिक आयोगों में वृहद शक्ति थी।

सी.एस. : आइए अब हम पुर्तगाली क्रांति की विरासत की बात करते हैं: क्या संपत्ति के संबंधों को चुनौती देना/सवाल करना और कंपनियों का पुनर्गठन आज के राजनैतिक परिश्य में भी परिलक्षित होता है चाहे वह आंदोलन या पार्टियों का स्तर हो ? और क्या यह किसी भी तरह से पुर्तगाल ने जिस प्रकार 2008 के बाद के वित्तीय संकट/ऋण संकट के परिणामों का प्रबंधन किया हैए से जुड़ा है?

आर.वी. : सम्पति संबन्धों में अंतिम बदलाव में से एक, जो पोस्ट–ट्रोइका युग तक बना रहा, नियंत्रित कीमतों के साथ आवास में था। पुर्तगाली वित्तीय संकट (2010–4) के दौरान पुर्तगाल के लिए आर्थिक समायोजन कार्यक्रम पर सौदेबाजी करते हुए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं जर्मनी/इ.यू. की एक मांग आवासीय बाजार का उदारीकरण करना थी, जिसका कामगार वर्गों (निर्धन एवं मध्यम) पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। क्रांति का सबसे स्थाई प्रभाव चरम दक्षिणपंथ से मुकाबला था जो आज भी कायम है।

सी.एस. : हाँ, यह एक और बिंदु है जिसका मुझे ख्याल आता है: 2008 के वित्तीय संकट के बाद, यूरोप के अन्य देशों के विपरीत पुर्तगाल में, कोई ताकतवर दक्षिणपंथी पार्टी विकसित नहीं हुई। क्या आप व्याख्या कर सकती हैं कि यह कार्नेशन रिवॉल्यूशन से कैसे जुड़ा है?

आर.वी. : यह निश्चित रूप से क्रांति का परिणाम है। क्रांति केवल लोकतंत्र में परिवर्तन के लिए ही नहीं थी अपितु एक ऐसी क्रांति थी जिसने राज्य तंत्र में परिष्करण किया और दक्षिणपंथी शासन के नेतृत्व को राज्य तंत्र से बाहर कर दिया। इस नेतृत्व के साथ एक स्पष्ट भंजन था। पुर्तगाल में चरम दक्षिण पंथ की कोई संसति एवं कार्य दक्षता नहीं है। बेशक, यह बदल सकता है लेकिन अब तक, जब तक क्रांति की पीढ़ी अभी जिंदा है, मुझे नहीं लगता है कि एक मजबूत चरण दक्षिण पंथ होना संभव है। बेशक इसका यह अर्थ है कि 10 वर्षों में क्या होगा, यह हम नहीं जानते हैं? ■

सभी पत्राचार रेक्वल वरेला को <raquel_cardeira_varela@yahoo.co.uk> पर प्रेषित करें।

> इक्कीसवीं सदी की अन्तर्सम्बन्धित चुनौतियाँ

ज्योफ्री प्लेयरस, केथोलिक यूनिवर्सिटी ऑफ लौवेन, बेल्जियम, चतुर्थ आइ.एस.ए फोरम ऑफ सोशियोलोजी के अध्यक्ष एवं शोध के लिए आईएसए के उपाध्यक्ष (2018–22), सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन की आईएसएस शोध समिति (आरसी 47) के पूर्व अध्यक्ष और धर्म का समाजशास्त्र (आरसी 22), युवाओं का समाजशास्त्र (आर सी 34) एवं सामाजिक आंदोलन सामूहिक कार्रवाई एवं सामाजिक परिवर्तन (आरसी 48) पर आईएस ए की शोध समितियों के सदस्य द्वारा।

जनवरी 2001 में, सभी महाद्वीपों से 20,000 कार्यकर्ता और लोक बुद्धिजीवी प्रथम वर्ल्ड सोशल फोरम के लिए पोर्टो एलेग्रे में एकत्रित हुए थे। वह इस उम्मीद से एकजुट थे कि 21वीं सदी अधिक लोकतांत्रिक होगी और यह कि अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता एवं वैश्विक संघर्ष वैश्वीकरण को एक निष्पक्ष और अधिक समान दुनिया की ओर आकार दे सकते हैं।

लगभग दो दशक बाद, जुलाई 2020 में, सभी महाद्वीपों से 5,000 समाज वैज्ञानिक उसी शहर में सामाजिक रूपांतरणों का विश्लेषण करने के लिए आईएसए फोरम ऑफ सोशियोलॉजी में भाग लेंगे। वह हमारी सदी की चार मुख्य चुनौतियों पर उनके शोध और दृष्टिकोणों को और समाज विज्ञान उनसे निपटने में कैसे योगदान दे सकते हैंए को साझा करेंगे। इस समय प्रसंग और सामान्य मनोदशा काफी भिन्न होगी क्योंकि सहस्राब्दी का आशावाद फीका हो गया है और एक सीमित ग्रह पर एक साथ रहने की हमारी चुनौतियाँ और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं।

इन दो दशकों में, और विशेष रूप से पिछले 5 वर्षों में चार चुनौतियाँ: लोकतंत्र, पर्यावरणीय संकट, असमानताएं और अंतरानुभागीयता काफी तेजी से बढ़ी हैं।

सहस्राब्दी के मोड़ पर लोकतंत्र के विस्तार और गहनता को स्वीकारा गया। रंग क्रांतियों और 2011 की अरब क्रांति का "लोकतांत्रिकरण की चौथी लहर" के रूप में विश्लेषण किया गया। हालांकि, जहां 2010 का दशक सभी महाद्वीपों में लोकतंत्र के लिए आंदोलनों के एक अप्रत्याशित विस्तार के साथ प्रारंभ हुआ, इसका अंत लोकतंत्र, पर्यावरण, सहिष्णुता और आर्थिक एवं लैंगिक समानता को खतरे में डालने वाले अनुदार नेताओं के विस्तार के साथ हुआ। इस बीच, जलवायु परिवर्तन, प्रवासन और बढ़ती असमानता जैसे वैश्विक मुद्दों से निपटने में सक्षम एक अधिक लोकतांत्रिक वैश्विक शासन की उम्मीद फीकी पड़ गई हैं। अब यह स्पष्ट हो गया है कि वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए लोकतंत्र को प्रतिनिधि प्रणाली के भीतर और उसके परे पुनः आविष्कृत करने की आवश्यकता है।

इस दशक को अति धनाढ्य और बाकी आबादी के मध्य बढ़ते अंतर द्वारा आकार दिया गया है। ऐसा तथा–कथित "विकसित" देशों, दोनों जिन्होंने आर्थिक वृद्धि के एक सबसे लंबे दौर को अनुभव किया (विशेषकर यूएसए एवं जर्मनी) और वे जो चीन की अर्थव्यवस्था और

>>

कल्याणकारी राज्य मित्तव्ययत्ता नियोजन से तबाह हुए, में निर्धनता की बढ़ती दरों के कारण हुआ। दशक के उत्तरार्ध में, दो मुद्दे एक बार पुनः मुख्य चिंता बन गयेः पर्यावरणीय संकट और लैंगिक हिंसा एवं नस्लवाद। जहाँ वैश्विक दक्षिण की महिलाएं लोकतंत्र की रक्षा करने और उत्पीड़न के पितृसत्तात्मक पक्षों की निंदा करने में अग्रणी रही हैं, 8 मार्च हड़ताले, #NiUnaMenos एवं #मीटू कैंपेन जैसी नारीवादी लामबंदीयों ने लैंगिक उत्पीड़न एवं नारी हत्या को वैश्विक खबरों की हेडलाइंस के साथ–साथ दैन्य जीवन एवं विश्वविद्यालय कैंपस में भी सुर्खियों में डाल दिया। इस बीच किशोरों की स्कूल हड़तालों ने जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण क्षति को प्रमुख वैश्विक चिंताएं बना दिया है। वे वैश्विक दक्षिण के आंदोलनों से गहराई से प्रेरित होकर व्यवस्था गत बदलाव की मांग वाली परिस्थितिकी के एक अभिन्न दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हैं। इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑफ क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) की नवीनतम रिपोर्ट 21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन के भयावह आंकड़े दिखाती है जबकि समस्त प्रजातियों का विलोपन जारी है।

> परस्पर संबन्धित चुनौतियाँ

इस सदी के पहले दो दशकों में सामाजिक आंदोलनों एवं समाज विज्ञानों ने जो हमें सिखाया है वह है कि यह चार चुनौतियां कितनी गहराई से गुथी हुई हैं। लोकतंत्र, पर्यावरणीय संकट, असमानताएं और परस्परछेदन/अंतरानुभागीयता के मध्य बढ़ते संबंध हमें इन प्रत्येक संबोधों में अंतर्संबंधता को प्रारंभिक बिंदु रख, पुनः देखने और पुनः संकल्पित करने के लिए बाध्य करते हैं।

उदाहरण के लिए, पर्यावरणीय संकट, असमानताओं और अंतरानुभागीयता को ध्यान में रखना हमें लोकतंत्र का अलग तरीके से पुनर्विचार करने की तरफ ले जाता है। एक तरफ, देशों की बढ़ती हुई संख्या में लोकतंत्र को अनुदार नेताओं से खतरा है। जो मानवाधिकार, विविधता और सभी नागरिकों के लिए समान सम्मान के बुनियादी मूल्यों को बाधित करते हैं, जबकि वे अंतरराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा पर्यावरण के त्वरित विनाश का समर्थन करते हैं और पितृसत्ता, नक्सलवाद और असमानताओं को मजबूत करते हैं। दूसरी तरफ, प्रगति आंदोलन भी संस्थागत लोकतंत्र को चुनौती देते हैं क्योंकि उन्हें गहन राजनैतिक, सांसतिक एवं सामाजिक परिवर्तन और कार्यवाही दोनों की आवश्यकता होती है जिसके लिए राष्ट्र–राज्य पर केंद्रित हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली ठीक से तैयार नहीं हैः वैश्विक ताप एवं पर्यावरणीय तबाही से निपटने के लिए वैश्विक स्तर ; लैगिंक शोषण एवं नारीहत्या से निपटने के लिए पितृसत्तात्मक संस्कृति में अंतरंगता और दैनिक जीवन।

असमानताओं का बढ़ना लोकतंत्र और पर्यावरण दोनों के लिए एक बड़ा खतरा है। वैश्विक असमानताओं का स्तर इतना बढ़ गया है कि राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर "शीर्ष 1 प्रतिशत" और वैश्विक कॉर्पोरेशनस के पास मुख्य राजनीतिक शक्ति है। माइकल वाल्जर के "क्षेत्रों के पृथक्करण" के लोकतांत्रिक आदर्श से कहीं दूर, पिछले दशक ने कई देशों में अरबपतियों को राष्ट्रपति बनते देखा है, जबकि राजनैतिक एवं आर्थिक अभिजनो और लॉबियों की प्रभावी शक्ति के मध्य मिलीभगत कई समकालीन राजनैतिक शासनो की प्रमुख विशेषता बन गई है।

जलवायु न्याय आंदोलन के साथ, समाजशास्त्रियों ने हमें दिखाया है कि जलवायु परिवर्तन और प्रति की तबाही मूल रूप से एक सामाजिक मुद्दे हैं और इन्हें समाज में गहरे बदलाव के बिना सीमित नहीं किया जा सकता है। इसके कारण मौजूदा वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था और प्रातिक संसाधनों के लिए इसकी बढ़ती भूख में निहित है। पृथ्वी जहां हमारा साझा घर है, पर्यावरणीय आपदा में हम सब की विभिन्न जिम्मेदारियाँ हैं। ऑक्सफैम ने गणना की कि वैश्विक स्तर पर सबसे धनी 1 प्रतिशत लोगों का औसत पदचिन्ह सबसे निर्धन 10 प्रतिशत से 175 गुना अधिक है। अंतरानुभागीय उपागम और पर्यावरणीय न्याय आंदोलन हमें दर्शाते हैं कि जहां महिलाएं अल्पसंख्यक और कम धनी पृथ्वी की तबाही में कम योगदान देते हैं, वे इसके लिए अधिक कीमत देते हैं जिसमें जीवन प्रत्याशा में महत्वपूर्ण कमी और जलवायु शरणार्थियों में उभार सम्मिलित है।

स्थायी और अंतर्संबंधित आर्थिक, नस्लीय, उपनिवेशी और लैंगिक भेदभाव, और उन्हें पोषित करने वाली हिंसा हमारे समय की एक और बढ़ती चुनौती है। अश्वेत नारीवादी कार्यकर्ता, देशज आंदोलन, और समाज वैज्ञानिकों ने नस्ल, वर्ग और लिंग की अंतर्संबंधित प्रति जो भेदभाव या नुकसान के अतिव्यापी और अंतर्संबंधित व्यवस्था का सर्जन करती है, पर नई रोशनी डालते है। प्रतिछेदन दृष्टिकोण लोकतांत्रिक चुनौतियों, असमानताओं और पर्यावरणीय न्याय पर पुनर्विचार को अग्रेषित करता हैं। वर्तमान प्रतिनिधि लोकतंत्र प्रणाली ने नस्लवाद और पितृसत्तात्मक उत्पीड़न से निपटाने में अपनी सीमाएं दिखाई है। असमानताएं गहन रूप से लिंग और नस्लवादी भेदभाव से और ऐसे ही पर्यावरणीय तबाही/आपदा एवं वैश्विक ताप द्वारा जनित पीड़ा से जुड़ी हुई है। प्रतिछेदन के प्रति बढ़ती चेतना दलित कर्ताओं और आंदोलनों के उभार का परिणाम और ट्रिगर दोनों हैं। देशज समुदायों, अल्पसंख्यकों, नारीवादियों और लघु किसानों ने प्रथाओं, सामाजिक संघर्षों और वैकल्पिक विश्व दृष्टि को मिलाकर अन्याय का विरोध किया है।

सामाजिक नीति और आर्थिक वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करने वाले प्रगतिशील कार्यकर्ताओं द्वारा लंबे समय से जेंडर को एक गौण विषय माना गया है। आज यह वैश्विक लोकतंत्र की लड़ाई के केंद्र में है। 2020 में, अश्वेत महिलाएं और अल्पसंख्यक पृष्ठभूमि की महिलाएं अनुदार और सत्तावादी शासनों की पहली शिकार होती हैं। वे 21वीं सदी में लोकतंत्र की रक्षा और सुदृढ़ीकरण में भी अग्रणी है। वह ऐसी दुनिया का मार्ग प्रशस्त करती हैं जहां अंतर–विषयक संबंध, करुणा, एकजुटता एवं देखभाल (स्वयं की, अन्य मनुष्यों की और प्रति की) एक सीमित ग्रह पर एक साथ रहने के हमारे अनुभव और समझ को पुनः आकारित करते हैं।

हालांकि सभी उत्पीड़ित कर्ताओं को पारिस्थितिकी के नवीनीकरण से जोड़ना भ्रामक होगा। जहाँ पारिस्थितिकी लड़ाई में नारीवादी और देशज आंदोलन सबसे आगे हैं, लुईसियाना में पर्यावरणीय आपदाओं के शिकार लोगों के मध्य अर्ली होच्सिचिल द्वारा किए गए अध्ययन दिखाते हैं कि ये पीड़ित कैसे प्रतिक्रियावादी और नस्लवादी रुख के नवीनीकरण के राजनैतिक आधार भी बन सकते हैं जो हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली और पर्यावरण के लिए सीधा खतरा पैदा करते हैं। यह हमें पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के तरीकों और हमारे लोकतंत्र के भविष्य के मध्य गहरे अंतर्संबंधों का स्मरण कराता है।

इन चारों चुनौतियों को जोड़ने से हमें पता चलता है कि ये शक्ति संबंधों, हमारे सामाजिक ढांचे के साथ साथ हमारी आधुनिक संसति, विषयपरकता विश्वष्टि और समाज विज्ञानों में कितनी गहराई से जड़ हैं। यह स्पष्ट हो गया है कि इनसे अलग–अलग चुनौतियों, क्षेत्रीय मांगों या पृथक शोध क्षेत्र के रूप में निपटने का कोई तरीका नहीं है। अन्य तीन से निपटे बिना किसी एक का समाधान करने का कोई तरीका नहीं है। वे एक साथ, जिसे लेटिन अमेरिका विद्वान ''सभ्यतागत संकट'' कहते हैं, के समन्वय को आकर्षित करते हैं।

>>

> आईएसए फोरम 2020: विश्लेषणों को साझा करने का एक अवसर

आईएएस फोरम 2020 इन चार वैश्विक चुनौतियों और उनके अंतर्संबंधों पर हमारे विश्लेषणों को साझा करने का एक अवसर होगा। यह उनके द्वारा उठाए गए ज्ञानमीमांसीय प्रश्नों पर, इन चुनौतियों का सामना करने वाले कर्ताओं के साथ हमारे संबंध और उनसे निपटने में समाजशास्त्र के योगदान पर चर्चा करने का भी एक आमंत्रण है। हमारा विषय इन चुनौतियों और उनसे उभरने वाले कर्ताओं द्वारा कैसे रूपांतरित हुआ है? कर्ताओं को ज्ञान के उत्पादक के रूप में देखना कैसे हमें नई ज्ञानमीमांसाओं को अपनाने के लिए आमंत्रित करता है? नवोन्मेशी समाजशास्त्रीय विश्लेषण वैश्विक युग में हमारी आम चुनौतियों को समझने और निपटने में कैसे योगदान दे सकता है? इन समस्याओं से निपटने में हमें किन अवरोधों का सामना करना पड़ता है? हाल के अनुभवों, कथाओं और चुनौतियों के आधार पर लोकतंत्र, पारिस्थितिकी, असमानता और प्रतिछेदन के संबंधों को कैसे पुनःनिर्मित किया गया है? 21वीं सदी के प्रतिक्रियावादी और प्रगतिशील कर्ताओं के मध्य युद्ध में से यह कैसे अग्रिम पंक्ति बन गए हैं?

इस सदी के दो दशक बाद, विज्ञान और समाज विज्ञान हमें दिखाते हैं कि हम चुनौतियों में से अधिकांश के लिए दोराहे पर हैं। अगले दशक में मानवता सामूहिक रुप से जिस तरह इन चुनौतियों से निपटेगी, शेष 21वीं शताब्दी में वह मानव के जीवन को आकारित करेगा। ■

सभी पत्राचार ज्योफ्री प्लेयरस को <Geoffrey.Pleyers@uclouvain.be> पर प्रेषित करें।

> एस.बी.एस. द्वारा आई.एस.ए. फोरम का स्वागत

जेकब कार्लोस लीमा, फेडरल यूनिवर्सिटी ऑफ साओ कार्लोस, ब्राजील, ब्राजील समाजशास्त्र संघ के अध्यक्ष और आई.एस.ए की कार्य का समाजशास्त्र की शोध समिति (आर.सी.30) के सदस्य द्वारा

सन् 2017 में ब्राजील समाजशास्त्र संघ (एस.बी.एस) ने अपने अस्तित्व के 70 वर्ष पूरे किये। 1937 में पोलिस्ता सोसाइटी ऑफ सोशियोलॉजी के रूप में स्थापित, यह 1950 में प्रभावी रूप से ब्राजील समाजशास्त्र संघ के रूप में संगठित हुआ और यह नव स्थापित अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ में सम्मिलित हुआ।

1937 से 2017 तक की अवधि निरंतर नहीं थी। ऐसा एक लघु पेशेवर श्रेणी जो लगभग पूरी तरह से विश्वविद्यालयों से जुड़ी हुई थी, के राजनैतिक एवं संगठनात्मक विशेषताओं के कारण हुआ। 1950 में इसके पुनर्गठन के बाद, एस.बी.एस ने 1954 में साओ पाउलो शहर में ब्राजील की प्रथम समाजशास्त्र कांग्रेस का आयोजन किया। 1964 में सैन्य तख्तापलट के कारण समाजशास्त्र पर गहरा आघात हुआ जिसमें विश्वविद्यालय के कई प्रोफेसरों और शोधकर्ताओं की अनिवार्य सेवानिवृत्ति शामिल थी। 1985 में देश के लोकतांत्रिककरण के पश्चात ही एस.बी.एस का पुनर्गठन किया गया। तबसे द्वि–वार्षिक कांग्रेस के साथ यह नियमित रूप से अस्तित्व में रही है। इसने 2019 में फ्लोरिनोपोलिस शहर में अपनी 19वीं काँग्रेस आयोजित की।

एस.बी.एस के प्रारंभिक दशकों में अनिश्चित प्रक्षेपवक्र साओ पाउलो शहर में 1933 में समाजशास्त्र एवं राजनीति या समाज विज्ञानों में पहले स्नातक पाठ्यक्रमों की स्थापना के साथ आया। 1964 तक, देश के विभिन्न भागों में 19 अतिरिक्त पाठ्यक्रम स्थापित किए गये। इनके साथ साओ पाउलो में भी दो स्नातक पाठ्यक्रम प्रारंभ किये गये।

इस अवधि के दौरान, समाजशास्त्रीय उत्पादन उभार पर था। इसके साथ ही विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र की रक्षा भी उभार पर थी; यद्यपि शोध अभी भी साओ पाउलो तक ही सीमित था। सैन्य तानाशाही और वैज्ञानिक एवं तकनीकी स्वायत्तता के बारे में उनकी चिंता ने अनजाने में समाजशास्त्र और समाज विज्ञानों के विस्तार में योगदान दिया। शोध एवं स्नातकोत्तर प्रणाली की संरचना ने देश भर में स्नातक और स्नातक शिक्षा के विस्तार को अग्रेषित किया जिसने 1970 के दशक में समाज विज्ञानों के संघों एवं सम्मेलनों के उद्भव और वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसारको सक्षम बनाया। CAPES (स्नातक पाठ्यक्रमों में स्नातक शिक्षा के समर्थन एवं मूल्यांकन हेतु ब्राजीली फेडरल एजेंसी) द्वारा लागू की गई मूल्यांकन प्रणाली, सरकारी विश्वविद्यालयों में शिक्षण के लिए डॉक्टरेट की डिग्री की आवश्यकता की स्थापना, और शोध अध्ययन तक पहुँचने राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों का निर्माण किया।

लोकतांत्रिकरण के बाद इस विस्तार को समाजशास्त्र को एक विषय और शोध के एक क्षेत्र के रूप में समेकित करने वाली प्रोत्साहन नीतियों में वृद्धि के द्वारा बढ़ावा मिला। इस विस्तार के साथ अंतरराष्ट्रीयकरण हुआ जिसमें ब्राजीली समाजशास्त्र ने दुनिया भर में अलग पहचान बनाई। 2006 से प्रारंभ हो, यह विषय हाई स्कूल में अनिवार्य किया गया जिससे समाजशास्त्रियों के लिए श्रम बाजार का विस्तार हुआ। इस बात पर जोर देना महत्वपूर्ण है कि यह श्रम बाजार अधिकांशतः उच्चत्तर एवं उच्च–विद्यालय शिक्षा में पाया जाता है। अन्य क्षेत्रों में यह लगभग अदृश्य है चूँकि अधिकांशतः समाजशास्त्री सरकारी संस्थानों, गैर सरकारी संगठनों एवं निजी कंपनियों में सामाजिक एवं नियोजन तकनीकी कर्मी के रूप में कार्यरत हैं। ये वह कार्य है जो अन्य मानविकी विषयों के स्नातकों के साथ साझा किए जाते हैं।

ये उपलब्धियाँ, हालांकि, 2016 के तथाकथित संसदीय तख्तापलट के बाद से खतरे में आई हैं।समाजशास्त्र उन शासकों के लिए एक निशाना बन गया है जो इसकी उपादेयता एवं प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाते हैं चाहे विश्वविद्यालय या हाईस्कूल में, शोध निधियन तक पहुँच में और कई अन्य में हो। हाल ही में, समाजशास्त्र पर एक अस्पष्ट "सांस्कृतिक मार्क्सवाद" के प्रवचन का आरोप लगाया जो ब्राजीली परिवारों को धमकी देगा।

ये हमले चिंताजनक परिणामों के साथ बढ़ रहे हैं और समाजशास्त्र एकमात्र टार्गेट नहीं है। 2017 में, एक अविचारित हाई–स्कूल सुधार के क्रम में दर्शनशास्त्र के साथ समाजशास्त्र को एक वैकल्पिक विषय के रूप में पदावनत किया गया। 2019 में पद संभालने वाली चरम दक्षिणपंथी सरकार ने इन दो विषयों पर यह तर्क देते हुए हमला किया कि सरकारी विश्वविद्यालय को "उपयोगी" या अन्य शब्दों

>>

सूर्यास्त पर पोर्टो एलेग्रे। फेलिये वइदुगा द्वारा फोटो। कुछ अधिकार सुरक्षित

में पशु चिकित्सा जैसे व्यवहारिक पाठ्यक्रमों को प्राथमिकता देनी चाहिए और समाजशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र के अध्ययन में इच्छुक लोगों को निजी विश्वविद्यालयो में पढ़ना चाहिए और यह कहते हुए कि वे सरकारी विश्वविद्यालय जहाँ समाजशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र के पूर्व स्नातक पाठ्यक्रमों और स्नातक पाठ्यक्रम सकेंद्रित हैं, फिजूल खर्च है और राजनैतिक विरोध के प्रतिरोध का एक ठिकाना हैं, हमले और आगे बढ़ गये हैं ।

अन्य समाजविज्ञान पेशेवरों जैसे ब्राजील एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन (एबीए), द ब्राजीलियन एसोसिएशन ऑफ पॉलिटिकल साइंस (एबीसीपी) और ब्राजीलियन सोसायटी फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस (एसबीपीसी) के साथ एस.बी.एस राजकोषीय समायोजन के नाम पर देश के सार्वजनिक संरचना को ढहाने वाली नीतियों का विरोध करने वाले प्रयासों में शामिल हो गये हैं। 1990 के दशक के बाद से अन्य के मध्य जिन देशों में यह नीतियाँ लागू की गई जैसे 2000 में अर्जेंटीना में या 2010 में ग्रीस में, इन नीतियों के परिणामस्वरूप सामाजिक और राजनैतिक तबाही हुई है।

इस संदर्भ में,चौथी आई.एस.ए फोरम को ब्राजील में आयोजित करना न केवल समाजशास्त्रीय ज्ञान के लिए, बल्कि बर्बरता के खिलाफ ज्ञान की लड़ाई के लिए प्रतिरोध के एक अतिरिक्त स्थान का प्रतिनिधित्व करता है। इस तरह की बर्बरता संकीर्णतावादी धार्मिक कट्टरवाद, और एक अधिनायकवाद जिसमें गणतंत्र के संस्थानों की जटिलता है जिन्हें लोकतंत्र की रक्षा करनी थी लेकिन जिनमें इसके बारे में अधिक विश्वास नहीं है, के साथ आती है।

सभी का स्वागत है। स्वतंत्रता, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के लिए इस संघर्ष में हम आप पर भरोसा करते हैं। स्वतंत्रता के बिना, कोई समाजशास्त्र संभव नहीं है। ■

सभी पत्राचार जेकब कार्लोस लीमा को <jacobl@uol.com.br> पर प्रेषित करें।

> ब्राजीलियन समाजशास्त्र के भीतर :

एक संक्षिप्त मूल्यांकन

हर्मिलियो सान्तोस, पोंटिफिकल कैथोलिक यूनिवर्सिटी ऑफ रियो ग्रांडे डो सुल (पीयूसीआरएस), ब्राजील, चौथी आईएसए फोरम ऑफ सोशियोलोजी की स्थानीय आयोजन समिति (एलओसी) के अध्यक्ष और जीवनी एवं समाज पर आईएसए की शोध समिति (आरसी 38) के अध्यक्ष, **एंड्रे सलाता,** पीयूसीआरएस, ब्राजील एवं चौथी आईएसए फोरम ऑफ सोशियोलोजी की एलओसी के उपाध्यक्ष एवं **एमिल सोबोटका,** पीयूसीआरएस, ब्राजील और चौथे आईएसए फोरम ऑफ सोशियोलोजी की एलओसी के प्रोग्राम समन्वयक द्वारा

रियो ग्रांडे दो सुल का पोंटिफिकल कैथोलिक विश्वविद्यालय, चतुर्थ फोरम ऑफ सोशियोलोजी का आयोजन स्थल है। मारसेलो ट्रासेल/फ्लिकर द्वारा फोटो/ कुछ अधिकार सुरक्षित

ब्राजीली समाजशास्त्र की वर्तमान स्थिति विरोधाभासी है : एक तरफ संस्थागतकरण, उत्पादकता और विविधीकरण का उच्चस्तर; दूसरी तरफ, समाज के विकास के लिए विषय के योगदान और प्रासंगिकता को अवैध करने के सुस्पष्ट प्रयास, विशेषकर सरकारी अधिकारियों द्वारा। यह वह संवदेनशील संदर्भ है जिसमें ब्राजील पहली बार अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ (आईएसए) के एक बड़े कार्यक्रम की मेजबानी करेगा। यह है चौथी आईएसए फोरम ऑफ सोशियोलोजी जो 14–18 जुलाई 2020 को पोर्टो एलेग्रे की पांटिफिकल कैथोलिक यूनिवर्सिटी ऑफ रियो ग्रांडे डो सुल (पीयूसीआरएस) में आयोजित होगी। आईएसए के प्रति ब्राजीलियाई लोगों की प्रतिबद्वता नई नहीं है, और पिछले दशकों में यह लगातार बढ रही है। जैसा कि 1948 में इसकी स्थापना के पश्चात एसोसिएशन की अध्यक्षता करने वाले प्रथम और एकमात्र लैटिन अमरीकी, फर्नांडों >>

हेनरिक कार्डोसो की अध्यक्षता द्वारा यह प्रदर्शित होता है। इस जटिल पृष्ठभूमि के सम्मुख, स्थानीय समाजशास्त्रियों को संलग्न करने से फोरम और अधिक प्रांसगिकता हासिल करता है।

ब्राजीलियाई समाजशास्त्र दक्षता के विभिन्न क्षेत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय पहचान के प्रश्न को गढने के द्वारा प्रथम बार सामने आया। प्रजातीय एवं नस्लीय मुद्दों को विशेष रूप से स्थानीय आबादी : श्वेत यूरोपीय, गुलाम अश्वेत अफ्रीकी लोग और स्वदेशी मूल निवासी की विविध संरचना के परिणाम के रूप सम्बोधित किया गया। चाहे प्रजातीय.नस्लीय और आधुनिकीकरण के प्रश्न समाजशास्त्रीयों के मध्य चर्चा में हमेशा उपस्थित रहे, क्लासिकल लेखकों का प्रभाव और अनुभजन्य जांच के बढते सर्मथन ने पिछले दशकों में राष्ट्रीय समाजशास्त्र में विविधता लाने और विकसित करने मे मदद की हैं। सैन्य शासन (1964–1985) के तहत, जहां समाजशास्त्र के प्रोफेसरों की युवा पीढी को निर्वासन के लिए मजबूर किया गया, अप्रत्याशित रूप से समाजशास्त्र के कई स्नात्तकोत्तर पाठयक्रमों को प्रारम्भ किया गया और वैज्ञानिक पत्रिकाओं की परिकल्पना की गई एवं उन्हें सार्वजनिक किया गया।

सामाजिक असमानताओं की समस्या ने ब्राजील के अधिकांश समाजशास्त्रीयों का ध्यान एक केन्द्रीय मुददे के रूप में आकर्षित किया है। उदाहरण के लिए, गिल्बर्टोफ्रेयर, ब्राजील में समाजविज्ञानों के संस्थापकों में से एक, ने प्रश्न उठाया कि एक सामाजिक व्यवस्था के लिए यह कैसे संभव है कि वह समाज के गठन के बाद उसे चित्रित करने वाली असाधारण बैरभाव जैसा ब्राजील के समाज में,पर स्वयं को कैसे संतुलित कर सकती है। इसी तरह, फ्लोरेस्टन फर्नाडीस, जिनका योगदान अतुलनीय है, ने फर्नाडों हेनरिक कार्डोसो, उस समय उनका विद्यार्थी जैसे समाजशास्त्रीयों के साथ असमानता एवं स्तरीकरण के स्पष्ट रूप से पुरातन स्वरूप कैसे आधुनीकिकरण की प्रक्रियाओं से बच सकते है पर ठोस और विशालकाय शोध की। इन विषयों को दिया गया महत्वपूर्ण ध्यान, यह देखते हुए कि असमानता के उच्च और लगातार बने हुए स्तरों को ब्राजील के समाज की ऐतिहासिक रूप से स्थायी विशेषता माना जा सकता है, निःसंदेह उचित था।

1984 के बाद की लोकतांत्रिकरण की अवधि में नागरिकता एवं राजनैतिक भागीदारी के अधिकारों की मांग करने वाले सामाजिक आंदोलनों का विस्फोटन हुआ। लोकतंत्र और सामाजिक न्याय अंतरंग रूप से जुड़ गये। इन प्रसंगों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में अकसर सहभागीकर्त्ताओं के रूप में संलग्न समाजशास्त्रियों द्वारा विशेषकर आत्मसात किया गया। अतः यह आश्चर्यजनक नहीं है कि ब्राजीलियाई यथार्थ एक चौकस/सचेत समाजशास्त्रीय विश्लेषण की मांग करता है जो असमानताओं के उन सौम्य वृत्तांतों से परे जाता है जो बीसवीं सदी के दूसरे छमाही में प्रभावी/प्राधान्य पाठों की विशेषता थे। 2013 के विरोध प्रदर्शनों जैसी घटनाओं ने ज्यादातर सरकार की आर्थिक नीति के खिलाफ मोर्चा खोला और उसका अनुगमन करने वाले सभी राजनैतिक प्रदर्शन इंगित करते हैं कि ब्राजील का समाज कभी उसे वर्णित करने वाले विरोधाभासों के संतुलन से बहुत दूर है। वे समाजशास्त्रीयों को इस निरन्तर बदलती वास्तविकता को समझने की चुनौती देते हैं।

ब्राजील में सामाजिक यथार्थ को भी बहु–आयामी एवं परस्परछेदन दृष्टिकोण से ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए अधिकाधिक परिष्कृत विश्लेषणात्मक उपकरणों की मांग है। उदाहरण के लिए, ब्राजील के श्रम बाजार में अश्वेत अभी भी श्वेत से 40 प्रतिशत कम कमाते हैं एवं आनुभाविक शोध दर्शाता है कि आय लिंग, क्षेत्र, वर्ग और इत्यादि के साथ बदलती है। यह देखते हुए कि स्तरीकरण के भिन्न सिद्वांत किस प्रकार अंतःक्रिया करते हैं, ब्राजील समाज निःसंदेह आधुनिक समाज में असमानताओं की बढती जटिलताओं का विश्लेषण करने का एक दिलचस्प मामला है। ऐसे सामाजिक मुद्दों की अत्यावश्यकता पर्यावरणीय मुद्दों में ब्राजील के समाजशास्त्र की हालिया/नवीन रूचि से भी संबंधित हो सकती है।

आज कल व्यवहार में लिए जाने वाले वैश्विक समाजशास्त्र में, ब्राजील के समाज के सामने आने वाली भारी चुनौतियों की विश्व्यापी सामूहिक परियोजना के व्यापक यथार्थ के लिए एक हिस्से के रूप में जांच की जानी चाहिए। ऊपर वर्णित जैसे समान प्रश्न कई अन्य देशों में भी हाल ही में उजागर हुए हैं और हाल की राजनैतिक घटनाएं जैसे ऑक्युपाइ वॉलस्ट्रीट आंदोलन दिखाती हैं कि वर्तमान में समाज लोकतांत्रीकरण, भागीदारी, और असमानताओं के मुद्दों पर अधिक ध्यान आकर्षित कर रहा है। हमें इसमें कोई संदेह नहीं है कि ब्राजील का समाजशास्त्र इस बहस में बड़ा योगदान दे सकता है और यह कि हमारा यथार्थ इन अनुभवजन्य प्रश्नों के विश्लेषण के लिए एक बहुत ही उत्तेजक ढांचा प्रदान करता है।

देश के विभिन्न क्षेत्रों से युवा शोधकर्ताओं के छः आलेखों का वर्तमान चयन समाजशास्त्रीय क्षेत्र में चल रहे राष्ट्रीय वैज्ञानिक उत्पादन का एक नमूना है। यद्यपि यह एक सुविस्तृत संग्रह नहीं है, यह उपलब्ध कार्यो की गुणवत्ता और विषयगत, सैद्वांतिक और पद्वतिगत उपागमों की विविधता को इंगित करता है। ये और कई अन्य संलग्न समाजवैज्ञानिक ब्राजीलियन सोसाइटी ऑफ सोशियोलोजी (एसबीएस) एवं पीयूसीआरएस की साझेदारी में आयोजित आईएसए फोरम के दौरान होने वाले विमर्शो में भाग लेंगे। ■

सभी पत्राचार हर्मिलियो सान्तोस को <hermilio@pucrs.br>
एंड्रे सलाता को <andre.salata@pucrs.br>
एमिल सोबोटका को <esobottka@pucrs.br>
पर प्रेषित करें।

> संस्थागत बचपन के वृत्तांत

वेरिडियाना डोमिंगोस कोर्डेरो, साओ पाउलो विश्वविद्यालय, ब्राजील एवं जीवनी एवं समाज पर आईएसए की शोध समिति (आरसी 38) के सदस्य द्वारा

अव्यस्कों के लिए कृषि संस्थान, बटाटेस, साओ पाउलो राज्य, ब्राजील। श्रेय : वेरिदियाना डोमिंगोस कोर्डेरो

सैन्य तानाशाही (1964–1985) के दौरान ब्राजील ने न केवल राजनैतिक उत्पीड़न, नजरबंदी, यंत्रणा, सेंसरशिप और लोप हो जाने को बल्कि अधिकारविहिन एवं परित्यक्त बच्चों को नियंत्रित करने की अवपीड़क कार्यप्रणालियों को भी देखा। इसके लिए, सरकार ने नेशनल फांउडेशन फॉर माइनर्स वेलबीइंग (FUNABEM) बनाया जो शैशवकाल एवं युवाओं के बारे में सभी सार्वजनिक नीतियों के लिए जिम्मेदार था। FUNABEM ने पहले से मौजूद अनुशासनिक संस्थानों को शामिल किया और निर्धन बच्चों एवं किशोरों की नजरबंदी को तीव्र किया। एक टोटल संस्था में एकांत बचपन के बाद एक कलंकित व्यस्कता ने इन पूर्व निवासियों के जीवन को चिन्हित किया। कई दशकों बाद, उनमें से कुछ पुनः मिले और सोशल मीडिया और वार्षिक समारोह के माध्यम से एक रिश्तों का नेटवर्क बनाया ताकि वे ग्रामीण जीवन, संस्थागत अवपीड़न, भविष्य के बारे में अनिश्चितता, बाल श्रम, पुरूष सामाजीकरण एवं अनुशासन के पिछले अनुभवों को याद कर सकें।

हमने स्मृति के समाजशास्त्रीय सिद्वांतों को व्यक्त करने वाले सैद्वांतिक फ्रेमवर्क को अपनाया ताकि अनुशासनात्मक संस्थाओं के पूर्व कैदियों द्वारा समय और पहचान से निपटने हेतु स्थापित प्रक्रियात्मक स्मरक प्रथाओं की गतिशीलता को समझ सकें । चार वर्ष तक, हमने उनके बहु–आयामी अंतःक्रिया से आंकड़े संग्रह करे हैं ताकि हम स्मरण करने की प्रक्रियाओं को मन, सामाजिक सम्बन्धों एवं कलाकृतियों के साथ गूंथ कर सम्बंधात्मक जांच कर सकें। तथ्य संग्रह के तरीके गहन साक्षात्कार और पारम्परिक नृवंशविज्ञान से लेकर नेटनोग्राफी तक फैले थे। हमने कथाओं/वृत्तांतों के इस सेट पर व्याख्यात्मक कार्य किया जिसमें समय के बीतने को प्रक्रियात्मक रूप से से यह व्याख्या करने का प्रयास किया कि वे अपने पूर्व अनुभवों की समझ कैसे बनाते हैं।

हमनें निष्कर्ष निकाला कि समय का बीतना और उनकी अंतःक्रियाओं में परिवर्तन उस व्याख्या के निर्धारक हैं जिसे वे क्या है/थे को परिभाषित करने और वे अपने अतीत को कैसे समझते हैं के लिए काम में लेते हैं। उनके मध्य व्यापक स्तर पर स्वीकार किये गये आख्यानों ने घटनाओं की उनकी व्याख्या को चिकना चुपड़ा बनाया। आख्यान आमतौर पर कठिन घटनाओं को छिपाते हैं और इन घटनाओं को जीवन की उपलब्धियों से प्रेरित सर्वसमावेशी कथानक में एकीकृत करने के लिए नये अर्थ निकाले जाते हैं। उनके आख्यानों के साथ, तीन नकरात्मक तत्वों की सकारात्मक के रूप में व्याख्या की गई : माता–पिता द्वारा परित्याग को परोपकारिता के कार्य के रूप में;

>>

अव्यस्कों के लिए संस्थान को पूर्व आवासी पुनः देखते हुए।
श्रेय : वेरिदियाना डोमिंगोस कोर्डेरो

संस्थागत हिंसा को वैध मानना; और संस्थान के अंदर बलात् बाल श्रम को एक उद्वार करने वाले अनुभव के रूप में देखना।

एक स्मरणशील समुदाय में होना इस अर्थ में प्रमाणिकरण के नेटवर्क बनाता है कि कुछ व्याख्याएं दूसरों पर हावी होती हैं। अतीत से बनी इंद्रियां कमोबेश अभिसारी हो जाती हैं क्योंकि समय के साथ(यदि नेटवर्क के भीतर दूसरों द्वारा उसका पुष्टिकरण न हो) गैर समझ कमजोर हो जाती हैं, । यद्यपि आत्मकथात्मक आख्यान निजी स्मृतियों पर आधारित होते हैं, लेकिन एक समान लैंस के माध्यम से उन्हें समझने के प्रयासों ने पूर्व निवासियों को अपने वृत्तांतों को एक अतिव्यापी, सकारात्मक एवं एकीकृत जीवन–कथानक में समायोजित करने का नेतृत्व किया। इस जीवन कथा में कष्टों (कुछ का उल्लेखित जैसे परिवार का विलगन, संस्थागत हिंसा, एकान्त बचपन, और कलंकित जीवन) को एक सफल पथ की ओर कदम के रूप में प्रस्तुत किया गया हैं। संस्थान ने उन पर तानाशाह संस्थानों द्वारा प्रोत्साहित मूल्यों की छाप छोड़ी, विशेष रूप से अनुशासन द्वारा चरित्र निर्माण, जिसका अक्सर अर्थ था बिना पूछताछ के नियमों का पालन करना। इस स्मरणशील समुदाय के अंतर्गत एक समान आख्यान का निर्माण करने से अस्तित्वशील अतीत के साथ संबद्वता और दूसरों द्वारा उसकी स्वीकार्यता की भावना प्रदान की। ■

सभी पत्राचार वेरिडियाना डोमिंगोस कोर्डेरो को <veridiana@uchicago.edu> पर प्रेषित करें।

> ब्राजील में एक नीति क्षेत्र के रूप में सामाजिक सहायता

गुस्तावों कोंडे मार्गराइट्स, फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ रियो ग्रांडे डो सुल, ब्राजील द्वारा

1988 में ब्राजीलियाई संघीय संविधान के लागू होने की खुशी मनाते हुए।
श्रेयः एजोन्सिया ब्राजील/आर्काइव

आधुनिक ब्राजीलियाई राज्य की संरचना के बाद से, सामाजिक सहायता को अनियमित एवं अल्पराज्य भागीदारी के साथ प्रदान किया गया है। साथ ही, ब्राजील सरकार द्वारा सामाजिक सहायता कार्यों को सामाजिक सुरक्षा के माप के रूप में लागू किया गया था, जिसने इन दोनों क्षेत्रों के मध्य सीमाओं को धुंधला कर दिया था। मेरे पी.एचडी. शोध पर आधारित यह लेख, संस्थागत परिवर्तन का विश्लेषण करता है, जिसने सामाजिक अधिकारों की अवधारणा द्वारा निर्देशित नीति क्षेत्र में सामाजिक सहायता के परिवर्तन को सक्षम किया है। इस प्रकिया को दो विभिन्न चरणों में विभाजित किया जा सकता हैः पहला संघीय संविधान (1986–1988) का गठन और दूसरा, सामाजिक सहायता जैविक कानून (1991–1993) । इन प्रत्येक क्षणों में, विभिन्न सामूहिक कर्ताओं ने इस मुद्दें के बारे में राज्य द्वारा अपनाए गए ऐतिहासिक पैटर्न में बदलाव की वकालता की, जिसके परिणामस्वरूप एक नए नीति–क्षेत्र का गठन हुआ।

पहले चरण में, संस्थागत परिवर्तन में मुख्य योगदान सामाजिक सुरक्षा क्षेत्र से आया, जो कि ब्राजील में सामाजिक संरक्षण प्रणाली के पुनर्गठन के इच्छुक संघीय नौकरशाहों द्वारा गठित एक विशेषज्ञ समूह की भागीदारी के माध्यम से हुआ था। उनका लक्ष्य राज्य द्वारा गारंटीकृत नागरिकों के अधिकार के रूप में सामाजिक सुरक्षा की धारणा पर आधारित एक नई प्रणाली तैयार करना था। उनकी धारणा यह थी कि नए प्रस्ताव मे सामाजिक सहायता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी जो यह सुनिश्चित करेगी कि सामाजिक सुरक्षा के दायरे से बाहर के नागरिक अन्य प्रकार की सामाजिक सुरक्षा से संरक्षित होंगें।

दूसरे चरण में सामाजिक कार्य के शैक्षणिक और व्यावसायिक क्षेत्र से पेशेवरों और विशेषज्ञों द्वारा गठित एक समूह को शामिल करना लक्षित था। संघीय संविधान की घोषणा तक, ये पेशेवर इस प्रकिया में शामिल नहीं थे। अकादमिक क्षेत्र और सामाजिक कार्य क्षेत्रों से कर्ताओं के क्रमिक एकीकरण को एक सैद्धांतिक परिवर्तन द्वारा समझाया गया है, जिसने इन क्षेत्रों के व्यक्तियों द्वारा राज्य के साथ उनके संबंधों को देखने के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन किया है। लंबे अरसे तक, मार्क्सवाद के संरचनात्मक दृष्टिकोण द्वारा प्रसारित विचार कि राज्य की क्रियाऐं बुर्जुआ समाज के उत्पादन के साधन है, पहले से मौजूद थे। यह सैद्धांतिक समझ 1980 के दशक के उत्तरार्ध में ढीली पड़नी शुरू हुई, जब ग्राम्सीवादी परिपेक्ष्य को मजबूती मिली, जिसने राज्य को प्राधान्य विरोधी (काउंटर–हेजेमोनिक)संघर्ष के लिए एक स्थान के रूप में देखा। इस पुनर्निर्देशन ने सार्वजनिक नीतियों और सामाजिक कार्यो से संबंधित क्षेत्र मे पेंशेवरों और शोधकर्त्ताओं के तरीकों को बदल दिया, जिसे पहले वे एक सतर्क दृष्टि से देखते थे। इस सैद्धांतिक फ्रेमवर्क परिवर्तन के परिणामस्वरूप, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्य पेशेवरों ने विभिन्न नीति क्षेत्रों के रूप में सामाजिक सहायता और सामाजिक सुरक्षा के पृथक करने के लिए मुख्य समर्थक समूह की रचना की।

शोध के परिणाम बताते हैं कि ब्राजील में नीति क्षेत्र के रूप में सामाजिक सहायता का गठन केवल ब्राजील की सामाजिक नीतियों की गतिशीलता के लिए बाहरी कारकों के संयोजन के कारण ही संभव था, जैसे सैन्य तानाशाही का अंत और एक नए लोकतांत्रिक व्यवस्था का निर्माण तथा सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक कार्य जैसे क्षेत्रों से संबंधित समूहों की कार्यवाही। ■

सभी पत्राचार गुस्ताव कोंडे मार्गारिटेज को <gustavo.margarites@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> पोर्टो एलग्रे में शहरी आवास के लिये महिलाओं का संघर्ष

प्रिसिला सुसिन, पोंटीफिकल कैथोलिक यूनिवर्सिटी ऑफ रियो ग्रेंडो दो सुल, ब्राजील द्वारा

पोर्टो एलेग्रे के केन्द्र में अधिकांश महिलाओं द्वारा प्रबंधित एक अनाधिकृत इमारत की छत पर देखते हुए प्रिसिला सुसिन, 2019।
श्रेय : प्रिसिला सुसिन

ब्राजील के प्रमुख शहरों में आवासों की कमी गरीब आबादी के महत्वपूर्ण हिस्सों को प्रभावित करती है, जिसमें अश्वेत महिलाओं पर अधिक प्रभाव पड़ता है। शहरी क्षेत्रों में आवासीय सामाजिक आंदोलनों (स्क्वाटिंग आंदोलनों) के उदय ने 1980 के दशक से नये राजनीतिक प्रदर्शनों को जन्म दिया है, जिसने शहरी केंद्रों की परित्यक्त इमारतों पर कब्जा करके बिना किसी सामाजिक प्रकार्य वाली संपत्तियों की बडी संख्या को उजागर किया है। विशेष रूप से, इन स्थानों पर रहने वालों में महिलायें अधिक हैं, यह उस बहुआयामी पृथक्करण की ओर इंगित करता है जो वे मानक तथा रोजमर्रा के जीवन में अनुभव करती हैं। मेरे पीएचडी शोध कार्य का उददेश्य इन महिलाओं के साथ अस्थायी तौर पर जमीनी बातचीत को स्थापित करना है, जो उनके राजनीतिक लामबंद समूहों में संलग्न होने और अनाधिकृत इमारतों में रहने के पहले और बाद के आवास के लिये उनके संघर्षों में रहे अनुभवों को समझने और उनकी व्याख्या करने की कोशिश करना है।

> व्याख्यात्मक और जीवनसंबंधी दृष्टिकोण

2015 से 2018 के बीच पोर्टो एलग्रे, रियो ग्रेंडो दो सुल की राजधानी में क्षेत्रीय अनुसंधान किये गये। सिंक्रोनिक और डायाक्रोनिक बायोग्राफिक आंकडों को देखते हुये, शहरी केंद्र की दो अनाधिकृत इमारतों में रहने वाली महिलाओं के साथ सहभागी अवलोकन और जीवनसंबंधी साक्षात्कार आयोजित किये गये। आनुभाविक कार्य में राजनीतिक और दैनिक दिनचर्या की निरंतर समझ को बनाये रखने के

>>

पोर्टो एलेग्रे के सिटी सेण्टर में एक अनाधिकृत इमारत की दीवार पर ''सिटी सेन्टर लोगों के लिए है'' कहती हुई ग्रैफिटी, 2018।
श्रेय : प्रिसिला सुसिन

लिये सामाजिक आंदोलन के लिये लगभग साप्ताहिक प्रतिबद्धता शामिल थी।

प्रयुक्त कार्यप्रणाली को ज्ञानमीमांसीय रूप से एलफ्रेड शुटज के समाजशास्त्र से समर्थन प्राप्त था, प्रमुख रूप से "प्रासंगिकता प्रणाली" की उनकी अवधारणा और अच्छी तरह से व्यक्त धारणाओं के समुच्चय (बर्जर और लकमैन पर भी आधारित) जो इसके बारे में था कि वास्तविकता के सांसारिक सामाजिक निर्माण की विशिष्टता तक पहुंच कैसे संभव है। गेब्रियल रोसेन्थल के द्वारा विकसित की गयी जीवनी पद्धति ने सामाजिक और ऐतिहासिक रूप से दिये गये ढांचों के साथ संवाद में साक्षात्कार वाली 23 महिलाओं के जीवनी संबंधी अनुभवों को पुनसंगठित करने के लिये व्यवहारिक उपकरण प्रदान किये ।

> "पारंपरिक" और "राजनीतिकरण" प्रतीकात्मक क्षेत्रों के मध्य

प्रमुख निष्कर्षों के बीच, इन अध्ययनों में पद्धतिगत सीमाओं में से कुछ के समाधान के एक रूप में अनुभवजन्य ग्राउंडेड परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करते हुये, आवास और लिंग के बीच की समस्या की अन्तरानुभागीय स्वीकृति को स्वीकार किया गया। साक्षात्कारदाताओं की "प्रासंगिकता प्रणाली" के पुर्ननिर्माण ने बाधाओं, प्रतिरोध, और मुकाबलों के तत्वों को पकडना संभव बना दिया जो कि पूर्वकल्पित विश्लेषणात्मक श्रेणियों में आमतौर पर उपलब्ध नहीं होती है।

रोजमर्रा की जिंदगी में पदानुक्रमित संस्कृति को संबोधित करते हुये, यह पाया गया कि सामाजिक आंदोंलनों के संगठन की प्रकृति "संघर्ष" प्रक्रियाओं में महिलाओं के समान राजनीतिक भागीदारी की संभावनाओं को कम कर सकती है। नये राजनीतिक प्रदर्शनों का चल रहा विकास, हालांकि, हाल के टकरावों और क्षेत्रीय कार्य के दौरान अवलोकित लिंग संबंधों के परंपरागत नियामक सिद्धांतों में परिवर्तनों से मूल रूप से जुडा हुआ है।

"पारंपरिक" और "राजनीति" रूप से प्रतीकात्मक क्षेत्रों की परस्पर व्याप्त अव्यक्त व्याख्यात्मकता जीवनी संबंधी विश्लेषणों के दौरान बहुधा मौजूद भी थी। शहरी अवैधता के कगार पर रहने को उचित सिद्ध करने के लिये, साक्षात्कार दाताओं ने अपेक्षित लिंग भूमिकाओं (मातृत्व और घरेलू कार्य) का पालन और उभरती राजनीतिक समझ (पर्याप्त आवास और शहर तक पहुंच को अधिकारों की तरह) शामिल करने के मध्य आवर्ती संघर्षों को प्रकाश में लाये। स्वयं प्रस्तुति के दोनों प्रकार के संसाधन नैतिक पूंजी उत्पन्न करते हुये पाये गये, हालांकि पहला अधिकतर बाहय और व्यापक रूप से वैध वर्ग मूल्यों से जुडा है, और दूसरा संघर्षों की आंतरिक राजनीति से, जिसके परिणामस्वरूप आवास संघर्ष को एक "साधन" और एक "साध्य" के रूप में संभावित सामान्यीकरण होता है। ■

सभी पत्राचार प्रिसिला सुसिन को <pri.qsusin@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> रेसिफे, ब्राजील में हिंसा का अनौपचारिक शासन

रिकार्डो कालडस केवालकांती, परनेमबूको संघीय विश्वविद्यालय, रेसिफे, ब्राजील एवं लेटिन अमेरिकन समाजशास्त्रीय संघ (ALAS) के सदस्य द्वारा

रेसिफ, ब्राजील, 2019। श्रेयः रिकार्डो कल्दास कैवलकांती।

लेटिन अमेरिका के बेदखल प्रदेशों में, हिंसा के शासन (औपचारिक एवं अनौपचारिक) नियमन का मुद्दा कई वर्षों से समाजशास्त्रीय विषय रहा है। यह अध्ययन, जो मेरे स्नातकोत्तर शोध प्रबंध का विषय था, को इस उद्देश्य के साथ विकसित किया गया कि रेसिफे के दक्षिण भाग में एक समुदाय में किस प्रकार राज्य संस्थानों की मध्यस्थता के बिना हिंसा नियमित होती है की समझ विकसित हो और उस का विश्लेषण किया जाए। व्यवहारिक रूप से, हिंसा का राज्य–विहिन नियमन का अर्थ स्थानीय कर्ताओं के मध्य समझौते का होना है, जो उनको समझ एवं संकल्प (राज्य के बाहर एवं विरोध में) को उत्पन्न करने की अनुमति देता हैं।

अध्ययन की केन्द्रीय परिकल्पना यह है कि ब्राजील के संदर्भ में पुलिस संगठनों का प्रदर्शन एवं आपराधिक न्याय व्यवस्था में वैधता का अभाव, हिंसा के शासन के वैकल्पिक स्वरूपों के निर्माण की मांग को पैदा करता है। दूसरे अन्य चर जिनकी गतिशीलता प्रत्यक्ष रूप से स्थानीय हिंसा के नियंत्रण को प्रभावित करती है, वह हैं ड्रग बाजार की कार्यप्रणाली जिनका विखंडन, एकाधिकार नियामक रीतियों के समेकन को प्रतिबंधित करता है एवं स्थानीय कर्ताओं के अनौपचारिक नेटवर्क को अस्तित्व जो मानव हत्या के आंकड़ों को प्रभावित करने में सक्षम हो।इस शोध में नियोजित डाटा संकलन की पद्वतियां एथनॉग्राफी (मै रेसिफे की कम–आय समुदाय में पांच महीने तक रहा), दर्जन भर औपचारिक एवं अनौपचारिक अद्व–संरचित साक्षात्कार एवं अ–सहभागी अवलोकन थी ।

इस शोध के केन्द्रीय परिणाम ने मुझे यह तर्क देने के लिये प्रेरित किया कि सेना पुलिस (पीएम) का समुदाय में काम करने का तरीका, व्यवस्थापालन के वैकल्पिक तरीकों को ढूंढने का एक अहम तंत्र है। समुदाय में, सेना पुलिस बहुत कम जवाबदेही के साथ कार्य करती है। अप्रत्याशित क्रियाओं के द्वारा वह अपनी दिनचर्या को बदलती है, जो नियमों में बल का असमानुपात प्रयोग एवं निवासियों के लिये बाधाओं को कम करने में अपने रूटीन को बदलती है। जहां तक न्याय व्यवस्था का प्रश्न है, यह न्यून वैधता और संघर्षों की मध्यस्थता करने में कम प्रभावशील हैं।

संभवतः इस शोध की सबसे प्रासंगिक खोज है कि समुदाय के हिंसा के नियमन का पैटर्न, स्थानीय निवासियों में वैधता का साक्षेप स्टॉक के साथ स्थानीय कर्ताओं के द्वारा नियंत्रित होता है। यह ऐसी प्रक्रिया है, जहां नियमानुसार कोई तय सामाजिक क्रिया या भूमिका नहीं है, उदाहरणस्वरूप माफिया केस में (गेमबीटा 1993) प्रीमिरो कोमान्डो डा कैपिटल (पीसीसी) (फेलट्रेन 2010)। स्थानीय गैंग की भी कोई भूमिका नहीं है, जैसा कि बोरगोइस (2003) एंव वैकटेरा (2009) के केस के शोध में पाया गया।

हालांकि यह क्रियाएँ हिंसक वृतांत की संख्या को कम करके दूर तक चलने वाले परिवर्तन को बढावा नहीं देती हैं पर वे एक प्रत्यक्ष कार्यक्षमता को प्रदर्शित करती है। इस प्रकार की क्रियाएँ, हिंसा पर पुलिस क्रिया से अधिक वैधानिक तरीके से ज्यादा नियंत्रण कर सकती है। यह एक स्थायी तंत्र के रूप में विवाद कम करने के बजाय ये एक सोचे समझे तंत्र के समान संघर्ष का शमन करने का कार्य कर सकती हैं। यह तथ्य कि नियामक के नायक अधिकतर विचारशील तरीके से किया करते हैए उनकी क्रियाओं अधिकतर स्थानीय निवासियों को दिखाती नहीं है। इस प्रकार, ऐसी पहल क्रिया का प्रारूप नहीं बनती हैं जिसकी पालना ने अधिक सहयोगियों को जोड़ा, इस प्रकार उनको हिंसा नियमन के क्षेत्र में मांगों को पूरा करने के व्यवहारिक तरीके के बनने से बचाते हुये। ■

References

Bourgois, P. (2003)*In search of respect: Selling crack in El Barrio*. Cambridge: Cambridge University Press.

Feltran, G. (2010) Crime e castigo na cidade: os repertórios da justiça e a questão do homicídio nas periferias de São Paulo. *Caderno CRH* 23(58).

Gambetta, D. (1993) *The Sicilian Mafia. The Business of Private Protection*. Cambridge: Harvard University Press.

Venkatesh, S. (2009) *Gang leader for a day*. London: Penguin UK.

सभी पत्राचार रिकार्डो कालडस केवलकांती को <ricardocaldas13@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> ब्राजील में पेशेवर असमानताएं

लूकास परेरा वान डेर मास, मिनास गेरैस संघीय विश्वविद्यालय (यूएफएमजी), ब्राजील के द्वारा

ब्राजील में पेशवर सीढी चढना और उच्च योग्यता प्राप्त करना किसी को श्रम बाजार पर स्पष्ट लाभ नहीं देता है।

देश में उच्च शिक्षा के विस्तार एवं लोकतांत्रीकरण के कारण, ब्राजील की पेशेवर दुनिया बदल गयी है। 2000 एवं 2010 के मध्य में विश्वविद्यालयीय योग्यताओं वाली आबादी दोगुनी से अधिक हो गयी। इनमें वे लोग भी शामिल थे – जिनकी पारंपरिक रूप से उच्च शिक्षा में कम भागीदारी थी, विशेष रूप से महिलाएँ, स्वयं को अश्वेत एवं भूरे वर्ण के रूप में पहचानने वाले लोग एवं कम–आय वाले लोग।

जहां उच्च–आय देशों में विश्वविद्यालय तक पहुंच 1960 के दशक में प्रारम्भ हो नेट स्कूलिंग रेट की 50 फीसदी से अधिक पहुंच गई, ब्राजील में यह 1980 के दशक में ही प्रारंभ हुई। 2000 एवं 2010 के मध्य, उच्च शिक्षा के पात्र 18 से 24 वर्श के युवाओं का अनुपात 28.4 फीसदी से 48.5 फीसदी बढ गया। यद्यपि, उच्च शिक्षा को प्रभावी रूप से प्राप्त करने वाले लोगों का अनुपात 9.1 फीसदी से 18.4 फीसदी के

>>

मध्य रहा। नेट स्कूलिंग रेट 7.4 फीसदी से 14 फीसदी बढ गई। यह दर अभी भी लेटिन अमेरिका के कुछ देश जैसे चिली एवं अर्जेन्टीना के मुकाबले कम है, जिनकी दर 2010 में 30 प्रतिशत से अधिक थी।

इसके अतिरिक्त, श्रम बाजार में विश्वविद्यालय–शिक्षित पेशेवरों के प्रवेश को संगत मांग का साथ नहीं मिला। अब योग्यता फुलाव का परिदृश्य है, अर्थात उच्च शिक्षा की मांग, श्रम बाजार में पेशेवरों का अपर्याप्त अवशोषण, पेशेवर पदों के लिए बढती प्रतिस्पर्धा और योग्यताओं का आर्थिक अवमूल्यन का मिश्रण। योग्यता फुलाव केवल मांग एवं आपूर्ति के मध्य असंतुलन से ही संबंधित नहीं है बल्कि यह योग्यताओं जिनका सामाजिक वितरण के तंत्र के रूप में अवमूल्यन किया गया द्वारा लाभ उठाने की समाज की क्षमता में गिरावट से सम्बंधित है।

मेरे पीएचडी शोध का लक्ष्य यह समझना था कि पेशेवर समूहों के सामाजिक आधार के विस्तार और इसके साथ ही योग्यताओं के अवमूल्यन ने किस प्रकार पेशेवरवाद पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रियाओं को प्रभावित किया, विशेष तौर पर मध्यम वर्ग से जड़े पदो के अर्जन और सरंक्षण के संदर्भ में। मेरा अध्ययन स्वास्थ्य क्षेत्र के दो व्यवसायों– चिकित्सा एवं नर्सिंग के प्रक्षेप पथ पर केन्द्रित था। मैनें 1991 एवं 2010 के मध्य इन पेशों के मध्य एवं अंतर–पेशेवर असामनताओं का अनुभवजन्य विश्लेषण किया।

सार्वजनिक स्त्रोतों से प्राप्त जनसांख्यिकी, उच्च शिक्षा एवं श्रम बाजार के आंकड़ों के साथ 217 चिकित्सकों एवं 222 नर्सेस के निर्देशन समूह से ऑनलाइन सर्वेक्षण कर प्राथमिक तथ्य एकत्र किये गये। बहुल पत्राचार एवं क्लस्टर विश्लेशण द्वारा प्रक्षेप वक्रों का निर्माण किया गया। इनका लक्ष्य पेशेवर क्षेत्र को उन चरों के इर्द–गिर्द आनुभविक रूप से व्यवस्थित करना था जो पेशेवर प्रशिक्षण द्वारा मूल परिवार से व्यवसाय–प्रविश्टि के भिन्न व्यक्तिगत मार्गो का वर्णन करते है। विश्लेषण ने पेशेवर जगह की उसके अभिकरणों के स्थापन, विभाजन और विस्थापन की दृश्टि से व्याख्या करने की अनुमति दी।

कम से कम चार निष्कर्षों को सूचीबद्ध करना चाहिए : (i) 1991 एवं 2010 के मध्य उच्च शिक्षा में रिक्त पदों में वृधि के कारण डिप्लोमा एवं स्नातकों में उल्लेखनीय वृद्वि रूप से बढना (ii) नियुक्तियों के सामाजिक आधार का विस्तार विशेषकर महिलाओं, कम आय वाले विद्यार्थी और अश्वेत और भूरे रंग के रूप में स्वयं की पहचान करने वालों में, (iii) पेशेवर बाजारों में वेतनभोगी पदों के लिए बढती प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में मध्यम वर्ग के भीतर योग्यताओं का ह्रास और (iv) पूर्व–स्नातक आबादी में क्षैतिज पदानुक्रम में वृद्वि जिससे महिलाओं, अश्वेत और भूरे लोगों, युवाओं एवं कम प्रतिश्ठित व्यवसायों के सदस्यों को क्षति होती है।

चयनित प्रक्षेप वक्रों (यद्यपि सिर्फ वे ही संभव नहीं) ने पेशेवर क्षेत्र में प्रमुख पदों तक पहुंचने में परिवार की विरासत और उच्च शिक्षा मार्गों के महत्व का प्रदर्शन किया। स्नातक की अवधि और पेशेवर की आयु ने भी अन्तर–एवं अंतरा पेशेवर विभेदन में योगदान दिया। लैंगिक विभाजन भी भूमिका निभाता है, चूंकि महिलाओं की भागीदारी कम पूंजीकृत प्रक्षेपवक्रों में उच्च है। अंतर और अंतरा पेशेवर क्षेत्र के अंतर्गत असमानताओं को पुनः उत्पादित और सुदृढ दोनों करते है। ये अंतर उत्तरदाताओं के वर्ग बोध में भी व्यक्त किये गये हैं।

संक्षेप में, 1991 एवं 2010 के मध्य ब्राजील में पेशेवरवाद के प्रति खुलेपन ने पेशेवर क्षेत्र को पुनः परिभाषित किया है। यह कम पूंजीकृत और अधिक असमान हो गया है। फिर भी, इसकी आंतरिक संरचना अंतर और अंतरा– पेशेवर विभाजनों के संदर्भ में नहीं बदली है। पेशेवरवाद को उच्च पदों के पुनः उत्पादन के तंत्र के रूप में बनाया रखा हुआ है, यद्यपि सामाजिक आरोहण की चाल में विस्तार हुआ है। ■

सभी पत्राचार लुकास परेरा वॉन डेर मास को <lucaswander@hotmail.com> पर प्रेषित करें।

> रियो डी जेनरियो के मध्यम वर्ग के प्रक्षेप पथ

इजाबेल वीइरा, पीपीसीआईएस/यूईआरजे (रियो डी जनेरियो राज्य विश्वविद्यालय), ब्राजील द्वारा

अर्बु द्वारा चित्रण

>>

सन् 2000 में ब्राजील ने एक अनुकूल आर्थिक क्षण का अनुभव किया, जब जनता ने आय एवं उपभोगता स्तर में वृद्वि को अनुभव किया। 2014 में, देश में एक गंभीर राजनीतिक एंव आर्थिक संकट आया। रोजगार कमी एवं मुद्रा के अवमूल्यन के द्वारा इसका अनुभव किया गया।

मध्यम वर्ग के जीवन पर सामाजिक गतिकी की प्रक्रिया एवं हाल के संकट के प्रभावों को समझने के उद्देश्य से एक गुणात्मक शोध अध्ययन कराया गया। इस शोध में सहभागी अवलोकन एवं रियो डी जनेरियो के पेचिंचा क्षेत्र के 28 आवासियों का गहन वैयक्तिक साक्षात्कार किया गया।

शोध के सहभागी स्वयं को सामाजिक संरचना के मध्यवर्ती स्तर के रूप में पहचानते है, जिसे अक्सर ''मध्यम वर्ग'' या अन्य संबंधित संदर्भों के रूप में कहा जाता है।

उत्तरदाता स्वयं के उतार–चढाव की प्रक्रिया को पहचानते हैं। जैसा कि ईगोर (42, चालक) ने बताया : ''देखिये, मैं माध्यमिक पाठशाला में गया हूँ। और मैं नहीं कहता कि मैं शीर्ष पर रहा परन्तु लगभग वहीं, परंतु आज मैं सबसे निम्न स्तर पर हूँ।'' सामान्य धारणा यह है कि उछाल की अवधि कपोल कल्पित थी क्योंकि उसका कोई ठोस राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक आधार नहीं था।

अधिरोहण वर्षों में, जैसा कि जिस समूह का अध्ययन किया गया से प्रतिबिंबित हुआ, कि उपभोग के आयाम, सामाजिक विभेदीकरण की प्रक्रिया के इंजन थे। आर्थिक संकट का सामना करते हुए आजकल, उनको उपभोग पैटर्न को कम करने की आवश्यकता है जिससे कि वस्तु अब एक असंतोषी प्रतीकात्मक सीमांत बन गई है : ''उपभोग वस्तुओं ने एक अनुचित परिदृश्य दिया है कि व्यक्ति अपने जीवन में बढ गया है'' (आर्थर, 46, एयर फोर्स मिलिट्री); ''मुझे लगता है कि मध्यम वर्ग काफी कुछ विज्ञापन के बारे में है। यह भ्रमण को प्रोत्साहित करता है, परंतु यदि आप एक बार भ्रमण करते है, आप अपनी सच्चाई में वापस आते है (हंसते हुये) (गिल्मर, 64, विक्रेता)

उत्तदाताओं ने यह रिपोर्ट किया कि उनके परिवारों में अभिभावकों की उच्च अपेक्षाएं होती हैं कि उनके बच्चे उनसे ज्यादा पढ लिख जाये। ये अभिभावक अपने बच्चों को निजी संस्थाओं में प्राथमिक एवं हाई स्कूल में पढाने के लिए वास्तव में ''त्याग'' करते हैं। सरकारी विद्यालयों को नकारने के मुख्य कारकों में से एक मूल्यों और व्यवहारों का हस्तांतरण है : (...) यह ऐसी भिन्न शिक्षा के अन्य बच्चों के साथ रहने की बात है, है ना?! यह सबसे बड़ी चिंता है' (इल्जा, 47, बेरोजगार, सुरक्षा)।

उत्तरदाता अपनी सामाजिक प्रस्थिति को बनाये रखने में काफी असुरक्षित महसूस करते है, एवं इस संदर्भ में निजी विद्यालय, वर्ग समाहिता का प्रतीक एवं साधन है : ''यह हो सकता है कि मेरे बच्चे को सरकारी स्कूल में पढाने की आवश्यकता पड़े एवं मैं स्वयं को पहले ही अन्य वर्ग में देखने लगूंगी। यह बहुत अजीब होगा।'' (लारा, 42, बेरोजगार, सुरक्षित)

चूंकि उनके पास कोई संचित धन नहीं है, मध्यम वर्ग के पास सिर्फ ज्ञान एवं कार्य कौशल है। इन ''पूंजियों''की प्रत्येक पीढी में नवनीकरण करने की आवश्यकता है, जिसके लिये प्रयास एवं प्रतिबद्वता की आवश्यकता होती है। विकट परिस्थिति के इस वर्तमान दौर के संदर्भ में, अपने सुधार के क्षितिज को न देख पाने के कारण यह मध्यम वर्ग सामाजिक आरोहण के लिये अपने बच्चों को गांरटी मानता है। ■

सभी पत्राचार इजाबेल वीइरा को <representar.mg@hotmail.com> पर प्रेषित करें।

> मित्तव्यत्तता :

स्वास्थ्य सेवा में सार्वभौमिकता से समझौता?

मारियो पेतमेसिदाउ, डेमोक्रिटस यूनिवर्सिटी ऑफ यूनिवर्सिटी ऑफ थ्रेस, ग्रीस,
एना गुइलेन, यूनिवर्सिटी ऑफ ओविएडो, स्पेन, **एमेन्यूले पावोलिनी,** यूनिवर्सिटी ऑफ मेसरटा, इटली द्वारा

सामूहिक रूप से प्रदान की जाने वाली सेवाओं के क्षेत्र में कोई भी परिवर्तन और उनके लिए पात्रता स्थापित करने वाली स्थितियाँ सार्वभौमिकता और एकजुटता के अंतर्निहित स्वरूपों में काफी परिवर्तन ला सकती हैं। 1970 के दशक के अंत से लेकर 1980 तक इटली, स्पेन, पुर्तगाल और ग्रीस जैसे देशों में सार्वभौमिक स्वास्थ्य प्रणाली थी। लेकिन बाद में दो देश सार्वभौमिकता के 'अधूरेपन' से बाहर आए हैं, सेवाओं में असमानताओं को यथास्थिति में रखने वाला मिश्रित प्रकार का संरक्षण वर्तमान तक बना रहा है। यह विभिन्न तरह के सामाजिक समूहों और ऑउट–ऑफ–पॉकेट के उच्च खर्च के लिए इन्हें सामाजिक स्वास्थ्य बीमा कवरेज के साथ एक राष्ट्रीय प्रणाली से जोड़ती है। ग्रीस में वितीय संकट ने लम्बे समय तक चारों स्वास्थ्य प्रणालियों पर व्यापक असर डाला।

क्या इस संकट और मित्तव्यत्तता ने इन चारों स्वास्थ्य प्रणालियों के समूह को सार्वभौमिकता के पथ पर रुपांतरित करने की सीमा और अंतर्वस्तु को निर्धारित किया है ?इसका संक्षिप्त उतर है कि अब तक के साक्ष्य इस दिशा की तरफ स्पष्टता से कोई इशारा नहीं करते हैं। पिछले दशक में, इन चारों देशों में नीतियों की एक समान व्यूह–रचना लागू की गई, जैसे कि लागत के साझाकरण में वृद्धि (अधिकांश फार्मास्यूटिकल्स के लिए), प्रावधानों की सीमाओं में परिवर्तन और भौतिक एवं मानवीय संसाधनों में कटौती की गई। हालांकि इन कार्यवाहियों से चारों देशों में काफी विभिन्नता के साथ रोगियों की देखभाल की लागत को रोगियों पर स्थानांतरित कर बढ़ा दिया है और लोगों की सेवा प्राप्ति की असमानता की दर में वृद्धि हुई। इसकी अतिरिक्त ग्रीस और पुर्तगाल जैसे देश जिन्होंने अपनी सम्प्रभुता पर सबसे गंभीर कर्ज संकट का सामना किया (और बेलऑउट कार्यक्रमों के अधीन हुआ), बाहरी और आंतरिक दबावों के गठबंधन ने व्यवस्था को विखंडित होने से बचाने के लिए, पारदर्शिता को बेहतर करने के लिए और प्रावधानों को समान रूप से बढ़ाने के लक्ष्य से कई महत्वपूर्ण बदलावों के लिए प्रेरित किया गया, हालांकि इसमें सार्वजनिक सेवाओं में हुए बदलावों को एक बहुत छोटी पहल कही जा सकती है।

> सार्वजनिक व्यय में गिरावट और अपूरित आवश्यकताएं

संकट के उच्चतम समय पर (2008–2013) प्रति व्यक्ति सार्वजनिक व्यय (लगातार 2010 की कीमतों की तुलना में क्रय शक्ति के मापकों को मापा जाता है) ग्रीस में आकस्मिक रूप से (लगभग 30 प्रतिशत) गिर गया। यह पुर्तगाल में 12 प्रतिशत, इटली में 8 प्रतिशत और स्पेन में 3 प्रतिशत गिरा। इसके उपरातं यह इटली और ग्रीस में लगभग स्थिर–सा हो गया और स्पेन और पुतर्गाल में एक औसत वृद्धि की प्रवृति दिखाई दी। हालांकि इन चारों देशों में 15 ईयू के औसत के अंतर की कमी हो गई (अर्थात यूरोपीयन यूनियन के पूर्व के विस्तार से पहले के 15 देश)। 2017 में ग्रीस में प्रति व्यक्ति सार्वजनिक स्वास्थ्य खर्च यूरोपीय संघ के 15 के औसत के एक तिहाई और पुर्तगाल में आधे से भी कम हो गया। यह स्पेन और इटली में इस औसत के करीब था। इसके बिल्कुल विपरीत, विशेषरूप से 2013 के बाद से इन सब चार देशों में निजी खर्च में वृद्धि हुई है, हाल ही में कुल स्वास्थ्य व्यय में (ग्रीस में) 40 प्रतिशत और (स्पेन में) 24 प्रतिशत तक कवर किया गया।

अवहनीय सवास्थ्य सेवाओं के कारण ग्रीस चिकित्सा देखभाल की अपूरित जरूरतों की अब तक की उच्च दरों को प्रदर्शित करता है। इस देश में मध्यम आय तक वाले परिवारों में भी, विशेष रूप से बच्चे और वृद्ध स्वास्थ्य सेवाओं के लिए वितीय संकट का सामना करना पड़ता है। इसलिए घर के बजट के लिए निजी भुगतान 'भयावह' होने का जोखिम अधिक है। स्पेन और इटली में बीमारी के दौरान विशेषज्ञों के उपचार और अस्पताल के लिए लोगों के प्रतीक्षा का बढ़ा समय स्वास्थ्य देखभाल के प्रति लोगों की संतुष्टि को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक है। फिर भी स्थाई जरूरतों का प्रसार स्पेन में सबसे कम रहा है। हालांकि इन दोनों देशों में स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण में काफी क्षेत्रीय असमानताएं हैं। यह इटली में साफ देखा जा सकता है, दक्षिण के इलाकों में उतरी/मध्य इलाकों की तुलना में पर्याप्त संसाधनों का अभाव है।

ग्रीस में (और कुछ विस्तारित रूप में पुर्तगाल में भी) सुधारों में चिकित्सकों की गतिविधियों पर सख्त निगरानी को शामिल किया गया (जैसे कि नैदानिक/प्रयोगशाला परीक्षणाों के लिए रेफरल की सीमा निर्धारित करना, दवाओं की मासिक राशि पर सीलिंग तय करना आदि) ताकि इस व्यवस्था को अधिक पारदर्शी और नियंत्रित बनाया जा सके। लेकिन उसी समय यह इस प्रणाली की सुगम्यता और नेविगेशन को प्रभावित करता है। यह प्रणाली अभी भी इन दोनों देशों में प्राथमिक और विशेष देखभाल के अस्पतालों का संयोजन टूटे हुए स्वास्थ्य तत्रों द्वारा (कम और अधिक) संयोजित है। इसके अतिरिक्त सभी चार देशों में कुछ पुरानी बीमारियों (जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अस्थमा और अन्य) के लिए भर्ती होने को टाला जाता है, यह टालना समानता के प्रतिकूल प्रभाव के साथ यहां पर प्राथमिक देखभाल में अक्षमताओं को दर्शाता है।

>>

> *"ग्रीस में मध्यम आय वाले परिवार, विशेष रूप से बच्चों और वृद्धों के साथ वालों को स्वास्थ्य सेवाओं के लिए वित्तीय संकट का सामना करना पड़ता है।"*

> चिंता के संकेत

इस संबंध में चिंता के कुछ प्रमुख संकेत निम्नलिखित हैं। सबसे पहला, सार्वजनिक क्षेत्र के संसाधनों में स्वास्थ्य नीतियों को निचोड़ने की हिमायत करना है। इसे प्रति व्यक्ति निजी स्वास्थ्य व्यय का निरंतर बढ़ते जाने और सार्वजनिक व्यय में धीमी गति की वृद्धि (या ठहराव) में देखा जा सकता है। दूसरी चुनौती है कि इन सेवाओं के लिए पात्रता सैद्धांतिक रूप से तो व्यापक है लेकिन व्यवहार में इन तक पहुंचना कई समूहों के लिए चुनौती है (कारणों के विभिन्न संयोजनों की वजह से . जैसे कि प्रत्येक देश में .महंगी लागत, लम्बी प्रतीक्षा, दूरी आदि)। तीसरी चुनौती, निजी स्वास्थ्य बीमा (व्यावसायिक या स्वैच्छिक आधार पर) का विस्तार होना है, 2005 और 2015 के बीच इसका विस्तार लगभग दोगुना हो गया और पुर्तगाल में भी उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। इस निजी स्वास्थ्य बीमा में इटली में भी वृद्धि हुई, जबकि ग्रीस में भी यह तेजी से संकट की तरफ बढ़ रहा है। लेकिन ग्रीस में आउट–ऑफ–पॉकेट भुगतान अधिक है। अब तक निजी स्वास्थ्य बीमा की मांग ज्यादातर विशेषज्ञ देखभाल के लिए जल्दी पहुंचने के कारण होती है और यह मुख्य रूप से कुछ बड़े उद्यमों के कर्मचारियों को कवर करती है।

भविष्य में यह प्रवृति कैसे सामने आएगी और इसके व्यापक सार्वभौमिक कवरेज की संभावना कई कारकों पर निर्भर करती है, जैसे सार्वजनिक–निजी समिश्रण, मजदूरों की प्राथमिकताएं, कराधान नीतियों आदि को फिर से तैयार करना है। यदि व्यावसायिक स्वास्थ्य बीमा का दायरा व्यापक हो जाता है (यानी काम करने वाली आबादी के अधिकांश हिस्से को कवर किया और इसे बारीकी से विनियमित किया गया जैसा कुछ उतरी यूरोपीय देशों में होता है), यह इस तक लोगों की पहुंच में बराबरी बनाए रख सकता है। इससे सार्वजनिक वित पर दबाव बढ़ने की संभावनाएं तो हैं लेकिन साथ ही यह सार्वभौमिक कवरेज को बनाए रखता है। फिर भी यदि व्यावसायिक बीमा केवल कार्यशील जनसंख्या के कुछ समूहों (विशेषाधिकार प्राप्त) को कवर करता है जो संभवतः एकजुटता को पारस्परिकवादी प्रारूप में बदल सकता है जिसमें अंत में सार्वभौमिकता को नष्ट करने की संभावनाएं होती हैं।

अंत में निकट भविष्य में सार्वजनिक क्षेत्र के स्वास्थ्य क्षेत्र में होने तीव्र तकनीकी विकास के साथ एक समूह द्वारा गंभीर वितीय तनावों की चुनौती दी जाएगी और दोनों 'धारा–प्रतिकूल' सेवाओं (जिसकी वजह से चारों देश कमजोर पड़ जाते हैं) और जनसंख्या के बढ़ने के कारण सामाजिक देखभाल की सेवाएं 'धारा–अनुकूल' (अधिकांश दीर्घकालीन) हो जाती हैं। यह सार्वजनिक–निजी अंतर्संबंधों को पुनः सुव्यवस्थित करने वाला कारक हो सकती हैं, साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं में सामाजिक एकजुटता के तानेबाने को भी परिवर्तित कर सकते हैं।■

सभी पत्राचार मारियो पेतमेसिदाउ को <marpetm@otenet.gr>
एना गुइलेन को <aguillen@uniovi.es>
एमेन्यूले पावोलिनी को <emmanuele.pavolini@unimc.it>
पर प्रेषित करें।

> अस्थायी कार्यों के नये दौर में बेरोजगारी लाभ

डेनियल क्लेग, एडिनबर्ग विश्वविद्यालय, ब्रिटेन द्वारा

शुन्य–घंटे अनुबंध ब्रिटेन में श्रम प्रतिरोध का एक निरंतर विषय रहा है। क्रिस्टोफर थोमोण्ड द्वारा फोटो।

सामाजिक नीति में हमेशा ही शारीरिक रूप से काम करने में सक्षम व्यस्कों को दी जाने वाली प्रतिस्थापन आय हमेशा ही सबसे विवादास्पद प्रश्नों में रही है। भुगतान किये गए कार्यों से अनैच्छिक अपवर्जन के फलस्वरूप आय में कमी से होने वाली हानि से सुरक्षा करने के प्रति लक्षित, बेरोजगारों को मिलने वाले लाभों की लम्बे समय से इसलिए आलोचना की जाती रही है क्योंकि कई लोग इसे ऐच्छिक निकासी की सब्सिडी के रूप में लेने से इंकार करते हैं। इस तरह की आलोचना हाल के दशकों में मीडिया विमर्श और राजनीतिक बहसों में विशेष रूप से सुनी जा सकती है। ऐसी नीतियां जिनके कारण तथाकथित लाभ की प्रावधानों को कठोर कर दिया है – काम ढूंढने वाले लोगों की नियुक्तियों में अपने आपको प्रयासों से उनके योग्य साबित करने के लिए, अनुमोदित लाभों में कटौती पर प्रतिबंधों का समर्थन करना या अवज्ञा के लिए निलम्बन. शायद यूरोपीय देशों में पिछली तिमाही में बेरोजगारी लाभों में सुधारों की सबसे प्रमुख विशेषता रही है। इस तरह के उपायों ने बेराजगारी लाभों के प्रावधानों के दुरुपयोग के बारे में जनता की चिंताओं का जवाब देने की कोशिश की गई है, जबकि विरोधाभासी रूप से यह सामने आया कि इस तरह के दुरुपयोगों के व्यापक होने की सामान्य धारणा मजबूत हुई है।

> कामों का विखंडन और रोजगार की अनिश्चितता

हालांकि 21वीं सदी की शुरुआत में बेरोजगारी लाभ से जुड़ी नीति की प्रमुख चुनौतियों का निस्तारण कर दिया गया लेकिन लम्बे समय से बेरोजगारी लाभों के दुरुपयोग से जुड़ी चिंता और काम तलाश रहे लोगों की जिम्मेदारी से जुड़ा विमर्श अभी भी मौजूद है। बेरोजगारी

>>

लाभों की श्रम बाजारों में ऐसी परिकल्पना की गई थी जहां पर लोगों पर आश्रित कामों को पुनर्व्यवस्थित करके मजदूरों (पुरुष) को लम्बे समय का निरन्तर काम दिया जा सके। निर्माण कार्य में वृद्धि के परिणामस्वरूप कार्यशक्ति का 'स्थायीकरण' हो रहा था लेकिन इसका सार्वजनिक नीति और सामूहिक सौदेबाजी का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए भी अनुसरण किया जा रहा था। इसके विपरीत आज सेवा प्रधान अर्थव्यवस्थाओं वाले समृद्ध लोकतंत्रों में अनेक प्रकार के गैर–मानक रोजगार संबंधों और विशेष रूप से छोटे और अस्थायी कार्यों में, कभी–कभी प्रच्छन्न स्व–रोजगार की वापसी के रूप में विस्फोट देखा जा सकता है। नई तकनीकों ने काम के कार्यों के विखंडन को और सुविधाजनक बनाते हुए 'गिग अर्थव्यवस्था' के आगमन को तीव्र किया है। सरकारें इस तरह की प्रवृतियों का मुकाबला करने की अनिच्छुक हैं और अक्सर उन्हें विकास, प्रतिस्पर्धा और रोजगार बढ़ावा देने के विकल्प के रूप में बढ़ावा भी देती हैं। कमजोर ट्रेड यूनियनें विरोध करने की अपेक्षा शक्तिहीन साबित हो गई। हम आकस्मिक कार्य के एक नये युग में फिसल रहे हैं।

आज कई लोगों लिए, विशेष कर कम कौशल वाले लोगों के लिए बेरोजगारी एक अलग प्रकार की 'सामाजिक जोखिम' है जिसकी क्षतिपूर्ती के लिए बेरोजगारी लाभ की व्यवस्था की गई थी। अब स्थिर, दीर्घ–कालिक व्यस्तताओं के मध्य कभी कभार काम से अनुपस्थिति के रूप नहीं अपितु बेरोजगारी अब कामगार जीवन की एक नियमित विशेषता बन गयी है जो अधिक या कम, अल्प– कालिक, अनियमित और असुरक्षित कार्य अवधि की पुनरावृति का लक्षण बन गयी है। बेरोजगारी और रोजगार के बीच की सीमा स्पष्ट हो गई है। क्या एक मजदूर जो महीने के पहले और आखिरी सप्ताह में रोजगार में हो, लेकिन इस बीच बेरोजगार हो, को उस महीने में काम पर मन जाना चाहिए या उसे बेरोजगार माना जाये? एक मजदूर जो दो अंशकालीन नौकरियाँ समवर्ती रूप से करता है, लेकिन उसकी एक नौकरी छूट जाती है, क्या उसकी आर्थिक स्थिति को जो काम उसके पास अभी है से परिभषित करना चाहिए या उससे जिसे उसने खोया है?

> काम के लाभ : काम की मजदूरी कमाना

नीतिगत प्रवृति यह है कि इस नए श्रम बाजार में जटिल चुनौतियों का सामना करने वाली बेरोजगारी लाभ नीति व्यापक परिवर्तनकारी नहीं है बल्कि सामाजिक सुरक्षा लाभों में असमान विकास है। हाल के वर्षों में कई यूरोपीय कल्याणकारी राज्यों में स्थापित और विस्तारित अवधारणा, चाहे एकल आधार पात्रता या बेरोजगारी बीमा या सहायता लाभों के नए पात्रता मानदंडों में संशोधन के माध्यम से, रोजगार में होने के लाभ का झूठा विश्वास देती है कि लोगों के बेरोजगार होने का कारण उनके प्रयास, प्रेरणा या जिम्मेदारी में कमी हो सकती है। रोजगार में होने के लाभ केवल इसलिए मौजूद हैं क्योंकि समकालीन यूरोपीय श्रम बाजारों में बेरोजगारों को पुनर्नियुक्ति के कई अवसर उपलब्ध हैं जो अक्सर कमतर वेतन प्रदान करते हैं और आउट ऑफ़ वर्क लाभों की तुलना में कम सुरक्षा प्रदान करते है चाहे उसका मूल्य कम हो तो भी।

सामाजिक लाभ प्रणाली द्वारा अतिरिक्त आय प्राप्त करने का नजरिये अपने आप में कठिनाइयों से भरा नीतिगत दृष्टिकोण है, यदि वे बेरोजगारों को फिर से काम पाने के लिए सार्थक प्रोत्साहन की पेशकश करते हैं, रोजगार में होने के लाभों में जरूरत है कि मजदूर को न केवल आय का पूरक प्राप्त हो बल्कि यह आश्वासन भी मिलता है कि नई नौकरी जल्दी से खो जाने पर भी उसकी स्थिति कम से कम उससे बदतर तो नहीं होगी यदि वे इस नौकरी को लेते ही नहीं। इससे एक ऐसी स्थिति की राह खुलती है जहां पर रोजगार में होने और रोजगार में न होने की अवधि को अनिश्चित काल के लिए वैकल्पिक रूप में, संभवतः अल्पकाल के लिए संस्थागत रूप में सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रणाली की सब्सिडी के माध्यम से आंतरिक रोजगार–संबंध विकसित हो जाते हैं। एक सार्वभौमिक बुनियादी आय के लिए प्रस्ताव ठीक इसी दोष को साझा करते हैं। जहाँ काम में लाभ को उनकी लागत को सीमित करने के लिए कम लागत पर लक्षित किया जाता है, वे अपने घंटे या आय बढ़ने के लिए काम करने वाले श्रमिकों के लिए बहुत अधिक प्रभावी कर दरों का उत्पादन करते हैं जो श्रमिकों को कम–भुगतान वाले रोजगार में और भी अधिक मजबूती से रोकते हैं।

> स्थिरता और नरमपन पैदा करना ?

इन वास्तविक नीतिगत चुनौतियों का सामना करते हुए, यूरोप में कुछ सरकारों ने हाल ही में – फ्रांस में बेरोजगारी बीमा के 2019 सुधार के साथ–साथ काम के लाभों में महत्वपूर्ण प्रतिबंधों की घोषणा की। उन्होंने फिर से बेरोजगारों को स्थायी रोजगार में तब्दील करने की शर्तों में अपना विश्वास व्यक्त किया। जहां काम में लाभ की स्थिति बनी हुई है, रोजगार के भीतर प्रगति को बढ़ावा देने के लिए काम के लाभ के दावेदारों पर सख्त व्यवहार नियंत्रण का उपयोग करने के प्रयास में "इन–वर्क कन्डिशनेलिटी" को भी पेश किया गया है जैसा यूनाइटेड किंगडम में नए यूनिवर्सल क्रेडिट सिस्टम के तहत। दोनों मामलों में यह देखा गया है कि समकालीन छोटे और बड़े श्रम बाजारों की वास्तविकताओं की जिम्मेदारी उन लोगों के कंधों पर रखी गई है, जिनके आर्थिक अवसर उनके द्वारा सीधे सीमित हैं।

इस मामले की असली जड़ यह है कि आधुनिक यूरोपीय कल्याणकारी राज्यों के मन में नकदी हस्तांतरण प्रणालियों को अपनाना बहुत मुश्किल है। श्रम बाजारों में अनुमानित रूप से असुरक्षित या जोखिम से भरे कामों की भरपाई के संदर्भ में यह मुश्किल अधिक है। लचीलेपन" – श्रम बाजार के लचीलेपन और सामाजिक सुरक्षा के संयोजन की हालिया फैशनेबल नीति की एक साफ–सुथरी भूमिका है, लेकिन लेकिन इसका बहुत ही कम व्यवहारिक मार्गदर्शन मिलता है कि एक आय रखरखाव प्रणाली आकस्मिक रोजगार श्रमिकों को एक सर्पिल लागत और अनपेक्षित परिणाम, या दोनों से कैसे सुरक्षा प्रदान कर सकती है। बेरोजगारी संरक्षण केवल तब तक जारी रहेगा जब यूरोपीय श्रम बाज़ार फिर से कामकाजी जीवन में स्थिरता का एक बुनियादी स्तर उत्पन्न करेंगे। इसके लिए रोजगार के बेहतर नियमन की आवश्यकता है, न कि कमजोर श्रमिकों के व्यवहार पर कठोर नियंत्रण की । ■

सभी पत्राचार डेनियल क्लेग को <Daniel.Clegg@ed.ac.uk> पर प्रेषित करें।

> समाजिक नीतियों का विषयीकरण, समाजों का ध्रुवीकरण

रॉलैंड एत्ज़मुलर, जोहान्स केपलर विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया द्वारा

कल्याणकारी शासन का उद्‌विकास न केवल, बल्कि विशेष रूप से यूरोप में वेतन–वृद्धि वाले विकास मॉडल (फोर्डिज़्म) से जुड़े तथाकथित निष्क्रिय कल्याणकारी गतिविधियों से तथाकथित मित्तव्ययी राज्यों और सामाजिक नीति गतिविधियों के आपूर्ति–पक्ष उन्मुख पभुत्व की ओर के बदलाव से जुड़ा है। ये 1980 और 1990 के दशक के बाद से राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न नवउदार सुधार परियोजनाओं द्वारा लागू किए गए, तथा 2008 में इन्हें कट्टर बनाया गया। ये सुधार पूँजीवादी बाज़ारों के विरूद्ध सामाजिक सुरक्षा से संबंधित व्यक्तियों और उनके परिवारों से बढ़ी हुई आत्म–जिम्मेदारी की माँग करते हैं। कई देशों में सामाजिक संरक्षण (पेंशन, स्वास्थय) का निजीकरण इस विकास का प्रतिमान है तथा इससे असुरक्षा और असमानता बढ़ती है।

हालांकि, व्यक्तियों के स्व–उत्तरदायित्व की प्रकिया को बाजार की गतिशीलता और सामाजिक संकट को बदलने के लिए स्थायी रूप से व्यक्तिपरकताओं (कार्य, कौशल और दक्षताओं के प्रति दृष्टिकोण) के अनुकूलन के उद्वेश्य से लक्षित गतिविधियों से जोड़ा जाता है। व्यक्तिगत और व्यक्तिपरककृत सामाजिक नीतियाँ मुख्य रूप से श्रम–शक्ति और पूंजी के मध्य विनिमय विकल्पों को सभी सक्षम व्यस्कों के एकत्रीकरण द्वारा संरक्षित करने, बढाने तथा लचीला बनाने की ओर लक्षित हैं। इसमें चाइल्डकेयर के विस्तार के साथ–साथ औपचारिक अर्थव्यवस्था में व्यक्तियों की रोजगार क्षमता में सुधार (स्थायी) जैसी गतिविधियॉ सम्मिलित हैं। मित्तव्यत्तता के साथ उनकी जोड़बंदी को देखते हुए, मानव पूंजी उन्मुख सामाजिक नीतियों की ओर बदलाव, सामाजिक सुरक्षा और देखभाल की वृहत् मांग की कीमत पर आया था जिससे कमजोर सामाजिक समूहों के एकीकरण को सुनिश्चित किया जा सके। इसने कई देशों में गरीबी और सामाजिक अपवर्जन के स्तर को बढ़ा दिया है, जिसके अंतर्गत ऐसे समूह जिनमें बुजुर्ग, विकलांग, कालानुक्रमित बीमार व्यक्तियों को गैर–उत्पादक लागत कारकों के रूप में देखा जा रहा है।

इन परिवर्तनों ने तथाकथित कल्याणकारी सेवाओं के बढ़ते महत्व को जन्म दिया है, जिसका मुख्य कार्य सकिय श्रम–बाजार की नीतियों, व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (वीइटी) आदि के साथ सामाजिक कार्य और सामाजिक शिक्षाशास्त्र के विवादास्पद और विरोधाभासी विलय के माध्यम से लोगों का प्रसंस्करण है। कल्याण सेवा गतिविधियों को स्वैच्छिक क्षेत्र के संगठनों को ज्यादातर अनुबंधित किया जा रहा है या फिर इन्हें निजी क्षेत्र में भी स्थानांतरित कर दिया जा रहा है और नए वित्तपोषण शासनों (उत्पादन–संबंधित वेतन, प्रदर्शन–संबंधित वेतन, अल्पकालिक अनुबंध, आदि) के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है। विकास के ये प्रारूप कल्याण सेवाओं को प्राप्त करने वालों को न केवल बाजार की माँग के अनुसार खुद को नियंत्रित करने के लिए अपनी क्षमताओं को विकसित करने का वादा करने वाली अधिक दक्ष तथा अप्रतिरोध्य गतिविधियों के अधीन करते हैं अपितु वे कल्याणकारी सेवाओं में कर्मचारियों के लिए नए तनाव और माँगों को भी पैदा करते हैं क्योंकि उन्हें मित्तव्यत्तता सबंधी धन अभाव, उनके कार्य की गुणवत्ता पर पेशेवर मांग और ग्राहकों के प्रतिरोध के साथ–साथ अपेक्षाओं के मध्य संतुलन बनाए रखना पड़ता है।

यह विवेचनात्मक अनुसंधान के लिए नई चुनौतियों को जन्म देता है क्योंकि कल्याणपरक शासनों एवं सामाजिक नीतियों का वैयक्तिकरण तथा विषयीकरण, कल्याणपरक शासनों में विध्वस्तुकरण पर ध्यान केन्दित करता है। यह विश्लेषण उन विभिन्न तरीकों पर ध्यान केंद्रित करते है जिनके अंतर्गत कल्याणकारी शासकों ने कम से कम आंशिक रूप से संचय और पूंजीवादी श्रम बाजारो (वि–वस्तुकरण) के सामाजिक नकारात्मक प्रभावों से श्रमिकों को बचाया है, एवं पुरूष अर्जकों पर आधारित पांरपरिक पारिवारिक रूपों को स्थिर किया है अथवा महिलाओं को अपने स्वयं के सामाजिक अधिकारों को प्राप्त करने एवं लाभकारी रोजगार में भाग लेने के लिए सक्षम बनाया है। पूंजीवादी बाजार के समाजों में सामाजिक नीतियों की अस्पष्टताओं से अच्छी तरह वाकिफ यह विश्लेषण यह भी दिखा सकते हैं कि 1945 से 2008 तक ग्लोबल नार्थ में आर्थिक विकास और खपत के उभरते मॉडल के लिए तथाकथित केनेसियन कल्याण राज्य किस प्रकार सहायक है। इस दृष्टिकोण से, नवउदारवादी कल्याणकारी सुधारों को श्रम बाजार के लचीलेपन और उदारीकरण के माध्यम से श्रम–शक्ति के पुनर्वस्तुकरण करने और सामाजिक सुरक्षा के विपणन के लिए रणनीतियों के रूप में चित्रित किया जा सकता है।

भले ही मित्तव्यत्तता और आपूर्ति–पक्ष उन्मुख सामाजिक नीतियों की तरफ बदलाव से पता चलता है कि परवर्ती कैसे बाद में आर्थिक गतिशीलता के अधीन हो गए हैं। अधिकांश देशों में कल्याणकारी शासनों को वापस लेने और सामाजिक खर्चों में कटौती करने के तीन दशक से अधिक के नव–उदारवादी प्रयास वास्तव में समग्र व्यय स्तर नीचे लाने में सफल नहीं हुए हैं। हालांकि, यह हमें इस बारे में कुछ नही बताता है कि क्या सामाजिक हस्तांतरण और सेवाओं के लिए व्यक्तिगत अधिकार पर्याप्त हैं। बल्कि, सामाजिक नीति शासनों का व्यापक पुनर्गठन और पुनःविन्यास इस उद्वेश्य से हो रहा है कि अधिकारों और कर्तव्यों के साथ–साथ उन व्यवहारों और गतिविधियों में बदलाव लाना है, जो व्यक्तियों और उनके परिवारों से लाभकारी रोजगार, बच्चों का पालन–पोषण, वीईटी, उत्पादक और स्वस्थ जीवनशैली, संस्कृति मानदंड आदि से संबंधित हैं। कम से कम एक यूरोपीय दृष्टिकोण से, सामाजिक नीतियों के उल्लिखित वैयक्तिकरण

>>

> *“ मित्तव्यत्तता के साथ उनकी जोड़बंदी को देखते हुए, मानव पूंजी उन्मुख सामाजिक नीतियों की ओर बदलाव, सामाजिक सुरक्षा और देखभाल की वृहत् मांग की कीमत पर आया था। ”*

और विषयीकरण ने वित्तियकृत संचय के संकट और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक असंतुलन से उभरे कल्याणकारी शासन के साथ–साथ अनुवर्ती संप्रभु ऋण संकट से निपटने के लिए मितोपभोगी–वर्चस्व रणनीतियों के मध्य यद्यपि निश्चित रूप से राष्ट्रीय रूप से विविध–विखंडित ध्रुवीकरण को जन्म दिया है।

कल्याणकारी शासनों में और मध्य खंडित ध्रुवीकरण एक तरफ श्रम–बाजारों के निचले छोर पर कार्योन्मुख सक्रियण नीतियों और दूसरी ओर तथाकथित सामाजिक निवेश रणनीतियों के बीच दोलन करता है। वर्कफेयर बेरोज़गारों और काम करने में सक्षम गरीबों के साथ अन्य आर्थिक रूप से निष्क्रिय लोग जिनके पास श्रम बाज़ार में किसी भी कीमत पर गैर–भागीदारी के लिए कोई वैध कारण (जैसे मातृत्व) नहीं है, को एकीकृत करने की गतिविधियों पर केंद्रित है । दूसरी ओर, तथाकथित सामाजिक निवेश रणनीतियों के बढ़ते महत्व का उद्धेश्य तथाकथित उत्पादक व्यय और गतिविधियों के प्रवर्तन के माध्यम से सामाजिक नीतियों की भूमिका को फिर से वैध बनाना है जो अर्थव्यवस्था की गतिशीलता और प्रतिस्पर्धा में सुधार करते हैं। सामाजिक निवेश गतिविधियॉ कौशल और दक्षताओं के स्थायी रूपांतर और पुनः संरचना पर ध्यान केंद्रित करती है, अर्थात् मानव पूंजी जिसमें व्यक्तियों और चाइल्डकेयर सुविधाओं का विस्तार सम्मिलित है। हालांकि चाइल्डकेयर सुविधाओं के विस्तार का उद्धेश्य घर में श्रम के लिंग विभाजन को बदलने का कम और श्रम–बाजार के लिए महिलाओं को जुटाने का अधिक है।

इस प्रकार, संचय और विपणन के विनाशकारी और संकट–संभावित प्रभावों से निपटने के लिए आर्थिक संरचनाओं को बदलने के बजाय, ये नीतियाँ वैश्विक प्रतिस्पर्धा और तेजी से लचीले और अनिश्चित बाजारों की मांगों के लिए लोगों को अधीन करने और उन्हें अपनाने पर केंद्रित हैं। ये घटनाक्रम विषयीकृत संकट प्रबंधन का एक रूप है जो व्यक्तियों से अपने कौशल और दक्षताओं के साथ–साथ लचीले और वैश्विक बाज़ारों के लिए आवश्यक अन्य व्यक्तिपरक विशेषताओं को अनुकूलित और सुधारने की इच्छा और क्षमता की मांग करता है। इस प्रकार, वित्तिय अर्थव्यवस्था के संकट के विनाशकारी प्रभावों और संरचनात्मक परिवर्तन से निपटने की आवश्यकता व्यक्तियों पर स्थानांतरित कर दी जाती है जिसके फलस्वरूप उनकी क्षमताओं को विकसित करने की संभावनाओं मे कटौती होती है। इसके अलावा, एक प्रकार की पोलेनीयाई–पश्च सामाजिक नीति के रूप में, यह घटनाक्रम अर्थव्यवस्था को सामाजिक रूप से जोड़ने और समाज पर इसके प्रभावों से निपटने के कार्य को व्यक्तियों पर हस्तांतरित करते हैं। ये सामाजिक सामंजस्य और एकीकरण को कम कर रहा है, जिससे न केवल राष्ट्रीय समाजों अपितु यूरोपीय संघ के लिए भी खतरा उत्पन्न होता है। ■

सभी पत्राचार रॉलैंड एत्ज़मुलर को <roland.atzmueller@jku.at> पर प्रेषित करें।

> पारिवारिक नीतियों के लिए दक्षिण यूरोप में समर्थन

सिजिता डोब्लाइट, निर्धनता, समाज कल्याण एवं सामाजिक नीति पर आईएसए की शोध समिति (आरसी 19) की सदस्य एवं **अरोआ तेजेरो,** ओवियेड़ो विश्वविद्यालय, स्पेन द्वारा

बेहतर पारिवारिक नीतियों के लिए सार्वजनिक समर्थन पर सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव दक्षिण यूरोपीय कल्यारण राज्यों के पार भिन्न है।

आज व्यक्तियों और कल्याण राज्यों दोनों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों में से एक अधिक संतुलित कार्य–जीवन प्रक्षेपवकों की आवश्यकता है। जहां कल्याण राज्य निर्धनता के विरूद्व संरक्षणात्मक रणनीति के रूप में महिला श्रम भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं, परिवारों को देखभाल जिम्मेदारियों एवं रोजगार के सम्मिश्रण में कठिनाईयां आती हैं। बाल देखभाल के प्रावधानों को बाजारों को दिया जा सकता है–यद्यपि यह माता–पिता पर वित्तीय बोझ बढायेगा–या इसे राज्य–वित्तपोषित और या राज्य द्वारा प्रद्वत्त बाल देखभाल सेवाओं जिन्हें अधिक समतामूलक और सामाजिक निवेश के तर्क के साथ संरेखित माना जा सकता है को दिया जा सकता हैं।

> सांस्कृतिक मूल्यों एवं देखभाल के प्रावधान

फिर भी, यूरोप में कल्याणकारी राज्यों में इन कार्य–परिवार सामंजस्य नीतियों की सीमाओं को लेकर भिन्नता हैं। विशेष रूप से दक्षिण यूरोपीय समाज, अक्सर रूढिवादी सांस्कृतिक मूल्यों के प्राधान्य और देखभाल के प्रावधान में परिवारों द्वारा निभाई गई केन्द्रीय भूमिका द्वारा चिन्हित होते हैं। ये देश नार्डिक या महाद्वीपीय यूरोपीय देशो की तुलना में पारिवारिक लाभों में काफी कम खर्च करते हैं और सामाजिक सुरक्षा के अन्य क्षेत्रों की तुलना में पारिवारिक नीतियों को निम्न प्राथमिकता देते हैं। जन लाभ पर कुल खर्च के प्रतिशत में मापते हैं तो पारिवारिक लाभों पर इन सभी देशों में सार्वजनिक खर्च, यूरोपीय संघ के औसत से कम है। इसमें ग्रीस, पुर्तगाल एवं स्पेन का अनुपात 2016 में यूरोप में सबसे न्यूनतम पांच पर था। उसी वर्ष का यूरोपीय सामाजिक सर्वेक्षण तथापि दिखाता है कि सर्वेक्षण में सम्मिलित भूमध्यसागरीय कल्याणकारी राज्य–इटली, पुर्तगाल एवं स्पेन–उन देशों में से हैं जो कार्य–परिवार सामंजस्य नीतियों के विस्तार का सबसे अधिक समर्थन करते हैं चाहे इसका मतलब सबके लिए उच्च कराधान हो, अर्थात तब भी जब व्यक्तियों को स्मरण कराया गया कि अतिरिक्त सार्वजनिक सेवाओं का अर्थ अतिरिक्त वित्तपोषण है।

>>

विविध आनुभाविक अध्ययनों ने पाया कि सामाजिक नीतियों के प्रति सार्वजनिक दृष्टिकोण अक्सर सामाजिक समूहों की आवश्यकताओं या स्व–रूचि से आकारित होते हैं। उदाहरण के लिए, छोटे बच्चों वाले परिवार या संभावित पितृत्व वाले आयु समूह शायद परिवारों के लिए बेहतर सेवाओं के लिए अधिक समर्थन दिखा सकते हैं। कुछ अध्ययन, यद्यपि कल्याण्कारी राज्य और उसकी नीतियों के प्रति दृष्टिकोण के चालक के रूप में सांस्कृतिक मूल्यों के महत्व पर भी जोर देते हैं। अपने लेख, ''कल्याण राज्य नीतियां एवं देखभाल व्यवस्था का विकास'' (2005), में हेम्बर्ग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर डॉ. बिरगिट प्फाओं–एफिंगर तर्क देती हैं कि देखभाल और राज्य, परिवार और बाजार के उत्तरदायित्व के प्रति सांस्कृतिक मूल्य सार्वजनिक विमर्शों में अंतःस्थापित हैं और एक देश में देखभाल व्यवस्था और नीतियों को आकारित करते हैं।

> दक्षिणी यूरोपीय देशों के पार छितराव/भिन्नता

अतः हमारा शोध दक्षिणी यूरोपीय समाजों में परिवारों के लिए बेहतर सेवाओं के लिए उच्च करों के भुगतान करने की सार्वजनिक तत्परता को आकार देने में जरूरत और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रभाव के बारे में इन्हीं प्रश्नों को उठाने का प्रयास करता है। इन देशों में पारम्पिरिक रूप से देखभाल प्रावधान परिवारों द्वारा प्रदान किये जाते थे लेकिन जहां श्रम बाजार में महिला भागीदारी की वृद्विके फलस्वरूप अन्य कर्त्ताओं की भागीदारी की आवश्यकता हो सकती है। यूरोपीय सोशल सर्वेक्षण के आंकड़ों को काम में लेते हुए हम इस बात को उजागर करते हैं कि दक्षिणी यूरोप में देखभाल की अतृप्त जरूरतें हैं जो कि परिवारों के लिए बेहतर सुविधाओं के लिए उच्च स्तर के समर्थन से स्पष्ट होता है। हालांकि, निष्कर्ष, अलग–अलग देशों में स्व–रूचि और सांस्कृतिक मूल्य कैसे इन दृष्टिकोणों को प्रभावित करते है, पर भिन्न पैटर्न दिखाते हैं। यद्यपि दक्षिणी यूरोपीय कल्याणकारी राज्यों को अक्सर पारम्पिरिक लिंग और पारिवारिक मूल्यों की भूमिका के संदर्भ में समान माना जाता हैं, हमारे अध्ययन के निष्कर्ष इस बात का प्रमाण देते हैं कि इनके मध्य महत्वपूर्ण अंतर है। हमारा मानना है कि इनमें से कुछ देशों में अन्य की तुलना में परिवारों के लिए सेवाओं के विस्तार की अधिक गुंजाइश है। सामान्य तौर श्रम बाजार में महिलाओं की उच्च और सामान्य स्तर पर भागीदारी, विशेष रूप से माताओं की, विभिन्न सामाजिक वर्गों और शैक्षणिक पृष्ठभूमि से महिलाओं एवं पुरूषों के मध्य कल्याण समर्थन में एकजुटता के उच्च एवं संगत स्तर को दर्शाती है। इसके साथ पुरानी पीढीयों के मध्य और अधिक एकजुटता और विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों के महत्वपूर्ण अनुपस्थिति के साथ आती है। यह सब देश में परिवारों के लिए अधिक उदार सरकारी नीतियों के लिए स्थान की तरफ इशारा करता प्रतीत होता है।

हालांकि, इटली में परिवारों के लिए बेहतर सेवाओं के प्रति समर्थन सामाजिक समूहों के पार अधिक भिन्न है। आर्थिक रूप से कमजोर और निम्न सामाजिक वर्ग महत्वपूर्ण रूप से पारिवारिक नीतियों के कम समर्थक हैं जो इटली में अपेक्षाकृत उच्च कराधान के कारण हो सकता है। सांस्कृतिक मूल्यों का एक स्पष्ट प्रभाव भी देखा जाता हैं, यद्यपि उसकी दिशा वैसी नहीं है जैसी अपेक्षा की जाती है : परम्परा एवं सहमति को उच्च प्राथमिकता देने वाले और जो सामाजिक न्याय, समानता या सबका कल्याण जैसी मूल्यों को अंगीकार करने वाले दोनों कार्य–परिवार सामंजस्य नीतियों के विस्तार के लिए कम समर्थन दर्शाते हैं।

मूल्यों के इस अप्रत्याशित प्रभाव जो कल्याणकारी राज्य के तर्क के साथ प्राथमिकता से संरेखित होता है इटली के उंचे कर बोझ से संबंधित हो सकता है। यहां और विस्तारों को घरेलू आय के प्रति खतरें के रूप में देखा जा सकता है और इस प्रकार उल्लेखित मूल्यों के खिलाफ देखा जा सकता है। अन्य शब्दों में, परिवार को अभी भी इटली मे सबसे यथोचित देखभाल करने वाली संस्था के रूप में देखा जा सकता है एवं सामाजिक न्याय या समानता को गले लगाने से शायद सार्वजनिक बालपन सेवाओं के बजाय पारिवारिक आय संरक्षणा नीतियों को समर्थन मिल सकता है। वास्तव में, 2017 की यूरोपीय मूल्य अध्ययन इटली में पारम्पिरिक पारिवारिक मूल्यों के वर्चस्व के बारे में बताता है : स्पेन के 26 प्रतिशत की तुलना में 52 प्रतिशत व्यक्ति इस बात पर सहमत या अधिक सहमत है कि यदि माँ कार्य करती है तो बच्चे परेशानी उठाते हैं।

जैसा कि परवर्ती पहले ही सुझा सकता है, स्पेन इटली की तुलना में पारंपरिक जेण्डर और पारिवारिक संस्कृति से स्पष्टतया दूर हो गया प्रतीत होता है : सामाजिक न्याय, समानता और कल्याण के मूल्यों को अपनाने वाले लोग परिवारों के लिए बेहतर सेवाओं के लिए उच्च करों का भुगतान करने के लिए अधिक तत्पर है लेकिन परम्परा और सहमति कल्याण समर्थन को महत्वपूर्ण से प्रभावित नहीं करती हैं। इसके अलावा छोटे बच्चों के माता–पिता का उच्च समर्थन और तीन से कम उम्र के बच्चों की औपचारिक बाल देखभाल में निम्न हिस्सेदारी आश्रित बच्चों वाले परिवारों में अपूर्ण देखभाल आवश्यकताओं को दर्शाती है जबकि आर्थिक रूप से संघर्ष करने वाले या बड़े शहरों में रहने वाले एकजुटता के निम्न स्तर को दर्शाते है।

अंत में, जहां पुर्तगाल के परिणाम संकेत देते है कि परिवार अपेक्षाकृत रूप से मजबूत हो रहे हैं और बेहतर सेवाओं के लिए उनकी मांगे सफल हो सकती हैं, ऐसा स्पेन में हो आवश्यक नहीं है और विशेषरूप से इटली में। अन्य सामाजिक संस्था जैसे नियोक्ता तथापि चाइल्ड केयर सेवाएं प्रदान करने में या लचीली कार्य व्यवस्था प्रदान करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाना प्रारम्भ कर सकते हैं जो अभी तक सीमित है, हालांकि दक्षिणी यूरोप में इसका महत्व बढ रहा है। फिर भी, इन लाभों की पहुंच में असमानताएं सामाजिक निवेश के सिद्वांतों को खतरे में डालती हैं। ■

सभी पत्राचार सिजिता डोब्लाइट को <doblytesigita@uniovi.es>
अरोआ तेजेरो को <tejeroaroa@uniovi.es> पर प्रेषित करें।

> जर्मनी में स्वैच्छिक कार्य करना

अच्छा कार्य या एक आभासी अर्थव्यवस्था

सिल्के वैन डाइक एवं **टाइन हाउबनेर,** जेना का फ्रेडरिक शिलर विश्वविद्यालय, जर्मनी द्वारा

आवश्यक सामाजिक सेवाएं अक्सर काफी बार स्वयंसेवकों को सौंपी जाती है। साभार : मथियास जोमर/ pexels.com

वर्तमान में हम कल्याणकारी राज्यों के विघटन, जनसांख्यिकीय परिवर्तन के कारण उत्पन्न नई आवश्यकताओं तथा लिंग और पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन के कारण, देखभाल और सामाजिक प्रजनन के संकट का सामना कर रहें हैं। एक ऐसे समय में जब सामाजिक नीति के लिए एक संसाधन के रूप में कम और कम महिलाऐं पूर्णकालिक समय के लिए उपलब्ध हैं, अवैतनिक कार्य की देखभाल क्षमता, विशेषरूप से परिवार से परे तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही है और इसे राज्य की बढता समर्थन हो रहा है। नागरिकों को अधिकाधिक स्वयं को लोक हित हेतु प्रतिबद्ध करने हेतु आह्वान किया जाता है। नागरिक संलग्नता एवं स्वैच्छिक कार्य नए (पुनः) उत्पादक संसाधनों के रूप में एवं स्वयंसेवकों को रोजमर्रा की जिंदगी के नायकों के रूप में देखा जा रहा है।

इस पृष्ठभूमि के परिदृश्य में, सेवाओं और देखभाल के प्रावधानों के लिए राज्य द्वारा स्वैच्छिक कार्य का उपयोग और शोषण कैसे किया जाता है, इसकी जाँच के लिए हम पूर्व और पश्चिम जर्मनी में एक अनुभवजन्य अनुसंधान परियोजना का आयोजन कर रहें हैं। हम इस विषय में भी रूचि रखते हैं कि इस पुंज को अनुभव , इसकी व्याख्या कैसे की जाती है और इसे संलग्न व्यक्तियों तथा उनकी सहायता के लाभार्थियों द्वारा आकार प्रदान किया जाता है। हालांकि संलग्नता और दान के विभिन्न क्षेत्रों पर कई और कैसे प्रधान रूप से सकारात्मक अध्ययन उपलब्ध हैं, स्वैच्छिक कार्यों की एक राजनीतिक अर्थव्यवस्था जो क्रमबद्ध रूप से इस प्रणाली के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक निहितार्थों को प्रतिबिंबित और आलोकित कर सकने वाली प्रथा अभी तक विकसित नही हुई है। हम इस प्रसंग का वर्णन करने के लिए

>>

"छाया अर्थव्यवस्था" सम्बोध का उपयोग करते हैं, क्योंकि हम अनौपचारिक कार्य के एक क्षेत्र के संबंध में बात कर रहे हैं जो एक कल्याण के तत्त्व का प्रतिनिधित्व करता है और सामाजिक बीमा योगदान के साथ नियमित रोजगार के परे मूल्य निर्माण में (अवैतनिक कार्य घंटो के द्वारा) योगदान देता है। इसलिए, ठोस शब्दों में, हम जानना चाहते हैं कि राज्य द्वारा स्वैच्छिक कार्यों के प्रचार, माँग और उपयोग, किस सीमा तक नियंत्रित रोजगार के प्रतिस्थापन, अनौपचारिकीकरण और वि–व्यवसायीकरण की प्रकिया के लिए एक वाहन बन जाते हैं।

यहॉ पर, प्रतिस्थापन का अर्थ कभी–कभी उन गतिविधियों से लिया जाता है जो पहले नियमित थीं तथा उन्हें स्वैच्छिक कार्य के संदर्भ में स्थानांतरित कर दिया गया है। हमारे अध्ययन में इसके उदाहरण हैं, जैसे कि विद्यालयों में पूर्णकालिक देखभाल के संदर्भ में जब स्वैच्छिक "युवा साथी" शिक्षकों की कमी की भरपाई करते हैं अथवा जहाँ स्वयंसेवी पारिवारिक सहायक राज्य पारिवारिक सहायता की जगह लेते हैं। हमें ऐसे भी उदाहरण देखने को मिलते हैं जहाँ नई उभरती आवश्यकताऐं नियमित रोजगार के विस्तार से पूरी न होकर नए क्षेत्रों एवं संलग्नताओं के नए प्रारूपों का निर्माण कर पूरी होती हैं उदाहरणार्थ–बुजुर्गों की देखभाल में। नियमित रोजगार के प्रत्यक्ष प्रतिस्थापन या नियमित रोजगार के विस्तार को रोकने के इन रूपों के अलावा, हमारा अध्ययन घटती पारिवारिक देखभाल और कुशल श्रमिकों (जैसे नर्स, शिल्पी, कानून सलाहकार) की कमी में स्वयंसेवकों द्वारा क्षतिपूर्ती किया जाने के द्वारा अग्रिम प्रतिस्थापन प्रभाव को दिखाता है।

जहां स्वैच्छिक और नागरिक जुड़ाव की आमतौर पर पूरे देश में बहुत प्रशंसा की जाती है, इन घटनाक्रमों के माध्यम से हम एक वि–व्यावसायीकरण को देखते हैं। अल्परूप से प्रशिक्षित साधारण व्यक्ति वास्तव में शिक्षा, पारिवारिक मदद, बुजुर्गों की देखभाल, शरणार्थियों के लिए जर्मन कक्षाऐं या कानूनी सलाहकार आदि के क्षेत्रों में पेशेवर कार्य करते हैं। ये गैर–पेशेवर सेवाऐं मुख्य रूप से उन लोगों के प्रति लक्षित हैं जो राज्य प्रावधानों में कमी या पेशेवर सेवाओं की निजी खरीद से नई जरूरतों की क्षतिपूर्ति करने के लिए संसाधनों के अभाव से जूझ रहे हैं। इसलिए, कल्याणकारी राज्य द्वारा स्वैच्छिक कार्य का उपयोग और शोषण सभी नागरिकों को समान रूप से प्रभावित नहीं करता है : अपितु इसमें पेशेवर मदद को जुटा पाने में असमर्थ लोगों के गरीबों के लिए खराब सेवाओं के उद्‌भव को देखा जा सकता है।

हालांकि, इसमें न केवल प्रदान की गई सेवाओं की गुणवत्ता समस्याग्रस्त हो सकती है अपितु स्वयंसेवको के लिए परिस्थितियाँ भी, जो कुछ क्षेत्रों में .संबंधित सामाजिक अधिकारों के बिना., अर्ध–कर्मचारियों में बदल जाते हैं। विशेषरूप से उन क्षेत्रों में जहाँ स्वयंसेवकों से विश्वसनीय, स्थिर और अनुभवी होने की उम्मीद की जाती है – तथाकथित "स्वैच्छिक अनुबंध" जैसे बुजुर्गों की देखभाल, दिव्यांग लोगों के साथ काम करने या पूर्ण–कालिक विद्यालय देखभाल करने आदि में और साथ ही व्यय भत्ते जो लागतों की प्रतिपूर्ति से परे होते हैं, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये भत्ते आमतौर पर न्यूनतम वेतन से कम होते हैं जबकि ठीक उसी समय में श्रम और सामूहिक सौदेबाजी के मानकों को कमतर किया जाता है। इस तरह कम से कम सामान्य हित के सामाजिक सेवाओं के कुछ क्षेत्रों में, अत्यधिक प्रशंसनीय संलग्नताऐं भी काम के अस्थिरिकरण और अनौपचारिकीकरण में योगदान देती है।

विशेष रूप से पूर्वी जर्मनी में, नागरिक संलग्नताऐं और स्वैच्छिक कार्य श्रम बाजार से निकटता से संबंधित हैं जिसका अर्थ है कि ये अक्सर बेरोजगार लोगों द्वारा संपादित किए जाते है, जो यह उम्मीद करते हैं कि वे पुनः श्रम बाजार में लौट पाऐंगें। स्वयंसेवकों और विशेषज्ञों के साथ साक्षात्कार में, हम ऐसे बयान भी पाते हैं जो संलग्नताओं को वैतनिक कार्य के प्रतीकात्मक विकल्प के रूप में चित्रित करते हैं। हमारें अनुसंधान का एक और महत्वपूर्ण अनुभवजन्य निष्कर्ष नौकरी केंद्रों का कार्य है, जो कभी–कभी दीर्घ कालिक बेरोज़गार लोगों को नागरिक कार्यों में भेजते हैं। इसके अलावा, नए (पूर्व जर्मन) और पुराने (पश्चिम जर्मन) संघीय राज्यों के बीच एक और दिलचस्प अंतर है : हालांकि संलग्नता के मौद्रीकरण को पश्चिमी जर्मनी में आलोचनात्मक रूप से देखा जाता है, चूंकि व्यापक दृष्टिकोण के अनुसार यह स्वैच्छा की मौलिकता और चरित्र को नुकसान पहुँचाता है, पूर्वी जर्मनी में स्थिति भिन्न है : कार्य/संलग्नता के लिए मौद्रिक क्षतिपूर्ति को दैनिक कार्य के लिए उचित वेतन के रूप में असमस्यात्मक और वैध माना जाता है। यहॉ, जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक के मजबूत श्रम चरित्र का परिणाम स्पष्ट हो जाता है, जिसमें राज्य द्वारा निर्देशित स्वैच्छिक कार्यों के साथ–साथ पड़ोस से अनौपचारिक मदद और एकजुटता थी, लेकिन आदर्श नागरिक कार्यों की कोई अवधारणा और चलन नहीं था।

हमारा शोध, संलग्नता और स्वैच्छिक कार्यों के बहुत अलग क्षेत्रों पर केंद्रित है : कुछ अति–महत्वपूर्ण क्षेत्रों के रूप में शरणार्थी और पड़ोस सहायता, बुजुर्गों की देखभाल स्कूलों में भागीदारी, स्वैच्छिक फायर ब्रिगेड, बहु–पीढ़ी घरों और स्थानीय परिवहन सेवाओं में कार्य आदि। इन सभी क्षेत्रों में समस्यात्मक लेकिन कुछ पूर्णरूपेण असमस्यात्मक घटनाक्रम भी हैं। कुछ समस्यात्मक घटनाक्रमों के संदर्भ में, हम सामाजिक पुनरूत्पादन के एक नए युग का अवलोकन कर रहे हैं, जिसे हम "सामुदायिक पूंजीवाद" कहते हैं, जिसमें परिवार से परे सामाजिक समुदाय को प्रजनन संकटों से निपटने के लिए एक नए संसाधन के रूप में उत्तरोत्तर उपयोग में लिया जा रहा है। राज्य के स्वैच्छिक कार्यों के उपयोग के बारे में हमारा आलोचनात्मक दृष्टिकोण, यद्यपि, यह नहीं है कि राज्य को बिना किसी अपवाद के सभी (सामाजिक) कार्यों को लेना चाहिए। अपितु जब सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे को स्वैच्छिक कार्य के क्षेत्र में स्थानांतरित करने की बात आती है, तो हमारी आलोचना को उन क्षेत्रों में निर्देशित किया जाता है, जहाँ जीवन में मौलिक अवसर, गांरटीकृत सामाजिक अधिकारों के बजाय स्वैच्छिक समर्थन पर निर्भर करते हैं। ■

सभी पत्राचार सिल्के वेन डाइक को <silke.vandyk@uni-jena.de>
टाइन हाउबनर को <tine.haubner@uni-jena.de>
पर प्रेषित करें।

> क्या यूरोपीय संघ अपने सामाजिक स्तंभ को बनाए रखेगा?

बीट्राइस केरेला, स्कोला नॉर्मले सुपेरिओर, फ्लोरेन्स, इटली द्वारा

नवम्बर 2017 में हस्ताक्षरित सामाजिक अधिकारों का यूरोपीय स्तंभ यूरोपीय आयोग की प्रमुख सामाजिक पहल का प्रतिनिधित्व करते है।
साभार : यूरोपीय आयोग की वेबसाइट।

17 नवंबर, 2017 को, यूरोपीय संसद, यूरोपीय आयोग और यूरोपीय परिषद् के अध्यक्षों ने सामाजिक अधिकारों के यूरोपीय स्तंभ (ईपीएसआर अथवा स्तंभ) शीर्षित एक राजनीतिक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए, जिनमें उन सामाजिक सिद्धातों को सुनिश्चित किया गया था, जिन्हें यूरोपीय संघ (ईयू) स्वीकार एवं सवंर्धित करता है। इसने जीन–क्लॉड जुनकर के नेतृत्व में आयोग की प्रमुख सामाजिक पहल का प्रतिनिधित्व किया, जो यूरोपीय एकीकरण के भविष्य की बहस में 'सामाजिक यूरोप' को पुनः लाया। 2014 में उनकी नियुक्ति के बाद से, राष्ट्रपति जुनकर ने यूरोपीय सामाजिक आयाम के मुद्दे को अतीत से भिन्न संभाषण के भीतर रखा था : जबकि कल्याणकारी राज्यों और सामाजिक नीतियों के उत्पादक पक्ष की जिम्मेदारी अभी भी थी, नए आयोग न केवल अर्थव्यवस्था और श्रम–बाजारों के संबंध में, बल्कि सामाजिक समानता, निष्पक्षता और समावेशन के उद्देश्यों के संबंध में भी भविष्य को पुनर्विचार करने की आवश्यकता को खुले तौर पर मान्यता प्रदान की।

> निर्माण की लंबी और संघर्षात्मक प्रकिया

यह इस पुनर्निमित संवाद के भीतर और पिछले नीतिगत पैटर्न के साथ टूटने की इच्छा थी (एक ऐसे समय में जब मित्तव्यत्तता के प्रभावों ने खुद को पूरी तरह से प्रकट कर दिया था) कि सितंबर 2015 में जुनकर ने संघ के राष्ट्रीय उद्बोधन के दौरान स्तंभीय पहल को प्रस्तुत किया गया था। घोषणा के पश्चात् निर्माणाधीन काल को दो वर्ष का समय लगा : मार्च 2016 में, आयोग ने दस्तावेज की प्रारंभिक रूपरेखा प्रकाशित की और फिर एक विशेष रूप से लंबी और व्यापक सार्वजनिक परामर्श की प्रकिया खोली, जो वर्ष के अंत तक चली। जहॉं परामर्श की विशेषताऐं पत्र के निर्माण में विभिन्न हितधारकों की एक बड़ी और अधिक निचले–स्तर की भागीदारी को बढ़ावा देने का प्रयास दिखाती है, वहीं स्थिति पत्रों तथा आयोग द्वारा आयोजित सुनवाई और बहस की रिपोर्टों की सार्वजनिक उपलब्धता, अंतिम दस्तावेज में प्राथमिकताओं को किस प्रकार प्रदर्शित किया गया है हमें इसकी जाँच

>>

करने की अनुमति देती है। यह इस पहल के संभावित विकास को समझने की कुंजी है।

सार्वजनिक परामर्श के परिणामों के विश्लेषण से विभिन्न प्रतिभागियों द्वारा निर्माण प्रकिया में सामने रखी गई मांगो में एक उच्च परिवर्तनशीलता उभर कर सामने आती है। अधिकतर हम कर्त्ताओं के दो प्रमुख समूहों के मध्य एक विभाजन को देख सकते है : एक ओर, नागरिक समाज संगठन, ट्रेड यूनियनों के संघ और यूरोपीय संसद ने आर्थिक आघातों के मामले में, नागरिकों और मजदूरों के अधिकारों को गांरटी देने के लिए "सामाजिक संरक्षण मंच" सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया है। साथ ही श्रम बाज़ारों के भीतर लचीलेपन और सुरक्षा के बीच बेहतर संतुलन बनाने के लिए, स्तंभ या पिलर को लागु करने के लिए विभिन्न प्रकार के नीतिगत आहवान, जिसमें नए यूरोपीय संघ के कानून और अति–राष्ट्रीय फंडिग शामिल है को भी सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया है। दूसरी ओर, कई सदस्य राज्यों के साथ, नियोक्ता और व्यापारिक संगठन वास्तव में सामाजिक समावेशन और सुरक्षा पर जोर देने के बारे में चिंतित थे (श्रम–बाजार के कामकाज के साथ बिना कोई सीधे संबंध के साथ और इन्होंने सामाजिक क्षेत्र में नए कानून या वित्तपोषण तंत्र को अपनाने का कड़ा विरोध किया। नीतिकर्त्ताओं के इस समूह ने "सॉफ्ट" नीति समन्वय उपकरणों के माध्यम से और विशेष रूप से सहायता के सिद्धांत के संबंध में एकीकरण को बढ़ावा दिया।

> प्रतीकात्मकमूल्य का एक संतुलन कार्य

दस्तावेज के अंतिम संस्करण को देखकर, हम देख सकते हैं कि आयोग निम्न प्रकार से भिन्न विचारों में संतुलन बिठा पाने में कामयाब रहा है : तर्क–मूलक स्तर पर, यूरोपीय संघ के संस्थानों ने न केवल मित्तव्यत्तता स्थिति बल्कि "सामाजिक निवेश" (जैसे– 2013 का सामाजिक निवेश पेकैज में) की अवधारणा का परित्याग कर सामाजिक पक्ष पर परिवर्तित कथानक को प्रस्तुत किया है ताकि अधिकारों के संरक्षण और सामाजिक समावेशन और समानता का एक स्टैंड–अलोन उदेŸय के रूप में विचारा जा सके। ताकि नागरिक समाज संगठनों और ट्रेड युनियनों द्वारा प्रस्तावित इन उद्देश्यों का अनुसरण किया जा सकें। हालांकि, स्तंभों को व्यवहार में लाने के लिए प्रस्तावित उपकरणों के संबंध में, उन्होंने केवल गैर–बाध्यकारी समन्वयन और निगरानी उपयों पर भरोसा करके व्यापार क्षेत्र और कुछ सदस्य राज्यों द्वारा वकालत की गई स्थिति को अपनाया।जबकि, अंतिम उत्पाद को नीतिकर्त्ताओं के भिन्न समग्रों द्वारा साधारणतया अच्छी तरह से देख गया था, ईपीएसआर पहल का परिणाम एक राजनीतिक, घोषणात्मक दस्तावेज था, जिसमें यूरोपीय संघ की तीन मुख्य संस्थाओं द्वारा मान्यता प्राप्त कई सिद्धांतों और आकाक्षाओं को सूचीबद्धकिया गया था। इसमें एक मात्र नीतिगत नवाचार सामाजिक संकेत कों (सामाजिक स्कोरबोर्ड) का एक नया सेट था जिसे समग्र मैक्रोइकॉनॉमिक समन्वय शिल्प में शिथिल रूप से एकीकृत किया गया था। अभी तक स्तंभ का अतिरिक्त मूल्य उसके प्रतीकात्मक प्रकृति में टिका हुआ है, जबकि यूरोपीय संघ के सामाजिक आयाम में परिवर्तन की अपनी अंतर्निहित क्षमता का एहसास इसके कार्यान्वयन में शामिल होने वाले कर्त्ताओं की राजनीतिक इच्छा पर निर्भर करता है।

यूरोपीय संसद (ईपी) चुनावों के परिणाम और 2019 में नए कॉलेज ऑफ कमिश्नरों की नियुक्ति एक ऐसी तस्वीर प्रदान करते हैं जो इस संबंध में केवल आंशिक रूप से आशाजनक है। यूरोपीय संघ के स्तर पर, ऐसा प्रतीत होता है कि नौकरशाहों और राजनीतिक समूहों दोनों ने सामाजिक मुद्दों को अति–राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से संबोधित करने के महत्व को पहचाना है। ईपी चुनावों के लिए अपने घोषणापत्र में, सभी यूरोपीय दलों ने सोशल डोमेन को 2014 जितना ही प्रासंगिक या अधिक महत्वपूर्ण माना था, विशेष रूप से यूरोपीय समाजवादी पार्टी, द ग्रीन्स और यूरोपीय फ्री अलायंस (पहले दो सीधे स्तम्भ/पिलर का उल्लेख करते हुए) द्वारा। इसके अलावा, आयोग के नवनियुक्त अध्यक्ष, उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने अपने प्रारम्भिक भाषण और राजनीतिक दिशानिर्देशों में ईपीएसआर का स्पष्ट संदर्भ दिया और इसके कियान्वयन के लिए एक "एक्शन प्लान" अपनाने का उल्लेख किया। हालॉकि, पिलर पहल के अनुसरण में व्यक्तिगत सदस्य राज्यों की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण होगी, जितनी इसके निर्माण और अपनाने में थी और इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर घटनाक्रमों पर भी विचार करना महत्वपूर्ण है।

> सदस्य राज्यों की भूमिका : इटली का केस

इटली में ईपी चुनावों की होड़ में, सामाजिक अधिकारों का यूरोपीय स्तभ, घोषणापत्रों और सार्वजनिक चर्चाओं से अनुपस्थित था, और यूरोपीय संघ के सामाजिक आयामों को मजबूत करने के पक्ष में रही पार्टियों (जैसे यूरोपा/एएलडीई, यूरोपा वर्डे/ग्रीन्स और ला सिनिस्ट्रा/जीयूई/एन जी एल) को चुनावी हार का सामना करना पड़ा। ये ऐसी पार्टियॉ भी थीं जिन्होनें अपने कार्यक्रमों को अपने संबंधित यूरोपीय संघ के पार्टी परिवार के साथ मिलकर तैयार किया और अपने चुनावी अभियान में उन मद्दों को संबोधित किया जो राष्ट्रीय और अति–राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर प्रासंगिक थे। भले ही पिछले ईपी चुनाव शायद ही "यूरोपीकृत" थे बल्कि न केवल इटली में बल्कि सभी सदस्य राज्यों में घरेलू राजनीतिक एजेंडा से प्रभावित थे। चुनावी परिणामों के संदर्भ में इतावली मामला सबसे अधिक प्रतिनिधित्व पूर्ण नहीं हो सकता है। वास्तव में, राष्ट्रवादी और यूरोसेप्टिक दलों के लिए संभावित वोटों का प्रतिकार कर, ए.एल.डी.ई. और ग्रीन्स/ईए ए, दोनों अपने प्रो–ईयू एकीकरण के उद्देश्य के साथ, समग्र रूप से स्ट्रासबर्ग में नई सीटें हासिल करने में कामयाब रहें। हालांकि सामाजिक आयाम जैसे नीति क्षेत्र में, जहाँ सदस्य राज्यों की भूमिका अभी भी प्रमुख है, यूरोपीय संसद से उभरने वाले उच्च राजनीतिक विखंडन यूरोपीय संघ के सामाजिक आयाम के भविष्य को और भी अनिश्चित बना देता है। इसी समय में, यह अति–राष्ट्रीय कर्त्ताओं के लिए विशेष रूप से नए आयोग के लिए एक अवसर पैदा कर सकता है, ताकि पूर्ववर्तियों द्वारा डाली गई नींव पर स्तंभ का निर्माण किया जा सके जिससे सामाजिक क्षेत्र में मजबूत एकीकरण को बढ़ावा दिया जा सके। ■

सभी पत्राचार बीट्राइस केरेला को <beatrice.carella@sns.it> पर प्रेषित करें।

> किसकी बुद्धि कृत्रिम बुद्धि है?

पाओला टुबारो, नेशनल सेंटर फॉर साइंटिफिक रिसर्च, पेरेसि–सैकेल विश्वविद्यालय, फ्रांस द्वारा

केवल वास्तविक लोगों के साथ कृत्रिम बुद्धिमता ''बुद्धिमान'' बन जाती है। साभार : हितेश चौधरी। pixels. com

वर्तमान कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) की असाधारण सफलता वास्तविक पुरूषों और महिलाओं की बड़ी संख्या के ''सूक्ष्म कार्य'' पर टिकी हुई है। वे छवियों में वस्तुओं को टैग करते हैं, वाणिज्यिक प्राप्तियों को अनुलेखित करते हैं, लेख के अंशों का अनुवाद करते हैं और छोटे वाक्यों को बोलकर पढ़ते हुए अपनी आवाज रिकॉर्ड करते हैं। सरल और दोहराव वाले, इन कार्यों में आमतौर पर कम योग्यता की आवश्यकता होती है और कुछ सेंट्स के रूप में भुगतान किया जाता है। श्रमिक, जो औपचारिक रूप से कर्मचारी नहीं हैं, लेकिन जिन्हें उप–ठेकेदार के रूप में कार्यानुसार भुगतान किया जाता है, वे विशेष वेबसाइटों के माध्यम से, उन्हें अपने स्मार्टफोन या लैपटॉप से दूरस्थ रूप से निष्पादित करते हैं।

श्रमिकों की यह आभासी सेना एआई का सहयोग कैसे करती है ? आई तकनीक द्वारा संचालित मुखर सहायक, जैसे एलेक्सा या सिरी का उदाहरण लें। इससे पहले कि वे उपयोगकर्ताओं के अनुरोधों को पहचान सकें, मुखर सहायकों को मानव भाषण के कई उदाहरणों से अवगत कराया जाना चाहिए, जैसे लोगों द्वारा मौसम के बारे में पूछना। इस प्रकार मशीन यह ''सीखेगी'' कि मौखिक ध्वनि–गुणता और स्वरशैली, क्षेत्रीय लहजे या पृष्ठिभूमि में शोर की उपस्थिति के बावजूद उन सब का अर्थ एक ही है और यह बाद में नए उपयोगकर्ताओं द्वारा समान अनुरोधों को पहचान पाने में सक्षम होगा। इसलिए सूक्ष्म श्रमिकों को मौसम के बारे में पूछते हुए अपनी आवाज रिकार्ड करते हुए इन उदाहरणों का उत्पादन करने की आवश्यकता होती है। ए आई निर्माता अपने ''स्मार्ट'' सहायकों का परीक्षण करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे योजना के अनुसार कार्य करें, सूक्ष्म श्रमिकों पर भी निर्भर होते हैं।

>>

यह अमेजॅन था जिसने सर्वप्रथम 2000 के दशक की शुरूआत में अपने ''मैकेनिकल तुर्क'' के साथ लघु कार्य (माइक्रो–वर्क) को लोकप्रिय बनाया। प्रारंभ में एक आंतरिक सेवा के रूप में जिसके द्वारा उसके कर्मचारियों ने उत्पाद लिस्टिंग को साफ में योगदान दिया, अमेजन ने इसे बाद में बाहरी ग्राहकों के लिए खोल दिया, जो बाहर के लघु–कार्मिकों द्वारा निष्पादित करने के लिए एचआइटीज़ (ह्यूमन इंटेलिजेंस टॉस्क) पोस्ट कर सकते थे। अमेजॅन ने अपने इस डिवाइस को ''कृत्रिम कृत्रिम बुद्धिमता'' कहा जो इस बात का समर्थन करती है कि जब मनुष्य कंप्यूटरों से अधिक कुशलतापूर्वक कार्य कर सकते हैं तो उन्हें आउटसोर्स करना सबसे अच्छा है। आज कई एप्लिकेशन और वेबसाइटों ने अमेजन के उदाहरण का अनुगमन किया है और भिन्न प्रकार के प्रस्तावित किए है : उदाहरण के लिए ऑस्ट्रेलियाई एपेन, जर्मन क्लिकवर्कर, अमेरिकन लॉयनब्रिज और माइक्रोवर्कर्स इत्यादि।

ऐसा करने वाले सूक्ष्म–श्रमिक कहाँ हैं ?चूंकि कुछ कार्यों को ऑनलाइन किया जा सकता है, और किसी स्थान पर शारीरिक उपस्थिति की आवश्यकता नहीं होती है (उदाहरण के लिए सलाद की तस्वीर में टमाटर की पहचान करना), कुछ श्रमिक उन देशों में रहते हैं जहाँ श्रम लागत कम होती है। इस अर्थ में, माइक्रो–वर्क की भौगोलिक स्थिति आउटसोर्सिंग के प्रसिद्ध पैटर्न को पुनर्जीवित करती है। हालांकि, अन्य कार्यों के लिए स्थानीय ज्ञान या कौशल की आवश्यकता होती है और इसे सुदूर क्षेत्र में नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए, एक मुखर सहायक के लिए वाक्यों को रिकॉर्ड करने के लिए उन श्रमिकों की आवश्यकता है जो उस देश में जहाँ उस सहायक को बेचा जा रहा है, उसकी भाषा को सही उच्चारण और बोलियों के साथ बोलते हों। निःसंदेह, मैकेनिकल तुर्क के अधिकांश कामगार यूएस के निवासी हैं। सहयोगियों की एक टीम के साथ, हमने फ्रांस, एक और उच्च–औद्योगिक देश, में पिछले साल ''डिजिटल प्लेटफॉर्म लेबर'' (डीपी लैब) नामक अध्ययन की शुरूआत की और वहाँ भी कई माइक्रो–वर्कर्स पाए गए ।

फ्रांस जैसे देश में सूक्ष्म–कार्य करने वाले लोग कौन हैं ?हमारा सर्वेक्षण बताता है ये सिर्फ छात्र या सहस्त्राब्दी के व्यस्क नहीं हैं। 60 प्रतिशत से अधिक फ्रांसीसी सूक्ष्म–श्रमिक 25 से 44 वर्ष के मध्य हैं, और उनके पास ऑनलाईन कार्यों के अलावा एक प्राथमिक नौकरी भी है। वे (उदाहरणार्थ) स्वास्थ्य, शिक्षा और सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में काम करते हैं और आय के अतिरिक्त स्त्रोत के रूप में सूक्ष्मकार्य का उपयोग करते हैं। विडंबना यह है कि सीमित योग्यता की आवश्यकता वाले कार्यों के लिए, सूक्ष्म–श्रमिक सामान्य आबादी की तुलना में बेहतर शिक्षित है : फ्रांस में, 40 प्रतिशत से अधिक के पास स्नातक की डिग्री है। कुल फ्रांसीसी सूक्ष्म–श्रमिकों के आधे से अधिक, पारिवारिक जिम्मेदारी के साथ महिलाएें हैं। इनकी पुरूषों की तुलना में अंशकालिक कार्य करने की संभावना अधिक होती है। ये आय के लिए अधिकतर अपने पति पर निर्भर होती हैं और अपने अधिकतम समय को गृहकार्यो के लिए समर्पित करने हुए, वे काम और घर की गतिविधियों के बीच के अपने सभी ब्रेक का उपयोग ऑनलाइन सूक्ष्म–कार्यों को करने के लिए करती हैं। माइक्रों–वर्क से हुई अतिरिक्त कमाई का स्वागत है, लेकिन इसकी लागत औपचारिक रोज़गार और देखभाल के काम का अतिरिक्त बोझ है जो उन्हें अवकाश के लिए बहुत कम समय देता है।

माइक्रो–वर्क से एक व्यापक, यद्यपि छिपी हुई, आर्थिक असुरक्षा की समस्या उजागर होती है। 20 प्रतिशत से अधिक फ्रांसीसी सूक्ष्म–श्रमिक गरीबी सीमा के नीचे रहते हैं, जिसकी देश की आधी औसत आय के रूप में गणना की जाती हैं, जबकि सामान्य आबादी का 10 प्रतिशत से कम इस स्थिति में है। इस पृष्ठभूमि में, ऑनलाइन माइक्रो–टास्क, मुकाबला करने का एक प्रयास है : हमारे सर्वेक्षण के उत्तरदाताओं ने व्यापक रूप से यह कहा है कि सूक्ष्म–कार्य करने का एक कारण धन की आवश्यकता है। हालांकि, फ्रांस में माइक्रो–वर्क (संयुक्त रूप से सभी प्लेटफार्मो) से औसत मासिक आय बहुत ही विषम रूप से वितरित है। ''अंशकालिक'' सूक्ष्म श्रमिकों की बड़ी संख्या जो छिटपुट रूप से औसतन प्रति माह लगभग 21 यूरो तक कमाते हैं, वहीं कुछ ''बहुत सक्रिय'' लोग सूक्ष्म–कार्य को पूर्णकालिक समय कर 1500–2000 यूरो प्रतिमाह तक कमाने का प्रबंधन कर पाते हैं (या लगभग इतना ही)।

यदि माइक्रो–वर्क में कम से कम आंशिक रूप से उन लोगों का समर्थन करने की क्षमता है, जिनके पास मानक–नौकरी बाज़ारों में कम विकल्प हैं या जिन्हें लचीली कामकाजी व्यवस्था की आवश्यकता ळे (उदाहरण के लिए ऊपर उल्लेखित देखभाल के कर्तव्यों के कारण), तो वही यह विशिष्ट जोखिमों को भी स्वयं में समेटे है। माइक्रो–वर्क सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल या सेवानिवृत्ति लाभों का कोई रूप प्रदान नहीं करता है। वर्तमान में एक पेशेवर करियर के हिस्से के रूप में माइक्रो–वर्किंग अनुभव का लाभ उठाने का कोई तरीका नहीं है : उदाहरण के लिए, एक वेबसाइट पर अर्जित प्रतिष्ठा दूसरे में स्थानांतरित नहीं होती है। मनोवैज्ञानिक रूप से, माइक्रो–वर्क व्यथित करने वाला हो सकता है। जब, जैसा कि अक्सर होता है, व्यष्टि श्रमिक ग्राहकों और/या उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के उद्देश्यों को नहीं जानते हैं, उनकी गतिविधि अर्थ खो देती है। उदाहरण के लिए, हमारे उत्तरदाताओं में से एक, जो एआई के प्रति उसके योगदान से अनभिज्ञ थी ने सोचा कि ''आखिर क्यों मुझे चित्रों में टमाटर के चारों ओर गोला खींचनें के लिए कहा गया है ?'' इसके अलावा, जब किसी ग्राहक द्वारा कार्यों को अस्वीकार कर दिया जाता है (और भुगतान नहीं किया जाता है), तो व्यष्टि श्रमिकों के पास इस निर्णय के खिलाफ अपील करने या कम से कम यह जानने का कोई साधन नहीं होता है कि ऐसा निर्णय क्यों लिया गया था। दूसरी महत्वूपर्ण बात है कि वे एक दूसरे से पृथक रूप में काम करते हैं। वे घर से माइक्रो–वर्क करते है और ऑफिस कॉफी क्षेत्र जैसी कोई चीज उन्हें उपलब्ध नहीं होती है : न ही माइक्रो–वर्किंग वेबसाइटें कम से कम ऑनलाइन मिलने के लिए डिजिटल स्पेस उपलब्ध कराती हैं। इस तरह के बुनियादी ढांचे को बनाने के लिए अक्सर कार्यकत्ताओं या ट्रेड यूनियनों की पहल की आवश्यकता होती है।

क्योंकि सूक्ष्म–कार्य एआई उद्योंगों के अत्याधुनिक विकास की सेवा में सहयोगी हैं, और क्योंकि ये कार्य मुख्य रूप से उन लोगों द्वारा किए जाते हैं जो अरक्षितता की स्थिति में होते हैं, इसलिए संभावित समाधानों के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू करना महत्वपूर्ण है। माइक्रो–वर्किंग वेबसाईट और एप्स अपनी पारदर्शिता को सुधारने और नेटवर्किंग और सहायता सेवाओं की पेशकश करके, अपना काम कर सकते हैं। नीति–निर्माताओं और यूनियनों के पास असामान्य श्रमिकों के संरक्षण के नए रूपों को तैयार करने के लिए बहूत कुछ है। ■

सभी पत्राचार पाओला टूबारो को <paola.tubaro@lri.fr> पर प्रेषित करें।

> महान नवीनताओं का एक संग्रहालय

लेवियो स्केटोलिनी, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ रियो डी जेनेरो (UERJ), ब्राजील द्वारा

क्रिप्टो करेन्सी अधिक लोकतांत्रिक वित्तीय व्यवस्था के लिए उच्च आशाएं लेकर आई।
साभार : worldspectrum/pexels.com

जो पूंजीवाद की सभ्यतामूलक सक्षमताओं के संदर्भ में थोड़े संशयात्मक विचार रखते हैं, वे तथाकथित डिजिटल या सूचना युग जैसी तकनीकों के आसपास के वादों को संदेह के रूप में देखते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, बिग डेटा इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), ब्लॉकचेन, क्रिप्टोकरेंसी और यहाँ तक कि स्मार्टफोन हमारे शरीरों और के आतमा के नए एक्सटेंशनस को आने वाले नए समय के संकेत के रूप में नहीं अपितु भविष्य के समापन के रूप में माना जाता है। इस परिकल्पना की पुष्टि करने के लिए अथवा इस बात को प्रमाणित करने कि ऐसा होगा, एक बड़े एवं काफी पुराने प्रश्न का उत्तर नहीं देता है : क्यों हम नए समाधान और संरचनाओं को लगातार उन आदर्शों से दूर देखते हैं जिन्होंने उन्हें जीवन दिया और अंततः एक नई आड़ में अतीत के पुनर्गठन को समाप्त कर रहे हैं ?

इस मुद्दे को संबोधित करते समय विभिन्न आयाम हैं; मैं एक ठोस और जरूरी बात पर जोर देना चाहूँगा, जो इस तरह की बहस में आमतौर पर उपेक्षित सामाजिक जड़ों को स्पष्ट करता है। विचारों के दायरे में, दुनिया भर के राज्यों की अनुमति और समर्थन के साथ, 2008 के आर्थिक संकट को परिणत करने वाली वित्तीय प्रणाली द्वारा अचिंतनीय दुष्प्रयोगों के खिलाफ, पहली व्यापक रूप से फैली हुई क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन, एक अचूक उपाय होगी। वास्तव में, विरोध के सांकेतिक रूप में, 3 जनवरी, 2009 को बैंकों के लिए दूसरी बेल आउट जारी करने की यूनाइटेड किंगडम सरकार की मंशा की घोषणा करने वाली एक टाइम्स रिपोर्ट में बिटकॉइन के स्त्रोत कोड में इसे लॉन्चिंग दिवस के टाइमस्टैम्प सबूत के रूप में अंकित किया गया था। लेकिन इतना ही नहीं, प्रौद्योगिकी की वास्तुकला निःसंदेह इस प्रकार निर्मित की गई थी कि यह 'मध्यस्थों' द्वारा नियंत्रित वित्तीय प्रणाली की ताकत

>>

को उनसे लेकर इसे आम लोगों, जनता में वितरित कर दे।

पारंपरिक वित्तीय प्रणाली के साथ समस्या यह है कि यह दोनों लेन–देन सत्यापन और मुद्रा जारी करने के लिए केंद्रीयकृत संस्थानों में विश्वास पर मौलिक रूप से निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में, यह निजी और केंद्रीय बैंक जैसे वित्तीय संस्थान ही हैं, जो गारंटी देते हैं कि A के पास एक निश्चित राशि है और B को इस राशि के स्थानांतरित होने के बाद, वह फिर से इसका उपयोग नहीं कर सकता है। हम इन प्रसंगोचित कार्यों को करने के लिए वित्तीय संस्थानों को अधिकार सौंपते हैं और आशा करते हैं कि वे अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य प्रदर्शन करेंगें। हालांकि आजकल यह ज्यादातर लोगों के लिए एक समस्या नहीं है क्योंकि यह दैनिक जीवन से गुप्त और दूर रहता है, यह पोलिस या शहरी राज्य की सरकार के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है, विशेष रूप से एक ऐसे सामाजिक गठन में जहां विनिमय के लिए सब कुछ उत्पन्न होता है और अंत में, फिर धन के लिए।

इस अर्थ में, बही–खातों का एक ऐसे विकेन्द्रीकृत नेटवर्क बनाने की संभावना जो हर उस व्यक्ति के लिए खुला हो जो इसमें संलग्न होना चाहता हो, जहाँ सभी भाग लेने वाले नोड्स के बीच एक आम सहमति समन्वय तंत्र के माध्यम से लेनदेन रिकॉर्ड और मान्य किए जाएँ, एक काफी पर्याप्त और दिलचस्प विचार लगता है। इससे भी अधिक अगर हम यह मानते हैं कि ये नेटवर्क दोष सहने योग्य हैं (एक या अधिक नोड्स विफल होने की स्थिति में भी ठीक से संचालित होगा), जिसमें अंतर्निहित अपरिवर्तनीय मुद्रा निर्गम है (21 मिलियन सिक्कों तक सीमित), लोगों को इंटरनेट एक्सेस के साथ कहीं से भी, लगभग तुरंत लेनदेन की अनुमति देता है और जो ग्यारह साल से अधिक बड़े हमलों के प्रयासों के तहत, बिना किसी बड़े संरचनात्मक नुकसान के काम कर रहा है। वस्तुतः, बिटकॉइन के पीछे वितरित व्यवस्था समन्वय की वास्तुकला इतनी खूबसूरती से की गई थी कि यह ब्लॉकचेन नामक अन्य कार्यान्वयन की एक श्रृंखला के साथ एक स्टैंड–अलोन तकनीक बन गई।

2019 में, 225 बिलियन डॉलर बाजार मूल्य के साथ बिटकॉइन सबसे ऊपर था और एक साल की अवधि में इसके मूल डिजिटल नेटवर्क में 120 मिलियन से अधिक लेनदेन दर्ज किए गए थे। क्या हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि यह वित्तीय प्रणाली में क्रांति ला रहा है और आम आदमी को शक्ति प्रदान कर रहा है ?इतना शीघ्र नहीं। एक अशांत और अनिच्छुक शुरूआत के बाद 2014 के बाद से, वित्तीय संस्थानों, निगमों और बड़े बाजार के खिलाड़ियों ने क्रिप्टोकरेंसी की ओर अपना रूख बदला और प्रौद्योगिकी में बड़े पैमाने पर निवेश करने और इसके अनुसंधान की शुरूआत करी। यह आदर्श कि नेटवर्क में अपने निजी कम्प्यूटर के साथ आम उपयोगकर्त्ताओं का बहुमत होगा, और उस पर उनका नियंत्रण होगा को वास्वविकता से भारी चुनौती मिली। आजकल, बिटकॉइन ''खनन'' को विशाल ''खेतों'' द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जो कि ऐसी बड़ी कंपनियों के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द है, जिनके पास मशीनरी, ऊर्जा और संसाधन हैं या दूसरे शब्दों में जिनके पास पूंजी है ताकि आवश्यक ''प्रूफ ऑफ वर्क'' की प्रकिया को सम्पादित किया जा सके। अंत में उल्लेखनीय है कि फेसबुक ने हालिया घोषणाओं में दुनिया के कुछ सबसे बड़े निगमों एजिसमें वित्तीय संस्थान सम्मिलित हैए के साथ साझेदारी में अपनी खुद की क्रिप्टोकरेंसी बनाने की इच्छा प्रकट की है। इसका नाम लिब्रा होगा तथा बिटकॉइन और अन्य क्रिप्टो जहाँ विफल हुए, वहीं इसका उद्देश्य इसे लोकप्रिय बनाना होगा। इसका मतलब है कि हम दुनिया के सबसे बड़े सोशल मीडिया प्लेटफार्म को देखने के कगार पर हैं, जो दस साल से अधिक अवधि से अरबों लोगों के डेटा का अनुचित रूप से विनियोजित कर रहा है। ऐसा वह प्रमुख निगमों से संबद्ध होकर पहली बार एक सही मायने में वैश्विक केंद्रीय बैंक जो निजी स्वामित्व और अपने उपयोगकर्ताओं के बारे में सर्वज्ञ होगा, का निर्माण करेगा।

यहाँ हम विवेचनात्मक विश्लेषण के महत्व को दुनिया में अपनी कार्यवाही को पर्याप्त रूप से उन्मुख करने के साधन के रूप में देख सकते हैं। जैसा कि पहले बताया गया था एक व्यावहारिक मूल्यांकन से वर्तमान वित्तीय प्रणाली की समस्याऐं मुख्य रूप से केंद्रीयकृत संस्थानों पर ''मध्यस्थ'' के रूप में भरोसा करने से संबंधित हैं, इसे सुधारने और एक खुले विकेंद्रीकृत ''ट्रस्ट के नेटवर्क'' लागू करने के लिए एक व्यावहारिक समाधान उभरता है। हालांकि अगर हमारी वित्तीय प्रणाली की समस्याऐं उसके स्वरूप से नहीं बल्कि विषय–वस्तु से आती है तो ?मेरा मतलब है कि हमारे समय के सबसे प्रमुख सामाजिक मध्यस्थता लक्षण–'धन' पर निर्भर हो, कोई ''मध्यस्थहीन समाज'' का निर्माण करने की कोशिश कैसे कर सकता है ? क्या यह सर्वप्रथम धन नहीं था, जिसने सत्यापन के केंद्रीकृत संस्थानों के विकास और बढ़त को आवश्यक बना दिया था ?क्या यह धन के अंतहीन संचय का आंतरिक तर्क नहीं है जो संकेदण और केंद्रीयकरण उत्पन्न करता है ?

मेरा दावा यह नहीं है कि बिटकॉइन या हजारो नई क्रिप्टोकरेंसी बेकार हैं, बल्किं यह है कि अगर सामाजिक संगठन के पूंजीवादी रूप को अनुदत्त मान लिया जाता है, अथवा अगर धन के माध्यम से समाजोपयोगिता के निहितार्थ को परिप्रेक्ष्य में नहीं रखा जाता है, तो यह नई प्रौद्योगिकी अतीत को निरंतर पुनर्गठित करने के लिए अभिशिप्त रहेंगी, एक ऐसी आवश्यक सामाजिक परिस्थिति जिसके बिना पूंजी स्वयं को पुनः उत्पादित नहीं कर सकती है। मूल्य के मूल्यवर्धन के विरोधीभासी गतिशीलता को स्पष्ट करके जिसमें धन को अधिक धन बनाने की आवश्यकता पर बल है। हमारे पास समस्याओं का बेहतर निदान हो सकता है और वहाँ से, शायद एक नए जीवन के उत्पादन की भौतिक प्रकिया; एक अलग भविष्य के लिए बेहतर समाधान, संरचनाएँ या प्रौद्योगिकियाँ उभर सकती हैं।

सभी पत्राचार लेवियो स्केटोलिनी को <leviosj@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> एक धारणीय डिजिटलीकरण को क्या चाहिये?

फेलिक्स सुहलमान–फॉल, जर्मनी द्वारा

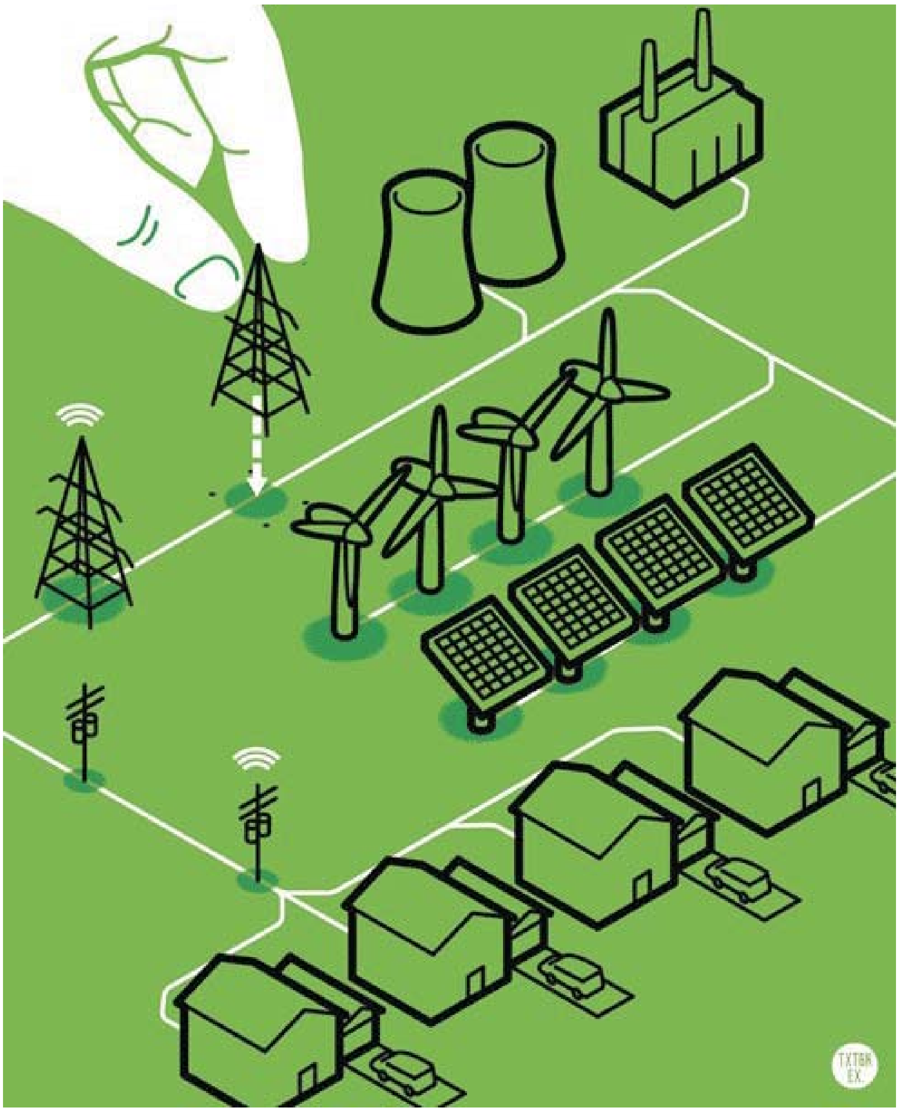

स्मार्ट वितरण के लिए अक्षय उर्जा स्त्रोतों के डिजीटलाइजेशन की आवश्यता होती है। साभार : जेम्स प्रोवोस्त/फ्लिकर/ कुछ अधिकार सुरक्षित

कई चीजें हमें दिखाती हैं कि डिजिटलीकरण का क्या मतलब है। एक रिकॉर्ड स्टोर का उदाहरण लीजिए । जब हम रेडियो पर कुछ अपना पसंद का सुनते थे, या किसी मित्र ने हमें सुझाया और तब हमने रिकॉर्ड स्टोर जा कर एक संगीत का माध्यम खरीदा। एक भौतिक चीज, जो हमारी संपत्ति बन गई। एक साधारण सी यह घटना शायद ही आजकल दिखायी देती है। एक प्लेटफॉर्म बिजनेस मॉडल पर आधारित, स्ट्रीमिंग सेवायें, लाखों गानों तक पहुंच प्रदान करती हैं और बीते काल के रिकॉर्ड स्टोर प्रतिस्थापित करती हैं। संगीत उद्योग में काफी बदलाव आया है। इस परिवर्तन की एक बडा कारण उत्पादन के केंद्रीय साधन के रूप में डेटा है। प्लेटफॉर्म बिजनेस मॉडल अधिकतर मामलों में अपने उपयोगकर्ताओं के बारे में बहुत सारी जानकारी इकठ्ठा करके काम करता है। उदाहरण के लिये, हम किस शैली का संगीत सुनते हैं, कब, कितनी बार, और कहां? इसके अलावा: हमारा लिंग क्या है? क्या हमारे बच्चे हैं? हम कहां रहते हैं?हमारी घरेलू आय क्या है?

यही जानकारी है जो अधिकतर प्लेटफॉर्मस को अत्यधिक सफल बनाती है: वे हमारी पसंद और मनोभावों को जानते है और हमारे व्यवहार की भविष्यवाणी कर सकते हैं। उनकी सेवायें आकर्षक हैं क्योंकि वे हमारे व्यक्तित्व के अनुकूल हैं। इस एकत्रित जानकारी को प्लेटफॉर्मस विज्ञापन एजेंसियों को भी बेचते हैं, जो अब उपभोग की व्यक्तिगत रूप से लक्षित संभावनाओं को प्रस्तुत करती हैं। डिजिटलीकरण का मतलब क्या है, यह पूंजीवाद और प्रौद्योगिकी के मध्य एक मजबूत संबंध का एक बडा हिस्सा है।

>>

यह सीधे इस तथ्य से जुडा है कि डिजिटलीकरण को धारणीयता के साथ अक्सर जुडता हुआ नहीं देखा जाता है। 1987 की संयुक्त राष्ट्र की प्रसिद्ध ब्रुंडलैंड रिपोर्ट बताती हैः "धारणीय विकास वह विकास है जो आने वाली पीढीयों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता के साथ समझौता किये बगैर वर्तमान पीढी की जरूरतों को पूरा करता है।" इसलिये, हम, हमारे बच्चों, और उनके बच्चों को "एक अच्छा जीवन" जीने का अवसर मिलना चाहिये। इसका क्या अर्थ है? यह निश्चित रूप से एक सांस्कृतिक प्रश्न है। मानवतावाद और प्रबुद्धता के विचारों से प्रभावित पश्चिमी समाज में, निश्चित रूप से लोकतांत्रिक बुनियादी अधिकार, आत्मनिर्णय, विविधता, निजता, एक स्वस्थ वातावरण, और "स्वतंत्रता" जैसे मूल्य शामिल थे .इनका जो भी अर्थ हो। फिर भी, इनमें से अधिकांश बिंदु डिजिटलीकरण से प्रभावित हैं, जो एक बडी मात्रा में आर्थिक हितों से संचालित हैं। उदाहरण के लिये निजता उन प्लेटफॉर्मस के द्वारा सुनिश्चित नहीं की जा सकती जिनकी सफलता हमारे बारे में सब कुछ जानने की आवश्यकता पर आधारित है। इसके अलावा, एक स्वस्थ वातावरण कभी भी आर्थिक हितों का उददेश्य नहीं रहा है और यह डिजिटल युग में नहीं बदला है।

डिजिटलीकरण के लिए उपकरणों के निर्माण और बुनियादी ढांचे, कच्चे माल के खनन और परिवहन की आवश्यकता होती है। डिजिटल उपकरणों का सिर्फ उपयोग बिजली की वैश्विक मांग के लगभग 10 प्रतिशत ऊर्जा के उपभोग की मांग पैदा कर देता है। यदि प्रवृति की यही गति रही, तो यह 2025 में 20 प्रतिशत तक बढ जायेगी। नतीजतन, सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का उत्पादन और उपयोग मानव निर्मित कार्बन.डाइऑक्साइड के 3.7 प्रतिशत उत्सर्जन के लिये जिम्मेदार है और यह 2025 तक 8 प्रतिशत तक बढ जायेगा। कच्चे माल का खनन मूल देशों में धारणीयता से संबंधित विशाल समस्यायें पैदा करता है। कोंगो लोकतांत्रिक गणराज्य इस संबंध में एक बहुत गंभीर उदाहरण है। कोंगो टंगस्टन, टेंटेलम, टिन, कोबाल्ट, और सोने की आपूर्ति करने वाले सबसे महत्वपूर्ण देशों में से एक है। ये खनिज डिजिटल हार्डवेयर के निर्माण के लिये अपूरणीय हैं। बेशक, खनन कटाव, जहरीले भूजल, और प्रजातियों के विलुप्तीकरण जैसी सामान्य पारिस्थिकीय समस्याओं का कारण बनता है। हालांकि, सामाजिक स्तर पर समस्यायें और अधिक बडी हैंः एक खूनी गृहयुद्ध ने इस देश को हिला रखा है। विभिन्न विद्रोही समूह जिन्होंने 30 सालों तक इस युद्ध को चलाया है लाखों नागरिकों के हताहत होने के जिम्मेदार हैं । खानें. जो डिजिटल हार्डवेयर के लिये इन अपूरणीय खनिजों को पूर्ति करती हैं. इन्हीं विद्रोही समूहों के हाथों में हैं जो इन खनिजों की बिक्री के माध्यम से अपने हथियारों के लिये भुगतान करते हैं। यही कारण है कि इन्हें "संघर्ष खनिज" कहा जाता है। भुखमरी, यौन हिंसा, बीमारियां, आधुनिक दासता, बाल सैनिक इसके दुखद परिणाम हैं।

फिर भी, अच्छी खबरें भी हैंः धारणीयता के कुछ क्षेत्रों को सिर्फ डिजिटलीकरण के उपकरणों का इस्तेमाल करके प्राप्त किया जा सकता है। इसका पहला उदाहरण अक्षय ऊर्जा के उपयोग की तरफ बदलाव है। अक्षय ऊर्जा के स्त्रोंतों का कुशल उपयोग करने के लिये, डिजिटलीकरण के आसपास कोई रास्ता नहीं है क्योंकि ऊर्जा उत्पादन विकेंद्रीकृत है, इसकी भविष्यवाणी करना मुश्किल है, दिन में विभिन्न समयों पर घटित होता है, और कभी–कभी छोटी मात्रा में उत्पादन होता है। इस अस्थिर ऊर्जा का अधिकतम उपयोग करने के लिये भंडारण और वितरण बहुत तेजी से होना चाहिये। इसके अलावा, यह सिर्फ आत्म–शिक्षण कंप्यूटर तकनीक की सहायता से संभव है।

एक और उदाहरण धारणीय परिवहन है। जीवाश्म ईंधन आधारित परिवहन, शहरी केंद्रों में ट्रैफिक जाम, और सूक्ष्म धूल प्रदूषण से दूर हटने के लिये यात्री कारों में भारी कमी की आवश्यकता है। हालांकि, परिवहन के वैकल्पिक साधनों की तुलना में संबंधित समस्याओं के साथ साथ अक्सर एक बडा सूचना अंतर होता है। यहां विभिन्न प्रदाता है, विभिन्न मूल्य निर्धारण मॉडल है, विभिन्न यात्रा समय, आदि हैं। एक सहज अवलोकन को इकठ्ठा करना मुश्किल है। परंतु अब जब स्मार्टफोन्स सर्वव्यापी है इस समस्या का एक आसान समाधान है। जर्मनी में कई शोध परियोजनायें स्थानीय सार्वजनिक परिवहन प्रदाताओं के द्वारा एप्स को बढाकर और इन एप्स में क्षेत्र के अन्य प्रदाताओं के बारे में सारी प्रासंगिक जानकारीं जोडकर इन मुददों को संबोधित करती हैं। अब कोई भी व्यक्ति कार शेयरिंग प्रदाताओं, बाइक किराया कंपनीज, बसों, रेलों और आदि की तुलना कर सकता है। कोई यह देख सकता है कि उनकी यात्रा में कितना समय लगेगा, कौन सा साधन सबसे सस्ता है, विभिन्न साधनों को कैसे जोडा जा सकता है, और इन एप्स के माध्यम से बुकिंग और भुगतान भी किया जा सकता है। डिजिटलीकरण ने यात्रा धारणीयता के साथ करना काफी आसान बना दिया है।

> यह हमें कहां लाकर छोडता है?

अनगिनत अध्ययन दिखाते हैं कि धारणीयता समाज के लिये महत्वपूर्ण समझी जाती है। हालांकि, धारणीयता की तरह कार्य करना बिल्कुल अलग बात है। लोग अपनी कार को छोड़ने और हवाईजहाज से यात्रा करने को बंद करने से बचने की प्रवृति रखते हैं। यहां राजनीति की अनिवार्यता आती है। यहां डिजिटल उपकरणों की मरम्मत पर करों को कम करने और ऐसे कानून कि सभी इलेक्ट्रोनिक उपकरण मरम्मत योग्य होने चाहिये जैसे कई आसान कदम हैं। परंतु सबसे बडा कदम कच्चे माल के लिये एक उचित कीमत देना होगा। यहां खनन द्वारा उत्पन्न पारिस्थिकीय और सामाजिक विनाश के लिये वित्तिय क्षतिपूर्ति होनी चाहिये।इसके गंभीर परिणाम सामने आयेंगें परंतु यह संसाधनों पर उच्च करों के माध्यम से पोस्ट–ग्रोथ अर्थव्यवस्था की ओर का मार्ग भी प्रशस्त करेगा।

एक डिजिटलीकरण जो अपने उत्पादन और जीवन जीने के अधिक टिकाऊ बनाने के अपने अवसरों का उपयोग करता है और अधिक ऊर्जा खपत और प्रकृति के विनाश के जोखिमों को टालता है हालांकि यह एक साझा प्रयास है। स्मार्ट कानून इसका एक मात्र हिस्सा है। व्यक्तियों को राजनीतिक जुडाव, मतदान और अपनी जीवनशैली के माध्यम से इसका समर्थन करना चाहिये। सततता पर्याप्तता में निहित है, परंतु डिजिटलीकरण खपत की सीमा को कम करता है। हमें इस तथ्य पर पैनी नजर रखनी होगी। ■

सभी पत्राचार फेलिक्स सुहलमान–फॉल को <kontakt@suehlmann-faul.com> पर प्रेषित करें।

> द फेयरवर्क फाउंडेशन: गिग अर्थव्यवस्था पर एक्शन रिसर्च

सुजाना कटटा, कैली हाउसन और **मार्क ग्राहम,** ऑक्सफोर्ड इंटरनेट इंस्टीटयूट, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूके के द्वारा

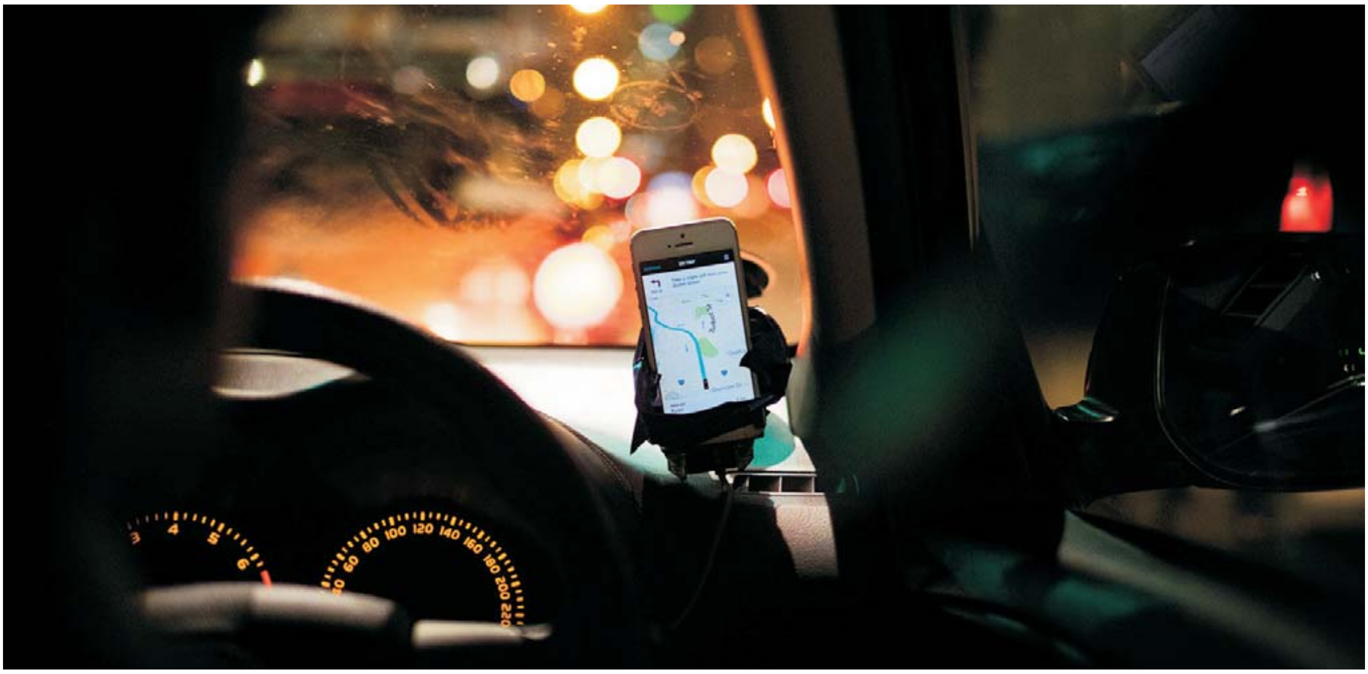

पिछले एक दशक में वाणिज्यिक सहकर्मी सह–सवारी परिवहन का एक लोकप्रिय साधन बन गया है।
साभार : नोएल टॉक/फ्लिकर/CC By-NC 2.0

ओला कैब्स, एक भारतीय यात्रा शेयरिंग फर्म, दुनिया भर में कंपनियों की बढती संख्या में से एक है, जिसका बिजनेस प्रारूप श्रम मांग और आपूर्ति के मिलान के लिये डिजिटल प्लेटफार्म के इस्तेमाल पर निर्भर रहता है। विशेष रूप से, ओला की मोबाइल एप्लिकेंशंस यात्रियों को परिवहन की आवश्यकता होने पर निकटतम चालक से जुडने देती है। ओला जैसे डिजिटल लेबर प्लेटफार्मस को आमतौर पर "गिग अर्थव्यवस्था" के रूप में इंगित किया जाता हैं, जहां कंपनियां एक डिजिटल प्लेटफार्मस के माध्यम से (अक्सर गुप्त रूप से संरक्षित एल्गोरिथ्म पर आधारित). नौकरी ढूंढने वालों के साथ अल्पकालिक छोटे कार्य करने के लिये सामयिक और अंशों के आधार पर अनुबंध करते हैं। एल्गोरिथ्म रूप से विभाजित और व्यवस्थित गिग अर्थव्यवस्था के रोजगार प्रारूप, यात्रा शेयरिंग से लेकर सामान वितरण तक, घरेलू कार्य से लेकर सामान्य स्वतंत्र कार्य करने तक, अनेकानेक प्रकार की आर्थिक गतिविधियों में विशाल पैठ बना चुका है।

एक विशिष्ट गिग अर्थव्यवस्था फर्म, ओला, "ड्राइवर–सहभागियों" को कंपनी के लिये अपनी कार चलाने के लिये भर्ती करने के लिये स्वतंत्रता और लचीलेपन के आख्यानों को लागू करती है। गिग अर्थव्यवस्था के बुनियादी मंत्रों को ध्यान में रखते हुये, ओला अपनी वेबासाइट पर आंकाक्षी ड्राइवरों को "लचीले काम के घंटे", "काम की स्वतंत्रता" और "सम्मान कमाने" की क्षमता की गांरटी देती है। लोगों को अपनी कार ओला के बैनर के तले चलाने के लिये अनुमति देने के अलावा, कंपनी जिनके पास अपनी कार नहीं है उनको प्रतिदिन 10–16 डालर भुगतान के बदले कार लीज/किराये पर देती है । आंकाक्षी ड्राइवर एक अप्रतिदेय अग्रिम भुगतान (करीब 56 डालर) और जमानत राशि (293 और 432 डालर के बीच) जमा कराने के बाद "शून्य–जोखिम पर कार'' चला सकते हैं।

ओला के आख्यान में, ड्राइवर–सहभागी स्व–सशक्त अति उद्यमी होते हैं जो पारंपरिक काम की बाधाओं से मुक्त हैं, और दिलचस्प कार्यों के मध्य झूलते रहते हैं। गिग कार्य प्रकट तौर पर स्व–प्रबंधन, मौजूदा परिसंपत्तियों पर पूंजीकरण, और परिवार एवं अन्य गतिविधियों के लिये अधिक समय की आकर्षक संभावनायें प्रस्तुत करता है। इसका

>>

आकर्षण श्रमिकों को अपने कार्य और निजी जीवन के कई पहलुओं पर अधिक नियंत्रण प्रदान करने पर टिका है। हालांकि वास्तविकता, इस वादे से अक्सर काफी दूर होती है। मानवीय मालिक के द्वारा प्रत्यक्ष प्रबंधन एक अधिक छिपे हुये और एल्गोरिथ्म–सक्षम नियंत्रण के व्यापक रूपों द्वारा प्रतिस्थापित होता है।

दिसम्बर 2019 में, द इकोनॉमिक टाइम्स ने रिपोर्ट किया कि ओला ने मुंबई के एक ड्राइवर–सहभागी को निलंबित कर दिया क्योंकि एक यात्री ने शिकायत की कि वह कार चलाते हुये सो गया था और वे लगभग टकराने वाले ही थे। ड्राइवर ने कहा कि वह पिछले बीस घंटों से अधिक से कार चला रहा था। सतही तौर पर, उसको निलंबित करने की ओला की कार्यवाही यात्री और चालक की सुरक्षा सुनिश्चित करने का एक तर्कसंगत उपाय है। हालांकि, यह प्रकरण यात्रा–शेयरिंग क्षेत्र, और व्यापक गिग अर्थव्यवस्था की अंतर्निहित संरचनात्मक विशेषताओं की एक श्रृंखला जैसे खराब वेतन, असुरक्षित कार्य स्थितियां, और नियत प्रक्रिया की कमी, की द्योतक है। रिपोर्ट एक श्रमिक संगठन के एक प्रतिनिधि को उद्धरण देती है: "यदि वे (14–15 घंटे जैसे) लंबे समय काम नहीं करते हैं, वे ओला, उबर, आदि की प्रतिदिन की किराये की राशि नही दे सकते हैं।"

गिग अर्थव्यवस्था प्लेटफॉर्मस् अक्सर यह कहते हैं कि वे सिर्फ तकनीकी कंपनियां हैं जो श्रम के विक्रेता और जो उसको खरीदना चाहते हैं, को जोडती हैं। न्यायिक क्षेत्रों में, इस तर्क से, ये प्लेटफॉर्मस् गिग कर्मचारियों को कर्मचारीयों की बजाय "स्वतंत्र ठेकेदारों", "स्वरोजगार व्यक्ति" या अन्य समकक्ष के रूप में वर्गीकृत करते हैं। यह वर्गीकरण नियंत्रण के व्याप्त संबंध को झुठलाता है, जहां प्लेटफॉर्मस् कार्य की शर्तें और भुगतान को निर्धारित करते हैं और नेटवर्क प्रशासन के अत्यधिक प्रभावी तरीकों को अपनाते हैं। इस संविदात्मक इंद्रजाल का परिणाम यह होता है कि गिग कर्मचारियों की बढती संख्या श्रम कानूनों के अंतर्गत नहीं आती है और इसलिये ये सुरक्षाओं और लाभों के लिये अपात्र होते हैं, जैसे कि बीमारी और छुटटी का वेतन, और पेंशन योगदान। प्लेटफॉर्मस् लागतों को जैसे कि वाहन का किराया और रखरखाव, बीमा, और ईंधन को कर्मचारियों को आउटसोर्स करते हैं । कर्मचारी करों की गणना और उनका भुगतान करने के लिये जिम्मेदार हैं। काम के घंटे चुनने का कल्पित लचीलापन, घटते भुगतान की प्रवृति (तेजी से अपने कर्मचारी बल का विस्तार करने वाले प्लेटफॉर्मस से प्रेरित) और एक खेलकृत डिजिटल इंटरफेस जो कि उनको ज्यादा पुरस्कृत करता है जो अधिक काम करतें हैं, से कमजोर हो जाता है। इसके अलावा, श्रम शक्ति की अधिक आपूर्ति, कार्य उपलब्धता की अवधियों में कमी और काम के बीच लंबे अवैतनिक इंतजार के कारण प्लेटफॉर्मस् काम के न्यूनतम मात्रा की गांरटी देने के किसी दायित्व के तहत नहीं हैं। यही श्रम शक्ति के इसी अधिक आपूर्ति का मतलब है कि ग्राहकों को मुश्किल ही चाही सेवाओं के लिये लंबा इंतजार करना पडता है। संयुक्त रूप से ये सभी कारक कर्मचारियों को लंबी पारियों में काम करने के लिये मजबूर करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे अधिक जोखिमों और संभावित रूप से स्वयं को और दूसरों को खतरे में,जैसा कि नींद वाले ओला चालक के मामले में हुआ, डालते हैं।

ना ही ओला, और ना ही भारतीय संदर्भ अद्वितीय हैं – कम वेतन, अधिक काम, और जोखिमों से सामना जैसे समान मुददे नियमित रूप से वैश्विक स्तर पर गिग अर्थव्यवस्था में उभरते हैं। ये कर्मचारियों की रोजगार प्रस्थिति के नियमन और प्लेटफॉर्मस के दायित्वों को लक्षित करते हुये इन स्थितियां को कई तरीकों से संबोधित किया जा सकता है और किया जा रहा है। सामूहिक क्रिया और श्रमिक संगठन और सार्वजनिक जागरूकता बढाने और न्यायपूर्ण प्रथाओं को प्रोत्साहित करने वाले तृतीय पक्षीय प्रयास इस के आधार में रहें हैं।

यह परवर्ती भावना के संदर्भ में था कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में स्थित एक एक्शन शोध परियोजना फेयरवर्क फांउडेशन की स्थापना 2018 में गिग अर्थव्यवस्था में अनुचित प्रथाओं को संबोधित करने के लिये काम कर रहे सामाजिक वैज्ञानिकों और श्रम वकीलों के मध्य एक सहभागिता के रूप में हुई । अफ्रीका, एशिया, और यूरोप के विभिन्न देशों से करीब 300 से भी अधिक गिग कर्मचारियों से जुटाये गये साक्ष्यों पर आधारित, हमने न्यायोचित प्लेटफार्म कार्य के पांच सिद्धांत विकसित किये: उचित वेतन, उचित स्थितियां, उचित अनुबंध, उचित प्रबंधन और उचित प्रतिनिधित्व।

हम गिग अर्थव्यवस्था के प्लेटफार्मस का इन सिद्धांतों के संदर्भ में मूल्यांकन करने के लिये वार्षिक चक्र के आधार पर शोध (श्रमिकों और प्लेटफार्म प्रबंधकों के साक्षात्कारों सहित) करते हैं। फिर हम उन्हें 10 में से अंक देते हैं और उनके अंकों को व्यक्तिगत अंकतालिका और तुलनात्मक रूप से "न्यायपूर्णता" की लीग तालिका में दोनों में प्रदर्शित करते हैं। यह करने के लिये, हमने स्थानीय परिस्थितियों पर आधारित पांच सिद्धांतों में से प्रत्येक के लिये सीमायें निर्धारित की (उदाहरण के लिये, "उचित वेतन" की व्याख्या अलग.अलग जगहों पर अलग तरीके

सिद्धांत 1: उचित भुगतान

उचित भुगतान बिना किसी कार्य वर्गीकरण के कामगारों को घरेलू अधिकार क्षेत्र में कार्य–सम्बंधित लागतों को ध्यान में रखते हुए उचित आय प्राप्त होनी चाहिए।

सिद्धांत 2: उचित परिस्थितियां

प्लेटफोर्म पर कामगारों को कार्य की परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाले आधारभूत जोखिमों से श्रमिकों को बचाने के लिए नीतियां होनी चाहिए एंव उन्हें कामगारों के स्वास्थ्य और सुरक्षा की रक्षा एवं प्रोत्साहन के लिए सक्रिय उपाय करने चाहिए।

सिद्धांत 3: उचित अनुबंध

नियम एवं शर्ते पारदर्शी, संक्षिप्त और श्रमिकों को सुलभ रूप से प्रदान होनी चाहिए।

श्रमिक के साथ अनुबंध करने वाली पार्टी को स्थानीय कानूनों के अधीन होना चाहिए और अनुबंध में उसकी पहचान होनी चाहिए। यदि श्रमिक वास्तव में स्व–रोजगार प्राप्त है, सेवाओं की शर्ते उन अनुच्छेदों से मुक्त होती है जो प्लेटफोर्म के स्तर पर अनुचित दायित्वों के बाहर करते है।

सिद्धांत 4: उचित प्रबंधन

श्रमिकों को सुनने, अपील करने और उन्हें प्रभावित करने वाले निर्णयों को समझने के लिए प्रकियाएं होनी चाहिए। प्रबंधन के निर्णयों के खिलाफ अपील करने या निष्क्रिय करने के लिए श्रमिकों के पास संचार के स्पष्ट चैनल/माध्यम होने चाहिए। एल्गोरिदम का उपयोग पारदर्शी होना चाहिए और श्रमिकों के लिए उचित परिणामों में परिलक्षित होनी चाहिए। एक पहचान योग्य और प्रलेखित नीति होनी चाहिए जो एक प्लेटफार्म पर श्रमिकों के प्रबंधित होने वाले तरीकों में समानता को सुनिश्चित करे।

सिद्धांत 5: उचित प्रतिनिधित्व

प्लेटफॉर्म्स को एक प्रलेखित प्रक्रिया प्रदान करनी चाहिए जिसके माध्यम से कामगार की आवाज अभिव्यक्त हो सके। उनके रोजगार वर्गीकरण के किसी भी प्रकार के बावजूद, कामगारों को सामूहिक निकायों में संगठित होने का अधिकार होना चाहिए और प्लेटफॉर्म्स को उनके साथ सहयोग करने एवं सौदेबाजी करने के लिए तैयार होना चाहिए।

उचित कार्य सिद्धांत। साभार : द फेयरवर्क फॉउंडेशन।

>>

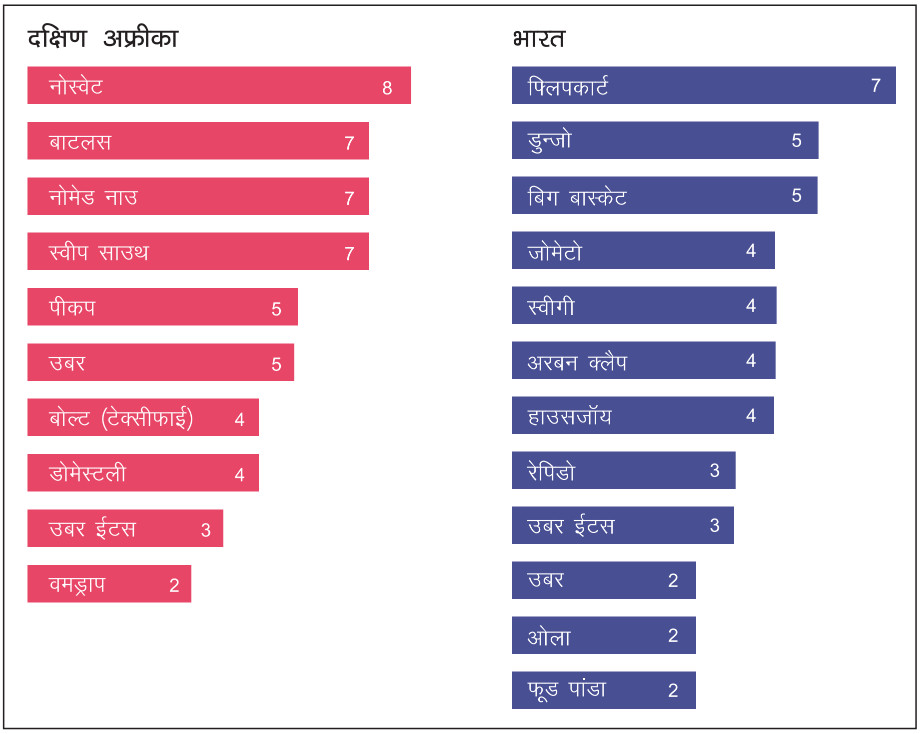

दक्षिण अफ्रीका एवं भारत में उचित कार्य 2019 लीग तालिका। साभार : द फेयरवर्क फॉउंडेशन।

से की जाती हैं)। वे प्लेटफार्मस जिनका स्कोर अच्छा होता है उन्हें हमारे काइटमार्क उपयोग करने की अनुमति दी गयी जो यह दर्शाती थी कि वे न्यायपूर्ण नियोक्ता हैं।

इस कार्य के माध्यम से, हम श्रमिकों, फर्मों, उपभोक्ताओं और नियामको को प्लेटफार्म आधारित अर्थव्यवस्था की कल्पना करने के लिये एक ढांचा प्रदान करना चाहते हैं जो रोजगार के अवसरों के विस्तार, सतत आजीविका और श्रमिक सशक्तीकरण के अपने वादे को पूरा करता हैं।

यात्री की शिकायत के बाद, ओला ने तत्काल थके हुये चालक के खिलाफ, अनुशासनात्मक और सुधारात्मक कार्यवाही की। इसमें यह शामिल था कि वह परामर्श में भाग ले। परंतु शायद सारा दोष चालक के सिर पर नहीं मढा जाना चाहिये। किसी को कम थकने के लिये, या आय के अनिश्चित स्त्रोत पर कम निर्भर होने के लिये परामर्श किया जाना संभव नहीं है।यदि ओला, और उनके जैसे प्लेटफार्मस, ने फेयरवर्क के सिद्धांतों को पूरी सक्रियता से अपने तरीको में शामिल किया होता जिसमें श्रमिकों को प्रबंधन किया जाता है, तो हम गिग अर्थव्यवस्था में श्रमिकों के लिये अधिक सुरक्षित और अधिक न्यायपूर्ण परिणाम देख सकते थे। एक उचित शुद्व मजदूरी (वेतन) पाने वाले चालक और उन प्लेटफार्मों के लिये काम करते हुये जिनके पास अंतर्निहित बोनस संरचनायें नहीं हैं जो अधिक कार्य (स्थितियां) को पुरस्कृत करती होंए की थकाने वाले दिन के अंत में दूसरे कार्य को स्वीकार करने की बजाय दिन समाप्त करने की संभावना अधिक होगी। उन मामलों में जहां भुगतान दायित्व स्पष्ट रूप से बताये गये हों, श्रमिक हस्ताक्षर (अनुबंध) करने के पहले अपने विकल्पों को सावधानी से तोलना पसंद करेंगे। उत्तरदायी नियत प्रक्रियाओं (प्रबंधन) वाले प्लेटफार्मस में श्रमिक अनुशासनात्मक कार्यवाही पर अपील कर सकेंगे और उनके मामले मानव द्वारा सुने जा सकेंगें। और वे श्रमिक जो प्लेटफार्मस द्वारा मान्यता प्राप्त एक स्वतंत्र सामूहित निकाय (प्रतिनिधित्व) को मान्यता दिलवाने मे सक्षम हैं वे संभवतः अपनी शर्तों पर एक अधिक उचित सौदे की मांग करने में सक्षम होंगें। इसके बजाय, ओला और अधिकांश अन्य प्लेटफार्म न सिर्फ अपनी लागत और जोखिम को (आउटसोर्स करने में सफल हुये हैं), बल्कि श्रमिकों के लिये असुरक्षित कार्य करने की स्थितियों की जिम्मेदारी को भी।

बुनियादी रूप से, हम अपने सिद्धांतों के माध्यम से यह सुदृढ करना चाहते हैं कि असुरक्षित, जोखिम वाले कार्य एक आधुनिक प्लेटफार्म आधारित अर्थव्यवस्था की स्वाभाविक, आवश्यक और स्वीकार्य स्थिति नहीं है। कई सारे क्षेत्रों में होशियार समाधानों के द्वारा कठिनाई से लडे गये और जीते गये अधिकार कमजोर हो जाते हैं। जहां यह समझ कि कोई विकल्प नहीं है गहराई से पैठ बनाए हुये है और प्लेटफार्मस अस्पर्शनीय प्रतीत होते हो, वे सार्वजनिक धारणा में अत्यधिक संवेदनशील हैं। प्लेटफार्म उपयोगकर्ताओं (श्रमिक और ग्राहक दोनों) के पास वे कार्य के एक अधिक न्यायपूर्ण भविष्य की कल्पना और उसे साकार करने के लिए हमारी कल्पना से अधिक शक्ति है। ■

सभी पत्राचार स्रुजाना कटटा को <srujana.katta@oii.ox.ac.uk>
कैली हाउसन को <kelle.howson@oii.ox.ac.uk>
मार्क ग्राहम को <mark.graham@oii.ox.ac.uk>
पर प्रेषित करें।

> पूंजीवाद, वर्ग, विवाद

डोनाटेला डेला पोर्टा, स्कुओला नोरमले सुपिरिओरे, फ्लोरेंस, इटली द्वारा

2019 में हांग कांग में प्रतिरोध। साभार : स्टूडियो इनसेंडो/फ्लिपकर। कुछ अधिकार सुरक्षित

सन् 1969 में "हॉट ऑटम" की पचासवीं वर्षगांठ, जिसने कोलिन क्राउच और एलेसेंड्रो पिज्जोर्नो जैसे समाजशास्त्रीयों को एक ''वर्ग संघर्ष के पुनर्जीवन'' के बारे में बात करवायी, को लेबनान, चिली, कैटालोनिया, और हॉगकांग जैसे दूरदराज के स्थानों पर लाखों लोगों के मार्च और सविनय अवज्ञा के समाकालीन रूप से स्फुटित होने के सहित बडे पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों की एक वैश्विक लहर के रूप में चिन्हित किया गया है। 2019 के "हॉट ऑटम" में, दशक के शुरूआत में चरम असमानताओं और भ्रष्ट संभ्रातों के खिलाफ संघर्ष कठोरता.विरोधी प्रदर्शनों के साथ ही सहस्त्राबदी की शुरूआत के ग्लोबल जस्टिस मूवमेंट में गूंजे।

मित्तव्यत्तता के खिलाफ प्रदर्शन जैसे समय समय पर पुनः उभरे, 2010 के दशक के अंत में, महिलाओं के खिलाफ हिंसा और ग्लोबल वार्मिंग के विरोध में लामबंदी ने पिछली कुछ लहरों के ढांचें को संभाल लिया, और इन मुददों को मौजूदा सामाजिक और राजनीतिक संबंधों की समालोचना के अंदर स्थित किया। लचीले नेटवर्कों से जुडे समूह, अक्सर पहली बार नागरिकों की लामबंदी करते हैं। जबकि फ्राइडेज फॉर फ्यूचर, एक्सटिंक्शन रेबेलियन, और नि उना मेनोस ने प्रकृति और महिलाओं के खिलाफ हिंसा के मुददों को पूंजीवादी शोषण के साथ जोडा, 2019 के हॉट ऑटम की विशाल लामबंदी राष्ट्रीय दरारों में निहित थी परंतु उसने वैश्विक पूंजीवादी विकास पर भी रोष व्यक्त किया जिसने सामाजिक असमानताओं को बढाया और नागरिक अधिकारों और राजनीतिक स्वतंत्रता को बाधित किया। कई बार सडकों और अदालतों में सविनय अवज्ञा आंदोलनों के क्रूर दमन ने, राजनीतिकरण के चक्रवात में उग्रता के क्षणों के साथ, और विरोध प्रदर्शनों को हवा दी।

जबकि नवउदारवाद और इसके संकटों ने बहुत असंतोष पैदा किया, जो अक्सर विरोध प्रदर्शनों के विघटनकारी रूपों में व्यक्त किया

>>

जाता है, सामाजिक आंदोलन अध्ययनों में पूंजीवाद एक अवधारणा और शोध विषय के रूप में हाशिये पर ही रहा। इसलिये वर्गों और वर्ग संघर्षों के विश्लेषण के साथ भी चिंतायें रही। 2008 की बडी मंदी के बाद से, हालांकि, सामाजिक संघर्षों के सरंचनागत आधारों और उनकी संस्थागत राजनीति में अभिव्यक्ति (और विशेषत:) विवादास्पद राजनीति पर भी अधिक ध्यान दिया जा रहा है। राजनीतिक अवसरों, संसाधन जुटाने और प्रक्रियाओं को तैयार करने की भूमिका के बारे में सुस्थापित मान्याताओं को विरोध प्रदर्शनों की सामाजिक. आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपडेट करने की जरूरत उभरी। जैसा कि मैं आगे तर्क देती हूं, विरोधों के विश्लेषण में पूंजीवाद को वापिस लाने के लिये हमें सामाजिक आंदोलनों पर साहित्य को नवउदार पूंजीवाद के राजनीतिक अर्थव्यवस्था में योगदानों से जोडने की जरूरत है।

> पूंजीवाद में परिवर्तन और नये सामाजिक आंदोलन

श्रम आंदोलनों पर अध्ययनों ने पूंजीवाद के दीर्घकालिक परिवर्तन जो औद्योगिक श्रमिकों और उनकी वर्ग चेतना के साथ साथ संगठनात्मक क्षमता में गिरावट की ओर हो रहे हैं, की ओर इशारा किया । इसके अनुरूप, सामाजिक आंदोलन अध्ययनों में अनुभवजन्य शोध ने कारखानों के बाहर दरारों को फैलाने, नयी सामूहिक पहचानों के निर्माण, और समाज और बाजार के पदानुक्रमों के प्रतिरोध को संबोधित किया । 1970 के दशक के बाद से, विशेष रूप से वर्ग दरार का शांत के रूप में आकलन करते हुये, कुछ सामाजिक आंदोलन विद्वानों ने वास्तव में नये आंदोलनों के उत्तर. औद्योगिक और उत्तर.भौतिकवादी चरित्र की ओर इंगित किया जिन पर उन्होंने ध्यान केंद्रित किया था।

तथाकथित नये सामाजिक आंदोलनों का सैद्धांतिकरण करते हुये, एलबर्टो मेलूची और एलेन टौरेन जैसे सामाजिक आंदोलन विद्वानों के कृत्यों ने एक कार्यक्रमबद्ध (या उत्तर. औद्योगिक) समाज में सामाजिक आंदोलनों की कुछ विशेषताओं को चुनकर निकाला। चूंकि सूचना का नियंत्रण सामाजिक शक्ति के प्रमुख स्त्रोत का गठन करता है, संघर्षों का कार्यस्थल से निकलकर अनुसंधान और विकास, सूचना, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विस्तार, और जनसंचार जैसे क्षेत्रों में स्थानांतरित होने की उम्मीद थी। नये संघर्ष में केंद्रीय कार्यकर्ता अब औद्योगिक उत्पादन से नहीं जुडे थे, बल्कि वे संज्ञानात्मक और प्रतीकात्मक संसाधनों के उपयोग और नियंत्रण से जुडे थे। समकालीन समाजों में, कार्यवाई के व्यैक्तिक स्वायत्त केंद्रों के निर्माण में निवेश के मानव कार्य के लिये उददेश्यों पर नियंत्रण बढाने के माध्यम से घनिष्ठ एकीकरण की आवश्यकता के साथ तनाव में आने की उम्मीद थी। जहां टौरेन और मेलूची दोनों ने मुख्य सामाजिक संघर्षों और उनके वाहकों के लिये एक परिष्कृत परिप्रेक्ष्य को अपनायाए उन्होंने विकास को महत्व देते हुए जिसे हम वर्ग चेतना कह सकते हैं, प्रदर्शनकारियों की वर्ग प्रस्थिति पर केंद्रित "नये सामाजिक आंदोलनों" के सामाजिक आधार पर अनुभवजन्य शोध पर ध्यान केन्द्रित किया। कुछ आंदोलनों और कुछ देशों से सामान्यीकरण करने की प्रवृति के साथ अध्ययनों ने इंगित किया कि कुछ मध्यम. वर्गीय पदों . जैसे कि सार्वजनिक सेवा में सफेदपोश श्रमिकों की . उदाहरण के लिये, शारीरिक श्रमिकों की तुलना मेंए विवादास्पद रूपों में भाग लेने की अधिक संभावना है ।

> वर्ग संघर्षों का पुनरूत्थान

जब ये सिद्धांतीकरण और अनुभवजन्य विश्लेषण, कल्याणकारी राज्य के विस्तार के विशेष क्षणों में संसार के विशिष्ट क्षेत्रों में विवादास्पद राजनीति की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालने में उपयोगी थे, श्रम संघर्षों और एक मध्यम.वर्गीय क्षेत्र के रूप में प्रदर्शनों के अंत की भविष्यवाणियां गलत साबित हुयी।

पहला, न केवल पूंजीवाद का पश्चिमी स्वरूप वह प्रारूप साबित नहीं हुआ जिसकी ओर अन्य अर्थव्यवस्थायें और समाज आगे बढते हैं, परंतु पश्चिम में भी पूंजीवाद उससे भी अधिक शोषणकारी स्वरूपों में विकसित हुआ जिसकी सिद्धांतकरों ने कार्यक्रमबद्ध समाज में भविष्यवाणी की थी। औद्योगिक श्रमिकों में गिरावट के परिणामस्वरूप श्रमिक शोषण में गिरावट नहीं हुयी। बल्कि, श्रमिकों की परिस्थितियों के अनिश्चिततीकरण के साथ, कई व्यवसायों के साथ साथ सेवा क्षेत्र में सफेदपोश कार्य में भी स्वायतत्ता में कमी के साथ साथ वेतन में भी कमी के साथ, मध्यम वर्ग का सर्वहाराकरण भी देखा गया। जैसा कि डेविड हार्वे ने कार्ल मार्क्स के विश्लेषण का उल्लेख करते हुये बताया, कि अत्यधिक संचयन की समस्याओं को संबोधित करने के लिये उत्पादन के माध्यम से लाभार्जन के एक विकल्प के रूप में वित्तिय अटकलबाजी के माध्यम से लाभार्जन बढा। विस्तारित पुनरूत्पादन की ओर उन्मुख संचयन के स्वरूपों के साथ, और अधिशेष मूल्य के आंशिक हिस्से के उत्पादन में पुनर्निवेश के साथ, यहां बेदखली द्वारा संचयन में वृद्धि हुयी, जो गैर पूंजीवादी सामाजिक विन्यासों के साथ विशिष्ट संबंधों के विस्तार के माध्यम से पूंजी के मूल संचयन की याद दिलाता है।

कार्य की परिस्थितियों के आसपास संघर्षों के पुनरूत्थान ने जुडी हुयी समस्याओं को लक्षित किया। ऐसा उन्होंने जिसे माइकल बुरावो ने पुर्नवस्तुकरण के खिलाफ सामाजिक संघर्षों (प्राप्त सामाजिक सुरक्षा को हटाना); गतिविधियों के नये क्षेत्रों के वस्तुकरण के खिलाफ सामाजिक आंदोलन; और पूर्व. वस्तुकरण के खिलाफ सामाजिक आंदोलन के रूप में वर्गीकृत किया, जिसे बाजार से पूर्व वस्तुओं के निष्कासन के रूप में परिभाषित किया गया, उदाहरण के लिये श्रम बाजार से पूर्व श्रमिकों का निष्कासन। जैसा कि संचयन का तर्काधार सामूहिक लामबंदी के स्वरूपों को प्रभावित करता है, हम वित्तिय पूंजीवाद की विशिष्ट विशेषताओं जो वर्ग विखंडनता को बढाती हैए को देखते हुये विभिन्न तर्कों का पालन करने वाले विरोध प्रदर्शनों की आशा कर सकते हैं ।

> पछेती नवउदारवाद में वर्ग संघर्ष

सामाजिक विन्यासों के उत्तराधिकार में व्यापक प्रवृति पर बहस के अलावा, नवउदार पूंजीवाद के संकट के क्षणों मे वर्ग संघर्ष की पुनरूत्थान के लिये स्थितियों की ओर देखते समय पूंजीवादी उदविकास में मध्यावधि चक्रीय प्रक्रियाओं पर भी विचार किया जाना चाहिये। अपने प्रमुख कार्य द ग्रेट ट्रांसफॉर्मेशन में कार्ल पोलान्यी ने पूंजीवादी विकास में सामाजिक सुरक्षा और मुक्त बाजार के बीच में एक दोहरे आंदोलन को निकाला। एक दूसरे महान परिवर्तन के रूप में, नवउदारवादी पूंजीवाद बाजार के सामाजिक वर्चस्व के खिलाफ, समाज पर बाजार के चरम प्रभुत्व की विचारधारा पर आधारित है।

पोलान्यी के आंदालनों और प्रतिरोधी आंदालनों में आम रूझान हालांकि विभिन्न प्रकार के पूंजीवाद में अंतर्निहित हैं जो समान ऐतिहासिक कालों में साथ में मौजूद हैं। सबसे पहले, जैसा कि विश्व व्यवस्था दृष्टिकोण ने इंगित किया, पूंजीवाद अपने केंद्र, अर्धपरिधि और परिधि में विभिन्न रूप लेता है। श्रमिक आंदोलन के अध्ययनों ने वैश्विक स्तर पर विशिष्ट भू–राजनीतिक रूझानों के सामान्यीकरण की प्रवृति की आलोचना की है। उन्होंने यह दिखाया कि जब औद्योगिक श्रमिक पश्चिम में वास्तव में कम हो सकते हैं, वैश्विक दक्षिण के क्षेत्रों में ऐसा नहीं था। दूसरा, पीटर हॉल, डेविड सॉस्किस, और अन्य

>>

2019 में चिली में विरोध प्रदर्शन।
साभार : डियगो कोरिया/फ्लिपकर। कुछ अधिकार सुरक्षित

ने मुक्त बाजार अर्थव्यवस्थाओं के साथ, पूंजीवाद की विभिन्न किस्में निकाली, जहां बाजार, समन्वित बाजार अर्थव्यवस्थाओं के विपरीत, अंतक्रिया और संबंधों का प्रमुख तत्व है। हाल के अध्ययनों ने दूसरे महान परिवर्तन और महान मंदी के दौरान इसके संकट में पूंजीवाद की किस्मों के विभिन्न अनुकूलनों को संबोधित किया है। असंतोष ने विशिष्ट विशेषताओं, समय, और वित्तिय संकट की गहनता और इसकी राजनीतिक प्रतिक्रियाओं से जुडकर विभिन्न रूप ले लिये। केन्द्र और परिधि पर, जिसे वेवरली सिल्वर पोलान्यी के वर्ग संघर्ष के प्रकार के रूप में वर्णित करती हैं, पुराने अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न मिश्रणों में मार्क्स प्रकार के अग्रसक्रिय सामाजिक आंदोलन जो उत्पादन की मौजूदा प्रणालियों को चुनौती देते हैं, के साथ अंतक्रिया करते हैं।

> सामाजिक आंदोलनों की ऐजेंसी

विवेचनात्मक राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अंदर ये विचार जहां सामाजिक संघर्षों के वर्ग आधारों के विश्लेषण के लिये उपयोगी अंतदृष्टि प्रदान करते हैं, विभिन्न सामाजिक समूहों की स्वायत्त संगठनों के निर्माण करने की क्षमता के साथ साथ संस्थागत शक्ति के पद ग्रहण करने की क्षमता वे खुले प्रश्न हैं जिनको सामाजिक आंदोलन अध्ययन संबोंधित करने में मदद कर सकते हैं। सामाजिक आंदोलन अध्ययन प्रकाश डाल सकते हैं कि कैसे व्यवस्था.विरोधी आंदोलन और/या विरोधी आंदोलन ऐजेंसी के माध्यम से और एक व्यापक संबंधपरक संदर्भ में बनाये जा सकते हैं। ऐसा करने में, वे संसाधनों की भूमिका के साथ साथ एक स्वायत्त, राजनीतिक आयाम की भूमिका पर विचार करते हुये, वर्गों के विश्लेषण को संरचनात्मक दृष्टिकोण से दूर करने में योगदान दे सकते हैं।

सबसे पहले, जब नये सामाजिक आंदोलन विद्वान पूंजीवादी विकास में अलग क्षणों की बात कर रहे थे, उन्होंने उपयोगी रूप से संघर्षों के संरचनात्मक निर्धारकों, और उसी समय पहचान प्रक्रियाओं की महत्ता पर प्रकाश डालते हुये, की ओर ध्यान आकर्षित किया। इस अर्थ में, उन्होंने मार्क्सवाद की संरचनावादी व्याख्या के खिलाफ तर्क दिया, जिसने नव या उत्तर.मार्क्सवादी दृष्टिकोणों से उबरने में योगदान दिया। ऐसा हालांकि संगठनात्मक और विचारात्मक संसाधनों के विशिष्ट विकास पर शोध पर अधिक निवेश के बिना हुआ जो संरचना से क्रिया में परिवर्तन की व्याख्या करते हैं।

इस पर, नये सामाजिक आंदोलन दृष्टिकोणों द्वारा इंगित कुछ तत्व समकालीन संघर्षों को समझने में प्रासंगिक बने हुये हैं। उदाहरण के लिये, उत्पादन के साधनों के भौतिक स्वामित्व में कमी के विरोध में सूचना नियंत्रण की महत्ता, या जनता की परिभाषा के पक्ष में कल्याणकारी राज्यों में सार्वजनिकता की क्रमबद्ध अवधारणा की अस्वीकृति, आज की लामबंदी में महत्वपूर्ण हैं। संयोग से नहीं किया गया, हाल के नवउदारवादी समय में सामाजिक आंदोलनों के मार्क्सवादी विश्लेषण, जैसे कि कोलीन बार्कर द्वारा किया गया, मोटे तौर पर मेलूची और टौरेन का उल्लेख करते हैं, विशेष रूप से जब वे आमूल जरूरतों की मान्यता पर आधारित प्रतिरोधों की चर्चाओं के लिये ज्ञान के महत्व और प्रभुत्व सामान्य ज्ञान से उबरने पर बल देते हैं। इसके अलावा, विवादास्पद राजनीति में लंबी लहरों पर शोध पूंजीवाद के प्रतिरोध के प्रतीकात्मक और

>>

भौतिक संसाधनों के संचयन, विरोंधों के विशिष्ट प्रदर्शनों के एकत्रीकरण, और संस्थागत चैनलों के साथ साथ गठबंधनों और नेटवर्कों के स्थिरीकरण की भूमिका को रेंखांकित करते हैं।

जैसा कि हाल के अध्ययनों में दिखायी देता है, संकटकाल के आर्थिक बल्कि राजनीतिक घटनाक्रम भी, इसके स्वरूपों और गहनता ने विवादों के रूपों और गहनता पर प्रासंगिक प्रभाव डाला है। यूरोपीय परिधि में सामाजिक आंदोलनों के तुलनात्मक विश्लेषण ने श्रम समाजशास्त्र और सामाजिक आंदोलन अध्ययनों में व्यापक परिकल्पनाओं को चुनौती दी है कि प्रगतिशील आंदोलन प्रचुरता के समय में खिलते हैं, जब श्रमिक संरचनात्मक रूप से मजबूत होतें हैं, और आर्थिक विकास का अर्थ बढे हुयी वेतन में लाभों के निवेश के लिये उच्च्च मार्जिन और कल्याणकारी खर्चों के लिये करों का होना है। इस तरह के विश्लेषणों से पता चलता है कि कंहा पर सकट मजबूत था, विशेष रूप से आइसलैंड, ग्रीस, और स्पेन जैसे देशों में, जहां इसने गतिविधियों के उच्च स्तर को क्रियाओं के साथ साथ संगठनात्मक स्वरूपों और दावे के नये प्रदर्शनों को ट्रिगर किया और ये राजनीतिक सफलता भी हासिल कर पाये। फिर भी, प्रचुरता बनाम संकट के समय में विवादास्पद कर्ताओं के लिये विभिन्न चुनौतियों पर विचार प्रासंगिक बने हुये हैं। जैसा कि श्रम सक्रियता पर कुछ अध्ययनों ने बताया है कि वास्तव में प्रदर्शनों के दौरान एकजुटता के संसाधनों के निर्माण के माध्यम से संकटो से उबरा जा सकता है। लंबी हडतालें और कारखानों पर कब्जा, जैसे कि चौराहों पर डटना या बेरोजगारों का धरना जो मित्तव्यत्तता विरोधी प्रदर्शनों की विशेषता है, वास्तव में संकट की प्रतिक्रिया के रूप में विश्लेषण किया जाता है जो फिर अभिनव विचारों और प्रथाओं को पैदा करता है। ग्राम्शी के "जैविक संकट" में शासक वर्ग आधिपत्य के संकट के रूप में, कुछ राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों के तहत, स्थानीय उग्रवाद एक व्यापक सामाजिक आंदोलन में परिवर्तित हो सकता है।

> समापन टिप्पणियां

अंत में निष्कर्ष निकालने के लिये, वर्गों की एक संरचनावादी दृष्टि उन तरीको की अनदेखा करती है जिसमें राजनीतिक अवसर सामाजिक आर्थिक प्रभावों के साथ साथ संसाधनों की लामबंदी की प्रक्रियाओं में मध्यस्थता करते हैं। ये वो है जिस पर सामाजिक आंदोलन अध्ययन प्रमुख रूप से ध्यान केंद्रित करते हैं। सामाजिक आंदोलन अध्ययनों को (संकटपूर्ण) राजनीतिक अर्थव्यवस्था के साथ जोडना सामाजिक आंदोलनों की विविधता, गहनता और समय को समझने के लिये महत्वपूर्ण है जिसने दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों को नवउदारवादी पूंजीवाद के संकट के विरोध में विभिन्न समयों में लामबंद किया है। ऐसा करने के लिये, सामाजिक आंदोलन सिद्धांत को पूंजीवादी परिवर्तन के आलोचनात्मक विश्लेषण के साथ संलग्न होना चाहिये जो संचयन और शोषण की वर्तमान प्रक्रियाओं की जांच करते हैं। उसी समय, पूंजीवाद के संरचनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण सामाजिक आंदोलन सिद्धांत से लाभान्वित हो सकता हैः यह लामबंदी और इसके अंसतोषों पर ध्यान आकर्षित करता है। ■

सभी पत्राचार डोनाटेला डेला पोर्टा को <donatella.dellaporta@sns.it> पर प्रेषित करें।

> अफ्रीका के अग्रणी मार्क्सवादी समीर अमीन को श्रद्धांजलि

विश्वास सत्गार, विटवाटरसरैंड विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका और अर्थव्यवस्था और समाज (आरसी 02) और श्रमिक आंदोलन (आरसी 44) पर आइएसए की शोध समितियों के सदस्य

बर्लिन में समीर अमीन, 2016। साभारः फ्लिकर। कुछ अधिकार सुरक्षित।

12 अगस्त 2018 को समीर अमीन का निधन हो गया। बींसवी सदी में अफ्रीका का बौद्धिक इतिहास उनके योगदानों की स्वीकार किये बिना पूर्ण नही होगा। उनकी बौद्धिक यात्रा आधुनिक अफ्रीका के निर्माण के प्रमुख क्षणों के साथ प्रतिच्छेदन करती हैः (1) अरब राष्ट्रवाद का उदय; (2) अफ्रीकी समाजवाद और वैज्ञानिक समाजवाद के उदय सहित उत्तर औपनिवेशिक अफ्रीका में वाम मोड; (3) निर्भरता के माध्यम से नवऔपनिवेशिक नियंत्रण; (4) संरचनात्मक समायोजन और शीत युद्ध के संदर्भ में अखिल अफ्रीकीवाद की हार; और (5) भूमंडलीकृत अफ्रीका का निर्माण। अमीन इन क्षणों के दौरान जिये, इनको पढा, और बौद्धिक रूप से इनसे जुडे रहे।

अमीन ने एक स्वतंत्र मार्क्सवादी के रूप में लिखा, ऐसा उन्होंने अपनी पीएचडी शोध प्रबंध (1957) में निहित शोध एजेंडा जो अविकास और इसके तंत्रों पर केंद्रित था को आगे बढाते हुए किया। इसे बाद में एक्यूमुलेशन ऑन ए वर्ल्ड स्केल – ए क्रीटिक ऑफ द थ्योरी ऑफ अंडरडवलपमेंट (1974) के रूप में प्रकाशित किया गया था। अमीन एक परिवर्तनशील बुद्धिजीवी थे, जो कभी अनुशासनात्मक सीमाओं में नहीं बंधे। उन्होंने मार्क्सवादी सिद्धांत, विश्व.व्यवस्था विश्लेषण, विकास सिद्धांत, वैश्विक भूराजनीति के संयोजित विश्लेषणों, रणनीतिक प्रस्तावों, में पथ प्रदर्शक योगदान दिया और समाजवाद के मामले को लगातार पुनः देखा । अमीन के योगदानों से समाजशास्त्र लाभान्वित हुआ है, जिन पर उसी समय अर्थशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, उत्तर. औपनिवेशवाद सिद्धांत, विकास अध्ययनों और विभिन्न अन्य विषयों द्वारा भी दावा किया गया। अफ्रीका के संदर्भ में, अमीन ने 1973 में कांउसिल फोर द डवलपमेंट ऑफ सोशल साइंस रिसर्च इन अफ्रीका (CODESRIA) की सहस्थापना की और इसके संस्थापक कार्यकारी सचिव के रूप में कार्य किया। इस संस्थान ने सामाजिक वैज्ञानिकों की कम से कम तीन पीढीयों पर छाप छोडी और अफ्रीका की सामाजिक विज्ञान समुदाय की उन्नति में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

एक मार्क्सवादी के रूप में, अमीन कभी भी रूढिवाद के बंदी नहीं रहे। मार्क्स के प्रति उनका दृष्टिकोण मार्क्स से सीखने का था; मार्क्स एक प्रारंभिक बिंदु थे परंतु मार्क्सवादी पद्धति को "वर्तमान चुनौतियों के मार्क्सवादी उत्तर" देने की आवश्यकता थी। इसके लिये मार्क्स के पूंजीवाद और ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांतों में वैचारिक नवाचार करने की आवश्यकता थी। इस संबंध में, अमीन ने पूंजीवाद को अमूर्त परिभाषा के साथ नहीं देखा जो पूंजी.श्रम के संबंधों को विशेषाधिकार देती थी। अमीन के लिये इस तरह का दृष्टिकोण अर्थवाद और परिधियों के उद्विकास पर "मंचवादी" विचारों में समाप्त हुआ जिसका मतलब था कि "पिछडी परिधियों" को उन्नत केंद्रों तक पहुंचना चाहिये। इसके बजाय, उनका मानना था कि पूंजीवाद को एक विश्व. व्यवस्था के रूप में विश्लेषण की एक प्राथमिक इकाई के रूप में और अमूर्तता के उच्चतम स्तर पर समझना महत्वपूर्ण था, । इसके लिये पूंजीवाद की ऐतिहासिक समझ, समकालीन साम्राज्यवाद के ठोस विश्लेषण और संयोजित विश्लेषण की जरूरत थी। इसने अमीन को मार्क्स की मूल्य की अवधारणा में नवाचार करने और इसे आगे वैश्विक पूंजीवाद में इसे स्थित करने की ओर आगे बढाया। उन्होंने साम्राज्यवादी किराये, असमान विकास, और वैश्विक ध्रुवीकरण की अवधारणा को विश्व पूंजीवादी व्यवस्था में अंतर्निहित मानते हुये विकसित किया। उनके साम्राज्यवाद के सिद्धांत के केंद्र में उनके इसके सामूहिक विनाश के हथियारों, प्रौद्योगिकी, वित्तिय प्रवाह, ग्रह

>>

संसाधन और संचार के पांच एकाधिकारों के साथ वैश्विक स्तर के एकाधिकार पूंजीवाद की अवधारणा है। इस दृष्टिकोण से परिधियों के द्वारा "पकडना" एक भ्रम था।

एक ऐसे समय में जब वैश्विक उत्तर और दक्षिण दोनों में, विश्वविद्यालय, वि–उपनिवेशवाद की चुनौतियों से जूझ रहें हैं, समीर अमीन का एक गैर–यूरोकेंद्रित मार्क्सवाद का योगदान महत्वपूर्ण और अग्रणी है। वे उन लोंगों के लिए एक संवाद का पुल और आधार प्रदान करते हैं जो अपने वि–उपनिवेशिक जोश में, मार्क्सवाद को एक यूरोकेंद्रित विचार के रूप में अस्वीकार करने में उत्साहित हैं। अमीन ने मार्क्स के भीतर यूरोकेंद्रित क्षण को, पूंजीवाद की ऐतिहासिक अंकन को, और पश्चिमी आधुनिकतावाद को चुनौती दी हैं। ऐसा उन्होंने "उत्पादन के सहायक साधनों" के विचार पर नवाचार करके और इस श्रेणी को एक ऐतिहासिक अनुक्रम, जो यह दिखाता है कि कैसे यूरोप पूर्व. पूंजीवादी सभ्यता में परिधि पर था, को ऐतिहासिक रूप से प्रदर्शित कर के किया हैं। यूरोप सभ्यता में देरी से आया था और उसके सांमतवाद से पूंजीवाद में विभिन्न प्रकार से परिवर्तन जिसने अधिशेष के केंद्रीकरण को बाधित किया, की वजह से, यह इस तरह से विकसित हो पाया जैसा कि ये हुआ। यूरोप अपनी श्वेत प्रतिभाओं और असाधारणता की वजह से विकसित नही हुआ। इसमें सोलहवीं सदी से विश्व व्यवस्था के पुर्ननिर्माण में निहित ऐतिहासिक आकस्मिकतायें थीं। अमीन ने पूंजीवाद की परिधियों में श्रमिकों और किसान गठजोडों की केंद्रीयता के लिये तर्क देते हुये यूरो–केन्द्रवाद और अर्थवाद के साथ इसके असंतुलन को भी चुनौती दी। मार्क्सवादी वर्ग विश्लेषण और राजनीति को राजनीतिक एजेंसी के औद्योगिक सर्वहारा के लिए कम नहीं करना चाहिये। इसके अलावा, एम्पायर ऑफ काओस (1992) के अमीन के पुर्वानुमान और प्रारम्भिक नैदानिक विश्लेषण जिसमें यूरोप और जापान के अमेरिकी नेतृत्व वाले समूह अपने पूंजीवादी बाजार के पुनरूत्पादन और विस्तार के लिए किसी कीमत पर नहीं रूकेंगे, वि–उपनिवेशीकरण की अनिवार्यता को और अधिक रेंखांकित करते हैं।

समीर अमीन की डी–लिकिंग की रणनीतिक अवधारणा, जो ओटार्की के बारे में नहीं थी, ने भी यह सुनिश्चित करने के लिये कि संप्रभु परियोजनायें को वि–उपनिवेशीकरण अनिवार्यताओं से आकारित हो, देशों और क्षेत्रों में राष्ट्रीय–लोकप्रिय परियोजनाओं के लिये एक आधार प्रदान किया। इस प्रकार, अमीन के लिये केंद्रीय मुददा परिधिय और वैश्विक पूंजीवाद वाले देशों के मध्य संबंधों को नियंत्रित करना था। अमीन ने वैश्विक एकाधिकारों और केंद्रों की शर्तों पर समायोजन का समर्थन नहीं किया। इसलिये उनके विचार में, विनिमय नियंत्रण में उदारीकरण निजी बैंकिंग और भूमंडलीकृत कृषि सभी राष्ट्रीय विकास के खिलाफ थे।

इसके सार में, राष्ट्रीय–लोकलुभावन परियोजनाओं के बारे में डी–लिंकिंग तीन प्रवृतियों – सांख्यिकीय, पूंजीवादी और समाजवादी द्वारा आकारित देता है। अमीन ने इन प्रवृतियों को वर्ग गठबंधन (और परिधि के संबंध में श्रमिक और किसान गठबंधन के मामले में) से अंतर्निहित के रूप में परिकल्पित किया जिन्होंने इस परियोजना की अगुवाई की। इनमें से प्रत्येक प्रवृति राष्ट्रीय–लोकलुभावन परियोजनाओं की दिशा को आकार देने के लिये एक दूसरे से टकरायेंगी, खण्डन करेगी और संघर्ष करेंगी। उनके डि–लिंकिंग उदविकसित होते परिप्रेक्ष्य से, उन्होंने स्पष्ट तौर पर डि–लिंकिंग के लिए कई आवश्यक शर्तों को रखा।

पहला, एक राष्ट्रीय परियोजना जो लोंगों की जरूरतों को विशेषाधिकार देती हैं, महत्वपूर्ण है। इसे वैश्विक पूंजीवाद के साथ संबंधों के द्वारा संकट में डाला नही जाना चाहिये। इस संबंध में एक महत्वपूर्ण उदाहरण खाद्य संप्रभुता है। राजनीतिक और बौद्धिक रूप से अमीन एक कृषक परिप्रेक्ष्य का समर्थन करते थे जिसमें कृषक लघु किसान और उपभोक्ता खाद्य व्यवस्था को नियंत्रित करते थे। 1996 से 200 मिलियन से अधिक सदस्यों के साथ सम्पूर्ण ग्रह पर सबसे बडा किसान आंदोलन ला वाया कांपेसिना, वैश्विक एकाधिकार द्वारा नियंत्रित खाद्य व्यवस्था से जुडी बेदखली के एक जवाब के रूप में, खाद्य संप्रभुता को आगे बढाने में सबसे अग्रणी रहा है। अमीन ने खाद्य संप्रभुता को डिलिंकिंग रणनीतिक दृष्टिकोण के लिये महत्वपूर्ण के रूप में अपनाया। इस तरह की स्थिति इस बात के लिये भी महत्वपूर्ण है कि हम गर्म होती दुनिया में अकार्बनीकरण के बारे में कैसे सोचते हैं।

दूसरा, डि–लिंकिंग का एक क्षेत्रीय और उपक्षेत्रीय आयाम होना चाहिये। अमीन के लिये, जहां देश डि–लिंकिंग के लिए केंद्रीय ठिकाना था, इसे उस संदर्भ में होना चाहिये जिसमें व्यापक आर्थिक और राजनीतिक ब्लॉक संबंधों को बनाते हैं, उदाहरण के लिये दक्षिण अफ्रीका और पश्चिमी अफ्रीका में, यहां तक कि पूरे अफ्रीका के स्तर पर भी। क्षेत्रीयकरण का यह सामजंस्य वैश्विक पूंजीवाद के साथ संबंधों को नियंत्रित करनें के लिये आवश्यक आंतरिक शक्ति के निर्माण के बारे में भी है। इसका मतलब था कि डि–लिंकिंग एक अलग प्रकार के भूमंडलीकरण के बारे में भी था जो कि शासक वर्गों की बजाय नीचे से संचालित था ना कि वैश्विक एकाधिकारों और अमेरिका के नेतृत्व वाली तिगडी से।

तीसरा, डि–लिंकिंग विश्व–व्यवस्था में शक्ति को केन्द्र से हटाने को साकार करने के बारे में भी था। डि–लिंकिंग से जुडी हुई एक अवधारणा और जो उसके साकार होने के केन्द्र में है, एक बहुकेंद्रीय विश्व के विचार को साकार करने के केंद्र में थी। इस तरह की अवधारणा अंतर्राष्ट्रीयवाद के माध्यम से शक्ति के पुनर्वितरण की कल्पना करती है। अमीन के समय में, 1955 से 1975 के मध्य, गुटनिरपेक्ष आंदोलन ऐसे बहुकेंद्रीय विश्व को साकार करने के लिये महत्वपूर्ण था। हालांकि, अपनी हार और तीसरी दुनिया की एकजुटता के वापस होने के बाद, अमीन ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में अमीन ने फिफ्थ इंटरनेशनल ऑफ पीपुल्स एंड वर्कर्स का केस बनाना शुरू कर दिया था।अमीन ने वर्ल्ड सोशल फोरम की सीमाओं की आलोचना करना शुरू कर दिया और वे अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता के एक नये आधार को खोज रहे थे जो ऐतिहासिक अंतर्राष्ट्रीयवाद की आलोचनात्मक प्रशंसा पर आधारित होगा। संसार में दक्षिणपंथ के बढते खतरे और जलवायु संकट सहित वैश्विक पूंजीवाद के बिगडते प्रणालीगत संकट को देखते हुये, उनके प्रस्ताव पर विभिन्न भागों में गंभीरता के साथ काम हो रहा है।

अफ्रीकी संदर्भ में हममें से जो समीर अमीन को जानते थे और जो दुनिया में उनकी सोच के साथ संवाद करने के बारे में सोचते थे, उनके नहीं रहने से काफी गहरे तरीकों से चुनौती का सामना करते हैं। एक अग्रणी अफ्रीकी सामाजिक वैज्ञानिक इस्सा शिवजी, ने इस सच्चाई को "ए बाओबब हैज फॉलन" के रूप में सहेजा है। ■

सभी पत्राचार विश्वास सतगार को <Vishwas.Satgar@wits.ac.za> पर प्रेषित करें।

> इमानुअल वालरस्टीन : एक उत्कृष्ट समाजशास्त्री और बुद्धिजीवी

साडी हनाफी, अमेरिकन यूनिवर्सिटी ऑफ बेरुत, लेबनान और अध्यक्ष, इंटरनेशनल सोशियोलॉजिकल एसासिएशन (2018–2022) और **स्टीफनी डुफोक्स,** यूनिवर्सिटी ऑफ पेरिस, नानट्रे और इंस्टीटयूट यूनिवर्सलिट्रिट डी फ्रांस और सदस्य, समाजशास्त्र का इतिहास (आरसी 08) पर आई.एस.ए. शोध समिति की सदस्य द्वारा

सेंट पीटर्सबर्ग के यूरोपीय विश्वविद्यालय में इमानुअल कालरस्टीन 2008। फोटो : एलेक्साई कोप्रिआनोव/क्रियेटिव कॉमन्स द्वारा।

पिछले कुछ महीनों में कई घटनाओं ने हमारे समाजशास्त्रीय समुदाय को परेशान किया है। इमैनुएल वालरस्टीन, अनिबल क्विजानो और एरिक ओलिन राइट जैसे तीन प्रमुख समाजशास्त्रियों का निधन हो गया। फिर भी अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ (आईएसए) विशेष रूप से वालरस्टीन का ऋणी है जो 1994 से 1998 तक इसके अध्यक्ष रहे। वे चार खण्डों में प्रकाशित उच्चस्तरीय कृति 'द मॉडर्न वर्ल्ड सिस्टम' के लेखक हैं जो आधुनिकीकरण के प्रमुख सिद्धांत के लिए विश्व–प्रणाली विश्लेषण का प्रस्ताव पेश करती है। यह एक ऐसा विश्लेषण है जो उनके लिखने के प्रारंभ के समय 1970 से लेकर आज तक समान रूप से आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यह तर्क देते हुए कि आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक–संस्कृति सामाजिक कार्रवाई के स्वायत रणक्षेत्र नहीं हैं

>>

और एक साथ सभी विश्लेषणों को ऐतिहासिक और प्रणालीगत कहकर उन्होंने समाजशास्त्र को पुनः तुलनात्मक इतिहास, राजनीतिक–अर्थव्यवस्था और पूंजीवाद के सिद्धांतों के चारों और पुनः केंद्रीत किया जिसने उपनिवेशवाद विरोधी और उतर–उपनिवेशवादी समाजशास्त्र की नींव रखी।

आईएसए के अध्यक्ष द्वारा अपने सदस्यों से सीधे सम्पर्क स्थापित करने के लिए पत्र लिखने की परम्परा को प्रारम्भ कर आईएसए को ''खोलना'' और क्षेत्रीय सम्मेलनों का आयोजन करना जिसके माध्यम से समाजशास्त्रियों की नई पीढ़ियां पैदा हुई जो बाद में राष्ट्रीय और आईएसए स्तर पर नेतृत्व के रूप में उभरेए उनका प्रमुख सांगठनिक योगदान माना जायेगा।

कई भाषाओं में अनुवादित वालरस्टीन की पुस्तकें दुनिया भर में उनके प्रभाव का सबूत हैं। उनकी पांच पुस्तकों और कई लेखों का अरब की दुनिया में अनुवाद किया गया था और निर्भरता के सिद्धांतकार समीर अमीन के साथ उनकी दोस्ती ने उन्हें अरब दुनिया के नायकों में शुमार कर दिया था। यह स्थिति विश्लेषण करने के लिए जटिल है। पहली नजर में अनथिंकिंग सोशल साइंस (1991) जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक या उनकी अध्यक्षता में सामाजिक विज्ञानों के पुनर्गठन के लिए गठित गुलबेंकियन आयोग की रिपोर्ट (1996) में बहुत कम गैर–पश्चिमी विद्वानों का हवाला दिया जाता है (पूर्ववर्ती में समीर अमीन और परवर्ती में एंगेलर्बट मेवेग)। हालांकि गहराई से देखने से मालूम होता है कि बिंगहैमटन विश्वविद्यालय के फर्नांड ब्रैडेल सेंटर जिसके वे निदेशक थे, एक ऐसा स्थान था जहां आधुनिकता/औपनिवेशिकता समूह के कई लैटिन–अमेरिकी समाज वैज्ञानिकों (जैसे एनीबल क्विजानो, एनरिक डसेल, वाल्टर मिन्गोलो और रामोन ग्रोसफॉगल) को आश्रय मिला या कम से कम 1990 के दशक में अपने विश्लेषण को प्रस्तुत करने का एक स्थान मिला। इसके अतिरिक्त 1998 में मॉन्ट्रियल में 15वीं वर्ल्ड ऑफ सोशियोलॉजी कांग्रेस के दौरान अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने ''समाजशास्त्र की संस्कृति'' की परम्परागत दूसरी चुनौती के रूप में (छह में से) यरोकेन्द्रीयतावाद को, माना और उन्होंने मिस्र और फ्रांसीसी समाजशास्त्री अनौअर अब्देल–मालेक[1] के काम को व्यापकता रूप से उद्वरत किया।

1971 के प्रारंभ में, यह देखते हुए कि उन्नीसवीं शताब्दी के उतरार्ध में स्थापित विषयों के विभाजन अब कोई भी लक्ष्य पूर्ण प्रयोजन को पूरा नहीं करते है,[2] वालरस्टील ने मानव विज्ञान और इतिहास के साथ जोड़ने का आहवान किया। 'तर्कसंगतता में एक नैतिक राजनीति का विकल्प शामिल है और बौद्धिक वर्ग की भूमिका ऐतिहासिक विकल्पों को रोशन करना जिन्हें हमने सामूहिक रूप से चुना है' को स्वीकार करते हुए उन्होंने अपने विचारों की पुनर्रचना की। ऐसा उन्होंने द एंड ऑफ द वर्ल्ड एज वी नो इट : सोशल साइंस फॉर द टवेन्टी–फर्स्ट सेंचुरी में कहा। उनका तर्क है कि इस 'मूल तर्कसंगतता' के बिना समाज वैज्ञानिक सामाजिक रूप से अप्रासांगिक हो जाएंगे। 1 जुलाई 2019 को अपनी अंतिम टिप्पणी में उन्होंने हमें प्रासांगिक होने को कहा : यह दुनिया रास्तों से और नीचे जा सकती है। ऐसा नहीं होगा। मैंने पूर्व में संकेत दिया कि मेरे विचार से महत्वपूर्ण संघर्ष वर्ग संघर्ष ही था... जो लोग भविष्य में जीवित रहेंगे वे स्वयं के साथ भी संघर्ष कर सकते हैं, इसलिए यह परिवर्तन वास्तविक हो सकता है।'

वे पूंजीवाद के एक अंतिम संकट पर विश्वास करते थे, फिर भी इस उत्कृष्ट बुद्विजीवी ने एक बेहतर दुनिया संभव बनाने से बहुत पहले हमें छोड़ दिया। ■

1. Wallerstein, I. (January 1999) "The Heritage of Sociology, the Promise of Social Science." *Current Sociology* 47(1): 1-37.

2. Wallerstein I. (November 1971) "There is No Such Thing as Sociology." *The American Sociologist* 6(4): 328.

सभी पत्राचार साडी हनाफी को <sh41@aub.edu.lb>
स्टेफेन डूफोइक्स को <stephane.dufoix@wanadoo.fr> पर प्रेषित करें।

> इमानुअल वालरस्टीन :
समाजशास्त्र को नई सुसंगति प्रदान करना

फ्रैंक वेल्ज, इंसब्रुक विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया और सदस्य, आईएसए रिसर्च कमेटी ऑन हिस्ट्री ऑफ सोशियोलॉजी (आरसी 08) और सोशियोलॉजिकल थियरी (आरसी 16) एवं **आनन्द कुमार,** वरिष्ठ फैलो, नेहरु मैमोरियल म्यूजियम एंड लाईब्रेरी, नई दिल्ली, भारत द्वारा

"उन्होंने न सिर्फ शोधकर्ता के रूप में बल्कि समाजशास्त्र के एक शिक्षक के रूप में भी सलंग्न समाजशास्त्री होने की आवश्यकता को प्राथमिकता दी"

द कैनेडियन रिव्यू ऑफ सोशियोलॉजी में 2018 की आईएसए वर्ल्ड कांग्रेस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए फ्रैड्रिक वैंडेनबर्ग और स्टेफन फुच्स ने जोर देकर कहा 'समाजशास्त्र चला गया है।' उनके विचार से एक अलग विखंडित विषय ने अपना आधार और पहचान खो दी है। समाजशास्त्र के विखंडन और विशेषीकरण के खिलाफ इमैनुएल वालरस्टीन एक मजबूत वैश्विक आवाज थे। 31 अगस्त 2019 को 88 वर्ष की उम्र में उनका देहांत होना समाज विज्ञानों के क्षेत्र में एक बड़ी क्षति है। जिम्मेदारी का भार अब समाजशास्त्रियों के वैश्विक समुदाय पर आ गया है, और सौभाग्य से उनके द्वारा छोड़ी गई अपार विद्वतापूर्ण विरासत है। 1970 के दशक के उतरार्ध में लम्बी श्रृंखला में विचार–विमर्श की गईं बैठकों के दौरान (जब आनंद कुमार ने बिंघमटन में उनके मार्गदर्शन में अध्ययन किया) इमैनुएल वालरस्टीन के मूल विचारों से प्रेरित होकर (1999 में हमने संयुक्त रूप से पेरिस में उनका वीडियो–साक्षात्कार किया था[1]) हम उनके कुछ विचारों को प्रस्तुत करने की कोशिश करेंगे जो हमें लगता है कि समकालीन समाजशास्त्र के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक हैं।

सर्वप्रथम विश्लेषण की इकाई के बारे में चर्चा करें : जहाँ अंतराष्ट्रीय समाजशास्त्र (जैसे यु.बेक , डी.चेर्नीलो) सदी के मोड़ पर समाजशास्त्र के "पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद" पर बहस कर रहा था, वालरस्टीन ने 1960 के दशक में ही समाज वैज्ञानिक विश्लेषण की इकाई को बदल दिया था जब उन्होंने यह निर्णय लिया कि वे उत्तर औपनिवेशिक पश्चिम अफ्रिका को राष्ट्रीय समाजों के रूप में नहीं बल्कि केवल ऐतिहासिक विश्व–प्रणाली के रूप में अध्ययन करेंगे, यह वह शुरुआती बिंदु था जहॉ उन्होने चार खंडों वाली पुस्तक 'दि मॉर्डन वर्ल्ड सिस्टम' को विकसित किया। दूसरा, सामाजिक की समझ बनाने के हमारे तरीके (ज्ञानमीमांसीय) को लक्षित करते हुए वालरस्टीन की सम्बधात्मक सामाजिक विज्ञान की प्रारंभिक पहल समाज विज्ञानों के लिए एक महत्वपूर्ण और आश्चर्यजनक चुनौती बन गई हैं। इल्या प्रोगोगिन की 'जटिलता के विज्ञान' की धारणा से आकर्षित 1990 के दशक में वालरस्टीन ने यह तर्क देना प्रारंभ किया कि प्राकर्तिक विज्ञान और मानविकी को समाज विज्ञान (समाजशास्त्र को पुनः केंद्र में ला कर) में नया क्षेत्र मिलेगा। ऐसा न्यूटन के पुनरावृति, स्थिरता और संतुलन की विश्व दृष्टि को जटिलता अध्ययनों के अस्थिरता उद्विकास और उत्तर चढ़ाव की एक ऐतिहासिक दुनिया की नई दृष्टि से प्रतिस्थापित कर किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण के उपरांत सामान्य संतुलन पर 'नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र' का निर्धारण गलत माना गया। आर्थिक (अर्थशास्त्र के लिए), राजनीतिक (राजनीतिक विज्ञान के लिए) और सामाजिक–सांस्कृतिक (समाजशास्त्र और मानविकी के लिए) को अलग करने की हमारी परम्परागत प्रथा भी गलत है। किसी एक घटना का विश्लेषण करने के लिए आवश्यक है कि उसके द्वारा दूसरों के साथ स्थापित संबंधों पर ध्यान दिया जाए। उदाहरण के रूप में जातीयता को केवल एक सांस्कृतिक विरासत के रूप में ही नहीं समझा जा सकता है, बल्कि उसे एक ही समय में समाज में शीर्ष–स्तर द्वारा निम्न–स्तर को (आर्थिक रूप से) और सतह से ऊपर के प्रतिरोध (राजनीतिक रूप से) दोनों को रणनीतिक रूप से नियोजित करने एक तरीके के रूप में समझना चाहिए।[2] तीसरा, समाजशास्त्र के ज्ञानमीमांसीय एवं पद्धतिशास्त्रीय पूर्वधारणाओं पर जोर देने के पीछे वालरस्टीन का छद्म एजेंडा हमारे विषय की सुसंगता और प्रभावशीलता को मजबूत बनाने के उनकी प्रतिबद्धता थी। आईएसए के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने 1990 के दशक में पहले से ही समाजशास्त्र के लगातार छोटे हिस्सों में विभाजनए जिसे केवल समाजशास्त्र के सामान्य रूप में साझा बौद्धिक स्त्रोतों पर पुनर्विचार करके ही दूर किया जा सकता थाए की आलोचना की थी।

अंत में उन्होंने न केवल एक शोधकर्ता के रूप में बल्कि एक समाजशास्त्र के शिक्षक होने के नाते भी सलंग्न प्रतिबद्ध प्रवृत समाजशास्त्री होने की जरूरत को महत्व दिया। उन्होंने न्याय और सद्भाव के लिए होने वाले आंदोलनों में सुसंगत भागीदारी निभाकर अपने आप को एक 'जैविक बौद्धिक' के रूप में भी प्रस्तुत किया। उनके इस पक्ष को 1960 के दशक के युद्ध– विरोधी प्रतिरोध, 1970–80 के दशक के रंगभेद– विरोधी प्रतिरोध और अफ्रीका से लेकर लैटिन अमेरिका तक विश्व सोशल फोरम की असेम्बलियों में भागीदारी से देखा जा सकता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि इमैनुएल वालरस्टीन को एक महान गुरु के रूप में याद किया जाएगा जिन्होंने न 1960 के दशक की 'पश्चिमी समाजशास्त्र' की सीमाओं का सामना किया बल्कि अगली आधी सदी में मानव समाज की गतिशीलता की बेहतर समझ बनाने के लिए नई अवधारणाओं, सिद्धांतों और तरीकों के एक पुंज (वर्ल्ड सिस्टम अप्रोच) को तैयार कर, विशेषकर 'लम्बी सोलहवीं शताब्दी' और अशांत बीसवीं सदी के बीच के लिए, समाजशास्त्र को पुनर्जीवित किया । ■

1. आनंद कुमार और फ्रैंक वेलज द्वारा इमैनुएल वालरस्टीन के साथ वीडिया साक्षात्कार, 1999, https://www.youtube.com/playlist?list=PL49D592A64200367F.

2. Kumar, A. and Welz, F. (2001) "Culture in the World-System. An interview with Immanuel Wallerstein." Social Identities. *Journal for the Study of Race, Nation and Culture* 7(2): 221-231.

सभी पत्राचार आनंद कुमार को <anandkumar1@hotmail.com>
फ्रैंक वेल्ज को <frank.welz@uibk.ac.at>
पर प्रेषित करें।

> मध्य अमेरिका में एक गतिशील रणनीति के रूप में प्रवासी कारवां

वेरोनिका मोंटेस, ब्रायन मावर कॉलेज, यूएसए द्वारा

मेक्सिको शहर में जीसस मर्तिनेज स्टेडियम में ठहरे हुए प्रवासी। साभार : वेरोनिका मान्टेस

मई 2019 की एक बसंत दोपहर में मैंने लूसिया और हेक्टर को एक बार फिर से देखा। यह तीसरी बार था जब मैंने उन्हें छह महीने की अवधि में देखा था। इस समय वे अमेरिका–मेक्सिको सीमावर्ती शहर तिजुआना में थे। लूसिया और हैक्टर मध्य–अमेरिका के उन हजारों प्रवासियों में से थे जिन्होंने अक्टूबर और नवम्बर 2018 में तथाकथित मध्य–अमेरिकीन कारवां के हिस्से के रूप में मेक्सिको क्षेत्र पार किया। प्रवासियों ने इस कारवां का उपयोग मध्य–अमेरिकी सीमा तक पहुँचने के लिए गतिशीलता की रणनीति के रूप में किया। 5 नवम्बर 2018 को मेक्सिको शहर में मैं पहली बार लूसिका और हैक्टर से स्टेडियम में मेरी यात्रा के दौरान मिला था। यह स्टेडियम कारवां के हज़ारों प्रतिभागियों जो 3 नवम्बर से शहर में पहुँचने लगे के लिए आश्रय स्थल था।

2018 में कुल चार कारवां थे जिसमें से पहला कारवां सैन पेड्रो सुला और होंडुरास शहर से 12 अक्टूबर को रवाना हुआ और 21 नवम्बर को मेक्सिको के तिजुआना पहुंचा। मध्य अमेरिकी प्रवासियों का संयुक्त राज्य अमेरिका पहुँचने की चाह में मेक्सिको क्षेत्र पार करना कोई नई बात नहीं था। मेसोअमेरिकन माइग्रेंट मूवमेंट (एमएमएम) की समन्वयक मार्टा सांचेज़ के अनुसार करीब 800 से 1000 मध्य अमरिकी प्रवासी रोजाना मेक्सिको में प्रवेश करते हैं। उदाहरणस्वरुप यह अनुमानित है कि 2014 में लगभग 392,000 मध्य–अमेरिकी प्रवासियों ने मेक्सिको सीमा को पार किया, 2015 में यह संख्या थोड़ी कम हो कर 377,000 हो गई थी। अगर मेक्सिकन क्षेत्र पार करने वालों में मध्य–अमेरिकियों का होना कोई नई बात नहीं है तो प्रवासी कारवां ने दोनों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इतना ध्यान आकर्षित क्यों किया ?

मानवाधिकार संगठनों ने दर्शाया है कि मेक्सिको में प्रवासियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर अपहरण स्थायी, वृहद स्तर पर जबरनवसूली की प्रणाली बन गए हैं। अपनी पुस्तक वायलेंकियास वाई माइग्रेसीनेस सेंट्रोरामेरिकस एन मेक्सिका में मारिया डोलोरस पारिस पोम्बो दावा करती हैं कि प्रवासियों का मेक्सिको के दक्षिणी और उतरी सीमाओं के बीच प्रवासी मार्ग में आपराधिक और यौन बाजारों में शोषण किया जाता है। इस संदर्भ में हजारों मध्य–अमेरिकी प्रवासियों की श्यता गतिशीलता की वह रणनीति थी जो उन्हें मेक्सिको और संयुक्त राज्य अमेरिका की सीमा तक शीध्र पहुंचने के लिए एक सुरक्षित, आर्थिक रूप से सुलभ रास्ते से मेक्सिकन क्षेत्र की यात्रा करने अनुमति देती थी। इस प्रकार हालांकि मेक्सिन क्षेत्र को पार करने लिए गतिशीलता की एक रणनीति के रूप में कारवां का गठन नया नहीं था लेकिन इस बार कारकों के संयोजन ने इसे अलग बना दिया। सबसे पहले लोगों की संख्या विशाल और विषम थी जिसमें युवा परिवार, बच्चों के साथ एकल माताएं, युवा एकल पुरुष, नाबालिग, एलजीटीबीक्यू लोग और बुजुर्ग और विकलांग लोगों की एक महत्वपूर्ण संख्या. जो तेजी से कारवां में शामिल हो गए। दूसरा, यहां उनके संगठन का वेग बहुत तीव्र था। तीसरा, हजारों मध्य–अमेरिकियों का मुख्य सड़कों से यात्रा करने का दृढ़ संकल्प था। ऐसा वे क्षेत्र से मुक्त और सुरक्षित पारगमन की मांग करने के लिए कर रहे थे।

ये लोग क्यों अपना घर छोड़ रहे हैं? अपने घरों को छोड़कर, अपने परिवारों के जीवन को जोखिम में डालकर ये अमरीका–मेक्सिको की सीमा की तरफ क्यों निकल पड़े? इसका जवाब जटिल है और इस पर मध्य अमेरिकी क्षेत्र के प्रत्येक देश के पास व्यक्त करने की अपनी ऐतिहासिक कथा है। इंटरनेशनल रेस्क्यू कमेटी की 'डिसऑर्डर बाई डिजाइनः ए मैन्यूफेक्चर्ड यू.एस. इमर्जेंसी एंड रियल क्राइसिस इन सेंट्रल अमेरिका' नामक प्रकाशित रिपोर्ट प्रवास को प्रोत्साहित करने वाली पृष्ठभूमि पर कुछ प्रकाश डालती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि सल्वाडोर से अमेरिका में आश्रय चाहने वाले पीढ़ीगत स्तर पर गंभीर मनोदशात्मक तनावों से पीड़ित थे क्योंकि परिवारों ने कई दशकों तक

>>

उनके अधिकार और विकल्पों के बारे में प्रवासियों को सूचित करने के प्रयास करते हुए। साभार : वेरोनिका मान्टेस

गृहयुद्ध, राज्य हिंसा, गरीबी, प्राकृतिक आपदा और व्यापक और अंधाधुंध सामूहिक हिंसा का सामना किया था । इसी तरह का सामना इतिहास ग्वाटेमाला द्वारा 1960 से 1996 के मध्य. 36 साल के गृहयुद्ध के इतिहास में देखा जा सकता है जिसमें लगभग 2 लाख लोगों की मृत्यु हुई जिसमे अधिकांश स्वदेशी थे। होंडुरास के लिए पलटा देने वाले कारकों में प्रमुख भ्रष्टाचार का उच्च स्तर, 2009 का तख्तापलट, गरीबी और चरम गिरोह हिंसा थी जिसने हजारों होंडुरांस को अपने देश से भागने को प्रेरित किया। इन परिस्थितियों में लाखों मध्य अमेरिकियों के लिए जीवन असहनीय रूप से खतरनाक और शक्तिहीन हो गया था।

11 नवम्बर को इस कारवां के करीब 300 लोगों का पहला समूह तिजुआना पहुंचने लगा। तिजुआना स्थित एक शोध संस्थान कोलेजियो डी ला फ्रोंटेरा नॉट (सीओलईएफ) की एक रिपोर्ट के अनुसार अनुमानित तौर पर लगभग 6 हजार लोग नगरपालिका द्वारा उपलब्ध कराये गए एक खेल परिसर की सुविधा में रहे। 13 दिसम्बर को जारी एक रिपोर्ट में सीओएलईएफ ने उन मध्य अमेरिकियों के लिए जो अभी भी तिजुआना में हैंए पांच संभावित परिदृश्यों पर चर्चा की–(1) अमेरिका में शरण मांगते हैं (2) मेक्सिको में शरणार्थी बनने के लिए आवेदन करें (3) तिजुआना में रहे और नौकरी ढूंढे (4) अपने मूल देशों में स्वैच्छिक या जबरन प्रत्यावर्तन का अनुभव प्राप्त करें (5) छिप कर अमेरिका–मेक्सिको सीमा को पार करें । इस सूची में मैं एक छठा परिदृश्य जोड़ती हूं : एक अन्य विकल्प यूएस–मेक्सिको सीमावर्ती शहर में प्रवास करना। यही आखिरी संभावना लूसिया और हेक्टर की पसंद थी। दूसरी बार मैंने लूसिया और हेक्टर को नवम्बर 2018 के अंत में तिजुआना में देखा। यह उनके तिजुआना छोड़ कर रेनोसा, तमुलिपास जाने के कई सप्ताह पूर्व था उनके अनुसार वे मेक्सिको की सबसे खतरनाक सीमावर्ती शहरों में से एक में 1112 मील की यात्रा कर इस आशा से जा रहे थे कि उन्हें उस शहर में निर्माण कार्य प्राप्त होगा।

2018 के कारवां से कई सबक ले सकते हैं। सबसे पहले तो गतिशीलता की रणनीति के रूप में श्यता के मध्य द्वैतता का प्रतिनिधित्व किया। इसने मेक्सिकन क्षेत्र पार करने वाले हजारों मध्य अमेरिकियों को दृश्यता प्रदान की और एक बार ये प्रवासी अमेरिका–मेक्सिको सीमा पर फंसे तो इन्हें अश्दृय कर दिया। दूसरा, जहाँ कारवां में शामिल लोगों का सामूहिक जमावड़ा ही वह निर्णायक कारक था जो उन्हें सीमा तक पहुंचने में मदद करता था, आज वह सामूहिकता लुप्त हो गयी है क्योंकि लोग अपने स्वयं के अस्तित्व की तलाश में मेक्सिकों के तिजुआना और अन्य सीमावर्ती कस्बों में चले गए। यह कारवां के सदस्यों को बेहद कमजोर स्थिति में रखता है। तीसरा, इस कारवां ने दुनिया को मध्य अमेरिकी क्षेत्र में मौजूद प्रवासी संकट से अवगत कराया। यह अनुमान लगाया जाता है कि यूएस–मेक्सिको सीमा पर पहुंचने वाले मध्य अमेरिकी प्रवासियों की संख्या 2019 के अंत तक एक मिलियन तक पहुंच सकती है। चौथा, मेक्सिकन सरकार इस मध्य अमेरिकी प्रवासी संकट के परिणामस्वरूप एक जटिल समस्या का सामना कर रही है। मेक्सिको की दक्षिणी सीमा के पास हज़ारों प्रवासियों–मध्य अमेरिकी, अफ्रीकी, क्यूबाई, हाईटियन और अन्य अंतर्महाद्वीपीय प्रवासी जो फंसे हैं और उत्तरी सीमा पर जाने के लिए रास्ता साफ होने का इंतजार कर रहे हैं – की देखभाल करने के लिए आधारभूत ढांचा नहीं है। इसी दौरान मेक्सिको की उतरी सीमा पर आश्रय स्थलों में हजारों की तादात में प्रवासियों की भीड़ हो गई जो वहां पहुंचने में सफल रहे और जो अमेरिका जाने के लिए या तो शरण मांग रहे हैं या सबसे खराब स्थिति में संयुक्त राज्य अमेरिका की सीमा को पार करना चाहते हैं। अंत में, आज हजारों मध्य–अमेरिकी प्रवासियों को मेक्सिको और अमेरिका में में अनिश्चितता और आघात का सामना करना पड़ रहा है। कई मामलों में वे व्यक्तियों और नागरिक समाज के संगठनों, जो बेहतर जीवन की तलाश में निकले लूसिया और हेक्टर जैसे लोगों का समर्थन और मदद करते हैं की सहानुभूति, एकजुटता और करुणा की बदौलत जीवित रहते हैं। ■

सभी पत्राचार वेरोनिका मोंटेस को <vmontes@brynmawr.edu> पर प्रेषित करें।

> बफ़ेलो, न्यूयॉर्क :

शरणार्थी पुनर्वास में अच्छा प्रयास

आयसेगुल बाल्टा ऑजगेन, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ एथेनिटी, रेस एंड इमिग्रेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया, संयुक्त राज्य अमेरिका और रिसर्च कमेटी ऑफ सोशियालॉजी ऑफ माइग्रेशन (आरसी31) के सदस्य द्वारा

ऐरी देश : मुख्य 14 मूल देश, 2008 से 2016 तक अप्रवासियों एवं शरणार्थीयों के लिए

मूल देश	कुल संख्या (2008–2016)
अफगानिस्तान	140
बर्मा	4,057
भूटान	1,888
बुरून्डी	79
कांगो	56
डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो	958
क्यूबा	96
इथियोपिया	77
एरिट्रिया	321
इराक	1,322
इरान	54
सोमालिया	1,851
सूडान	176
सिरिया	280

बफ़ेला ब्रीफ, फरवरी 2018, सावृजनिक हित के लिए पार्टनरशिप (पीपीजी)

सन् 1980 के शरणार्थी अधिनियम के बाद से अमेरिका में एक बेहतर स्थापित शरणार्थी पुनर्वास प्रणाली है। होमलैंड सुरक्षा विभाग और राज्य विभाग देश में शरणार्थियों के प्रवेश का मिलकर समन्वय करते हैं और उनके वहां पहुंचने के बाद स्वास्थ्य और मानव सेवा विभाग में शरणार्थी पुनर्वास कार्यालय नौ स्वैच्छिक एजेंसियों के सहयोग से सेवाएं के प्रावधानों का समन्वय करती है। पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा पुनर्वास की संख्या में कटौती तक अमेरिका लगातार दुनिया में सबसे बड़ा पुनर्वास केंद्र रहा है जो हर साल करीब 90 हजार शरणार्थियों को शरण देता रहा है। शरणार्थियों को स्थायी तौर पर देश में रखा जाता है और उनकी नागरिकता की प्रक्रिया तेजी से शुरु की जाती है। अप्रवासियों की अन्य श्रेणियों से भिन्न वे तुरंत अन्य सार्वजनिक लाभों के मध्य नकद और चिकित्सा सहायता के पात्र हैं।

> छोटे और मध्यम आकार के शहर क्यों ?

ऊपर उल्लेखित नौ स्वैच्छिक एजेंसियां राज्य विभाग के साथ एक सहकारी समझौते का हिस्सा है और उनके प्रतिनिधि अक्सर आने वाले शरणार्थियों के प्रत्येक मामलें की समीक्षा करने के लिए मिलते हैं। वे यह तय करने के लिए की प्रत्येक आने वाले शरणार्थी को कहां पुनर्वासित किया जायेगा, अमेरिका में परिवार का पूर्व अस्तित्व, दुभाषियों की उपलब्धता, आवास, अंग्रेजी कक्षाएं और रोजगार सेवाओं जैसे कारकों पर विचार करते हैं। जहाँ न्यूयॉर्क और लॉस एंजिल्स जैसे बड़े महानगर प्रवासियों के विशिष्ट अप्रवासी गंतव्य है, हाल ही में छोटे और मध्यम आकार के शहरों को शरणार्थी पुनर्वास के लिए अधिकाधिक पसंद किया जा रहा है। छोटे शहर अधिक किफायती हैं, वहां पर आवासों की उपलब्धता अधिक है और कई शहरों को आर्थिक लक्ष्यों के लिए जनसंख्या वृद्धि की आवश्यकता भी है।

न्यूयॉर्क का बफ़ेलो मध्यम आकार के शहरों में से एक है जहां पर 2006 से शरणार्थियों को तेजी से बसाया गया है। हालांकि प्रारंभ में पुनर्वास की प्रक्रिया यहां पर चुनौतीपूर्ण थी लेकिन बफेलो अब एक अच्छा उदाहरण बन गया है। इसके अलावा शरणार्थी शहर के मौजूदा पुनरोद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बफ़ेलो रस्ट बेल्ट का एक प्रारूपिक शहर है। अमेरिका के मिडवेस्ट और नॉर्थईस्ट में स्थित यह क्षेत्र भारी उद्योग के लिए जाना जाता है, विशेष तौर पर उन्नीसवीं शताब्दी और बीसवीं शताब्दी की पहली छमाही में यहां के इस्पात और लोहे के कारखाने प्रसिद्ध रहे। विऔधोगिकरण, आर्थिक वैश्वीकरण और शहरों के स्वचालन के कारण बफ़ेलो, सिनसिनाटी, क्लीवलैंड, डेटन, डेट्राइट, पिट्सबर्ग और सेंट लुइस जैसे शहरों ने भारी मात्रा में आबादी खोई और वहां पर आर्थिक रूप से गिरावट आई। 1950 के दशक के बाद से अपनी आधी आबादी खो जाने के बाद जुलाई 2018 तक बफ़ेलो की जनसंख्या 256,000 के करीब है और यहाँ 30.9 प्रतिशत उच्च गरीबी दर है। बफ़ेलो–नियाग्रा फॉल्स क्षेत्र देश का नस्लीय रूप से सबसे अधिक अलग आठ इलाकों में शामिल है और शहरों और उपनगरों के बीच यहां पर बड़ी आर्थिक असमानताएं हैं। अन्य कई रस्ट बेल्ट के शहरों की तरह ही बफ़ेलो भी अब अप्रवासियों और शरणार्थियों के फलस्वरूप बड़े पैमाने पर पुन:आबादीकरण से गुजर रहा है। विदेशों में जन्मी आबादी में वृद्धि के बिना 2000 और 2014 के मध्य बफ़ेलो की आबादी 3.3 प्रतिशत की बजाय 4.7 प्रतिशत कमी होती।

2002 के बाद से ही 15 हजार से अधिक शरणार्थियों को बफ़ेलो में बसाया गया है। हालांकि द्वितीयक प्रवास: वे शरणार्थी जो दूसरे शहरों में बसाये जाते हैं लेकिन वे बाद में सस्ते आवास और सुदृढ़ सामुदायिक

>>

समर्थन नेटवर्क के कारण बफ़ेलो में आ जाते हैं, के कारण शरणार्थियों की वास्तविक संख्या अधिक है। इन शरणार्थियों के शीर्ष मूल पांच देशों में बर्मा, सोमालिया, भूटान, इराक और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कागों शामिल हैं। अप्रवासी और शरणार्थी आबादी शहर के पश्चिम भाग में केंद्रित है जहां 2017 में विदेश जनित आबादी की दर बढ़कर 16 प्रतिशत हो गई।

> कर्त्ता (एक्टर्स) कौन हैं ?

बफ़ेलो में स्थित चार पुनर्वास एजेंसियां हैं– कैथोलिक चैरिटीज, ज्यूइश फैमिली सर्विसेज, जर्नीज एंड रिफ्यूजी सर्विसेज और इंटरनेशनल इंस्टीटयूट ऑफ बुफलो यूएस में आगमन के प्राम्भिक तीन महीनों के दौरान शरणार्थियों को स्वीकार करने से लेकर उनके प्लेसमेंट सेवा के लिए जिम्मेदार हैं। केस वर्कस एक अपार्टमेंट ढूंढते हैं जिसे शरणार्थियों के आगमन से पहले तैयार करना होता है, हवाईअड्डे पर वे उनकी अगवानी करते हैं, उनके नाम से जनोपयोगी सेवाएं प्रारंभ करते हैं, सार्वजनिक सहायता और सामाजिक सुरक्षा कार्ड के लिए उन्हें नामांकित करते हैं, उनके बच्चों को स्कूल में भर्ती करते हैं, उनका बैंक खाता खुलवाते हैं और उन्हें सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना सिखाते हैं। वे अंग्रेजी भाषा की कक्षाएं, रोजगार और दुभाषिये सेवाएं एवं क़ानूनी परामर्श प्रदान करते है। यद्यपि पुनर्वास एजेंसियों को 90 दिनों से अधिक सेवाएं प्रदान करने के लिए सरकार से पर्याप्त धन उपलब्ध नहीं कराया जाता है और यह उम्मीद की जाती है कि शरणार्थी इस अवधि के अंत तक आत्मनिर्भर हो जाने चाहिए।

केवल ये चार एजेंसियां ही नहीं हैं जो बफ़ेलो में शरणार्थियों के साथ काम करती हैं। कई अन्य गैर–लाभकारी संगठन भी है जिनमें शरणार्थियों के अपने जातीय/धार्मिक समुदायिक संगठन, महापौर कार्यालय, स्कूल एवं विश्वविद्यालय और स्थानीय मीडिया जैसे संगठन हैं जो शरणार्थियों के स्वागत का माहौल तैयार करते हैं। उनकी विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता है, वे एक–दूसरे से सहयोग करते हैं और लोगों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने वाली जगहों के बारे में बताते हैं। सभी हितधारकों का यह कुशल सहयोग बफ़ेलो को पुनर्वास का एक बेहतर मामला बनाने में मदद करता है।

शरणार्थी सिर्फ वे लोग नहीं हैं जिनकी जरूरतों की पूर्ति होनी है; अपने जीवन में समंजन करने के बाद वे अपने समुदायों के लिए महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। वे खाली पड़ोस एवं स्कूलों को पुनः आबाद करते हैं, घर खरीदते हैं, उन्हें ठीक करते हैं, नए व्यवसाय स्थापित करते हैं, नई श्रमशक्ति पैदा करते हैं और करों का भुगतान करते हैं। कई पुनःशक्त रस्ट बेल्ट शहरों की तरह यहां के नेताओं और मीडिया के बीच यह व्यापक धारणा है कि शरणार्थी बफ़ेलो के पुनरुत्थान के लिए अच्छे हैं। बेशक केवल शरणार्थी शहर को नहीं बचा सकते हैं और जलमार्ग विकास परियोजना, विश्वविद्यालय–अस्पताल संघ और अन्य शहरी आवासीय पुनर्विकास जैसी विकास परियोजनाओं का पुनर्विस्तार हुआ है। फिर भी शरणार्थियों को विशेष रूप से बफ़ेलो के पश्चिम भाग में आर्थिक स्थिरीकरण और पुनर्विकास में उनकी भूमिका के लिए धन्यवाद दिया जाता है। इनके कारण समाज में विविधता और बहुसंस्कृतिवाद की भावना बढ़ी है और इन्होने अपने छोटे व्यवसायों और उद्यमशीलता के साथ आर्थिक पुनरुत्थान में योगदान दिया हैं। इसलिए रस्ट बेल्ट शहर अधिक शरणार्थियों को आकर्षित करने के लिए एक–दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं।

> चुनौतियां क्या हैं ?

शरणार्थियों की जरूरतों और शहरी पुनरुद्धार को पूरा करने में सहयोग देने के बावजूद भी बफ़ेलो में जिसे 'शरणार्थी पुनर्जागरण' कहा जाता है, एकीकरण की प्रक्रिया में चुनौतियां हैं। राष्ट्रीय और स्थानीय दोनों स्तरों पर संरचनात्मक समस्याएं हैं। सबसे पहले, पुनर्वास एजेंसियों के लिए फंडिंग प्रति मामले प्रारम्भिक 90 दिवसों तक ही सीमित हैं और यह अपेक्षा कि शरणार्थी इस अवधि के अंत तक आत्मनिर्भर हो जायेंगे अव्यवहारिक है। अमेरिका में आने वाले शरणार्थियों की उच्चतम संख्या को पिछले वर्ष 30 हजार और इस वर्ष 18 हजार कर घटाया है जिसके कारण बजट में काफी कटौती हुई है। पिछले साल पुनर्वास एजेंसियों ने धन–संग्रहण का अभियान चलाया और न्यूयॉर्क राज्य में पुनर्वास एजेंसियों ने 2 मिलियन डालर धन एकत्रित किया लेकिन इस प्रोग्राम का भविष्य अनिश्चित है। शरणार्थियों की घटती संख्या और संघीय वित पोषण में कटौती के कारण शहर के नेताओं ने चेतावनी दी है कि बफ़ेलो की आर्थिक वृद्धि संकट में है। दूसरा, बफ़ेलो में मैंने जिन सीरियाई शरणार्थियों का साक्षात्कार लिया उनमें से कई ने राष्ट्रपति ट्रम्प के यात्रा प्रतिबंधों के बाद निर्वासन की आशंका और चिंता व्यक्त की। यद्यपि उन्होंने रिपोर्ट किया कि उन्होंने बफ़ेलो के स्थानीय लोगों से कोई नकारात्मक व्यवहार अनुभव नहीं किया, लेकिन राष्ट्रीय समाचारों में इस्लामोफोबिया और शरणार्थी–विरोधी बयानबाजी से बेलोंगिंग की भावना नहीं होती है। जब वे यहां पर स्वागत का भाव महसूस नहीं करेंगे तो शरणार्थियों के एकीकृत होने की संभावना कम हो जाती है।

स्थानीय स्तर पर चुनौतियां अधिक विविध हैं। बफ़ेलो एक ज्यादा पृथक्त शहर है और पुनर्वास एजेंसियों द्वारा शरणार्थियों को आम तौर पर पश्चिम भाग में रखा जाता है। हालांकि आमतौर पर वे जो काम करते हैं (जैसे कि डिशवाशर, चौकीदारी, रसोइया, पैकर, एसेम्बलर और सामग्री मूवर) वे पश्चिम भाग में नहीं होते। जब तक वे कार खरीदने में सक्षम नहीं हो जाते हैं, वे सार्वजनिक परिवहन पर निर्भर होते हैं जो कि व्यापक और विश्वसनीय नहीं है। सार्वजनिक सहायता के तहत प्राप्त धन आमतौर पर उनके स्वयं के खर्च के लिए पर्याप्त नहीं होता है, इसलिए अनियमित समय पर वे कई अंशकालीन नौकरियों पर जाते हैं जिसकी वजह से उनकी अंग्रेजी भाषा सीखने की कक्षाएं प्रभावित होती हैं। अधिकांश शरणार्थी परिवारों के लिए बाल देखभाल वहनीय नहीं है और जब तक वे परिवार के अन्य सदस्यों पर विश्वास नहीं करते तब तक, जिन महिलाओं के छोटे बच्चे होते हैं वे न तो काम कर सकती हैं और न ही अंग्रेजी की कक्षाओं में जा पाती हैं। यह महिलाओं को घर के अन्दर ही विलगन की स्थिति में ले आता है और उनके सामाजिक–आर्थिक एकीकरण को बाधित करता है। अंत में कई समुदाय के नेता नोट करते हैं कि बफ़ेलो का मूल निवासी समाज शरणार्थियों के बारे में अधिक नहीं जानता है। चूंकि एकीकरण दो तरफा मार्ग है, इसलिए यह पर्याप्त नहीं है कि शरणार्थी अमेरिकन तौर–तरीके सीखें और अनुकूलन करने की कोशिश करें।

विश्व के कमजोर शरणार्थियों के एक छोटे समूह को पुनर्वास न केवल एक टिकाऊ समाधान प्रदान करता है बल्कि मेजबान शहरों को और समृद्ध बनाने में मदद करता है। न्यूयोर्क राज्य में शरणार्थियों की देश की तीसरी बड़ी पुनर्वासित जनसंख्या है और बफ़ेलो राज्य की सबसे बड़ी शरणार्थी संख्या को पुनर्वासित करता है। पिछले दस–पन्द्रह सालों में बफ़ेलो ने जो अनुभव किया है वह दूसरे शहरों के लिए बेहतर व्यवहार का एक उदाहरण है। ■

सभी पत्राचार अयसेगुल बालटा ऑजगेन को <aysegulb@sas.upenn.edu> पर प्रेषित करें।